कला शिक्षा

तीसरी कक्षा

नि:शुल्क वितरण के लिए

Tele MANAS

National Tele Mental Health Programme

14416

टेली मानस हेल्पलाइन

Tele MANAS (Tele Mental Health Assistance and Networking Across States)

(१४४१६/१८००-८९-१४४१६)

राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत केंद्र द्वारा प्रायोजित योजना 'टेली मानस' महाराष्ट्र राज्य में अक्तूबर २०२२ से कार्यान्वित की गई है। 'टेली मानस' कार्यक्रम के अंतर्गत हेल्पलाइन नंबर १४४१६ द्वारा नि:शुल्क एकात्मिक और सर्वसमावेशक मानसिक स्वास्थ्य सेवा २४x७ प्रदान की जाती है। इसमें विविध मानसिक समस्याओं के लिए विशेषज्ञों द्वारा उपचार और समुपदेशन किया जाता है। 'टेली मानस' हेल्पलाइन पर आपके द्वारा दी गई जानकारी को पूर्णत: गोपनीय रखा जाता है। इस कारण विद्यार्थी अपनी समस्याएँ हेल्प लाइन नंबर पर कॉल करके नि:संकोच बताएँ तथा मन में उत्पन्न किसी भी शंका के संबंध में पूछकर उसके निराकरण और अपनी समस्या से संबंधित मार्गदर्शन प्राप्त करें और अन्य लोगों को भी इस सुविधा का लाभ उठाने हेतु प्रोत्साहित करें।

मनोदर्पण

शिक्षा मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय शैक्षणिक संशोधन व प्रशिक्षण परिषद के अंतर्गत जुलाई २०२० से **मनोदर्पण (८४४८४४०६३२)** हेल्पलाइन की नि:शुल्क दूरध्वनि सेवा आरंभ की गई है। यह सुविधा विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं शिक्षकों के लिए मनोवैज्ञानिक मार्गदर्शन तथा सहायता प्रदान करने हेतु प्रतिदिन प्रात: ८ बजे से संध्या ८ बजे की कालावधि में उपलब्ध कराई गई है। विद्यार्थी, अभिभावक एवं शिक्षक हेल्पलाइन पर संपर्क करके मार्गदर्शन एवं समुपदेशन प्राप्त कर सकते हैं।

शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास-२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी-४ दिनांक २५.०४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया।
दि. १९. ०५.२०२६ को हुई इस समिति की बैठक में यह पाठ्यपुस्तक शैक्षणिक वर्ष २०२६-२०२७ से निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई है।

कला शिक्षा

तीसरी कक्षा

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे ४

चौखट में दिए गए Q.R.Code को स्मार्ट फोन द्‌वारा स्कैन करने पर तुम्हें डिजिटल पाठ्यपुस्तक एवं पाठ्यपुस्तक में दिए घटकों से संबंधित दृक, श्रव्य एवं दृक श्रव्य रूप में अध्ययन-अध्यापन सामग्री भी उपलब्ध होगी।

प्रथमावृत्ति : २०२६

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे ४११००४

इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

'कला शिक्षा' विषय समिति

श्री शशिकांत देशमुख, (अध्यक्ष)
श्री शिवाजी हांडे (सदस्य)
श्री गोरक्षनाथ आबुज (सदस्य)
श्री श्रीकांत ढालकर (सदस्य)
श्रीमती पुनम भोपळे (सदस्य)
श्रीमती छाया माळवाळ (सदस्य)
श्रीमती स्नेहा गाडे (सदस्य)
डॉ. सुमेधा ठाकुर (निमंत्रित)
श्री नंदकिशोर नगरकर (निमंत्रित)
श्रीमती मृगया मोरे (निमंत्रित)
श्री अमोल जाधव (निमंत्रित)
श्री नितिन महामुनी (निमंत्रित)
श्रीमती वृषाली लेले (निमंत्रित)
श्रीमती निताली हरगुडे (निमंत्रित)
श्री ओंकार वैरागकर (निमंत्रित)
श्री अमोल बोधे (निमंत्रित)
श्रीमती जुई देशिंगकर (निमंत्रित)
श्रीमती रश्मी जोशी (निमंत्रित)
डॉ. गीतांजली बोरूडे (अभ्यासक्रम समन्वयक)
डॉ. अजयकुमार लोळगे (सदस्य सचिव)

समीक्षक

श्री प्रमोद कांबळे (गुणवत्ता परीक्षक)
ॲड. संदेश साखरे (विधि तज्ञ)
प्रा. विलास पंडीत (CWSN तज्ञ)

संयोजक

डॉ. अजयकुमार लोळगे
विशेषाधिकारी कार्यानुभव (वि. का.)
प्र. विशेषाधिकारी कला (वि. का.)

हिंदी भाषांतर संयोजन

डॉ. अलका पोतदार
विशेषाधिकारी हिंदी (वि. का.)

हिंदी भाषांतर विषय तज्ञ

डॉ. प्रमोद शुक्ल सौ. वृंदा कुलकर्णी सौ. रंजना पिंगळे

मुखपृष्ठ एवं अंतर्गत चित्राकृति :
श्री लक्ष्मीकांत काळे, श्रीमती प्राजक्ता केरकर, श्री मनोहर बावीस्कर, श्रीमती प्राची पोतदार, श्री सोहम ओतारी, श्री अजय पराडकर

अक्षरांकन : मुद्रा विभाग, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

कागज : ७० जी.एस.एम.क्रीमवोव

मुद्रणादेश :

मुद्रक :

निर्मिति

श्रीमती मिताली शितप
प्र. मुख्य निर्मिति अधिकारी

श्री संदीप आजगांवकर
निर्मिति अधिकारी

प्रकाशक

श्री हेमंत बाबर
प्र. नियंत्रक
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ, प्रभादेवी, मुंबई - २५

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

भारत का संविधान

भाग ४ क

मूल कर्तव्य

अनुच्छेद ५१ क

मूल कर्तव्य– भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;
(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;
(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे;
(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;
(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं;
(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;
(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;
(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;
(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;
(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;
(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयुवाले अपने, यथास्थिति बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

राष्ट्रगान

जनगणमन - अधिनायक जय हे
भारत - भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई-बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता-पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

राज्यगीत

जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा ।।धृ।।

भिती न आम्हा तुझी मुळी ही गडगडणाऱ्या नभा
अस्मानाच्या सुलतानीला जबाब देती जिभा
सह्याद्रीचा सिंह गर्जतो शिव शंभू राजा
दरी दरीतून नाद गुंजला महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा ।।१।।

काळ्या छातीवरी कोरली, अभिमानाची लेणी
पोलादी मनगटे खेळती, खेळ जीवघेणी
दारिद्र्याच्या उन्हात शिजला
निढळाच्या घामाने भिजला
देश गौरवासाठी झिजला
दिल्लीचे ही तख्त राखितो, महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा ।।२।।

प्रस्तावना

बालमित्रो,

तीसरी कक्षा में तुम सभी का स्वागत है। कला शिक्षा तीसरी कक्षा की पाठ्‌यपुस्तक आपके हाथों सौंपते हुए हमें आनंद हो रहा है।

तुम्हें खेलना, गाना, चित्र बनाना और रँगना, अभिनय करना, नृत्य करना और मिट्‌टी से वस्तुएँ बनाना पसंद है, है ना ? ये सभी गतिविधियाँ तुम इस पाठ्‌यपुस्तक के माध्यम से कर पाओगे। दृश्यकला, रंगमंच, संगीत और नृत्य इन सभी कलाओं के उपक्रमों के द्‌वारा तुम धमाल करनेवाले हो। इसी प्रकार तुम्हारे इन कला प्रकारों का प्रस्तुतीकरण भी कर पाओगे । कुछ तैयार की गई वस्तुएँ अन्य लोगों को भेंट स्वरूप भी दे पाओगे। इसके फलस्वरूप तुम्हें शाबासी मिलने पर आनंद भी प्राप्त होगा।

समृद्‌ध भारतीय परंपरा की पहचान तुम्हें कला संस्कृति के उपक्रमों के माध्यम से होगी। तुम्हारे जैसे कृतिशील, सर्जनशील, गुणी विद्‌यार्थियों को व्यक्त होने के लिए यह पुस्तक एक उत्तम साधन सिद्‌ध होगी। इससे तुम्हारी कृतिशीलता, सर्जन क्षमता और गुणवत्ता में वृद्‌धि होने में सहायता मिलेगी। तो चलो, फिर कृति युक्त अध्ययन का अनुभव लें।

इस पाठ्‌यपुस्तक के कुछ पृष्ठों पर क्यू आर कोड दिए हैं। पाठ्‌यपुस्तक के जो उपक्रम तुम्हें पसंद आएँ उनके संदर्भ में अपना अभिप्राय निश्चित बताएँ। इसी तरह उसमें और कुछ नया जोड़कर उसे कैसे समृद्‌ध बनाया जा सकता है यह भी बताएँ।

कला शिक्षा की पाठ्‌यपुस्तक के सभी उपक्रम आनंद एवं उत्साह से सफलतापूर्वक पूर्ण हों हृदय से यही शुभकामना है। क्यू. आर. कोड द्‌वारा प्राप्त जानकारी भी तुम्हें बहुत पसंद आएगी। तुम्हारे द्‌वारा तैयार की गई अथवा प्रस्तुत की गई कलाकृति की दृकश्राव्य सामग्री भेजें।

(अनुराधा ओक)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्‌यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.४

पुणे
दिनांक : १९ एप्रिल २०२६
भारतीय सौर: वैशाख शु.२, शके १९४८
अक्षय तृतीया

शिक्षकों के लिए

राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० के मार्गदर्शक तत्वों के अनुसार कला शिक्षा विषय विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु बहुत महत्वपूर्ण माना गया है। विद्यार्थियों की सर्जनशीलता को बढ़ावा देना, कल्पनाशीलता की क्षमता बढ़ाना, अभिव्यक्ति हेतु प्रोत्साहन देना और सीखने की प्रक्रिया को आनंददायक बनाना, यही कला शिक्षा पाठ्यक्रम का ध्येय है।

इस पाठ्यपुस्तक में दृश्यकला, रंगमंच, संगीत, नृत्य और हलचल इन चार कला प्रकारों का समावेश है। प्रत्येक कला प्रकार में विद्यार्थियों को निरीक्षण करने हेतु, प्रस्तुतीकरण हेतु, नवनिर्माण हेतु तथा स्वयं की कल्पना व्यक्त करने हेतु बढ़ावा मिलेगा।

कृतियुक्त उपक्रम, समूह कार्य, चर्चा भूमिकाभिनय, कलाध्यपन पद्धति का उपयोग करके अध्ययन का अनुभव देना चाहिए। प्रत्येक उपक्रम में आनंददायी शिक्षा प्रक्रिया पर बल दिया जाना चाहिए। दृश्यकला, रंगमंच, संगीत, नृत्य और हलचल के माध्यम से विद्यार्थी अपने विचार, भावना और कल्पना सहज व्यक्त कर पाएंगे। इस पाठ्यपुस्तक में अधिक जानकारी दी गई है अतः उस जानकारी पर प्रश्न या स्वाध्याय न लेते हुए प्रात्यक्षिकों पर अधिक बल देना अपेक्षित है।

यद्यपि इस पुस्तक को चार विभागों दृश्यकला, रंगमंच, संगीत, नृत्य और हलचल में विभक्त किया गया है तथापि वार्षिक नियोजन में इन चारों विभागों के घटक समान प्रमाण में लिए जाएँ ताकि विद्यार्थियों को वर्ष भर चारों कला प्रकारों का आस्वाद एवं अनुभव मिलता रहे। क्यू. आर. कोड का उचित उपयोग करें। प्रत्येक विभाग के नीचे कुछ सूचनाएँ दी गई हैं ।

दृश्यकला

- विविध प्रकार की रेखा एवं आकार उसी प्रकार सुंदर अक्षर लेखन के लिए विविध अक्षर अवयवों का अभ्यास करवा लें।
- प्राकृतिक घटक और मानव निर्मित घटक का अंतर समझाकर बताएँ और उनके उदाहरण दें।
- स्मरण चित्र बनाने के सोपान समझाकर बताएँ किंतु चित्र बनाते समय औरों की नकल न करें इसका ध्यान रखें। उसी प्रकार प्रसंग का वर्णन करके स्मरण चित्र बनाने के लिए प्रेरित करें।
- स्मरण चित्र और कल्पना चित्र के नमूने दिखाकर दोनों का अंतर स्पष्ट करवाएँ। उनकी कल्पना को बढ़ावा मिले ऐसी कहानी बताकर वातावरण निर्मित करें।
- विविध प्रकार के चित्रों के नमूने, छायाचित्र, शिल्पकला के नमूनों का संग्रह करें और संग्रह का शैक्षणिक साहित्य के रूप में उपयोग करें।
- सभी विद्यार्थी दृश्यकला के चित्र रूचि से ही बनाएँगे ऐसा नहीं है अतः उनमें उसके प्रति रूचि निर्माण करने के लिए प्रात्यक्षिक के माध्यम से प्रेरक अध्ययन अनुभव देना आवश्यक हो जाता है। इस दृष्टि से कोई विद्यार्थी नये सिरे से कुछ दृश्यकला प्रस्तुत करने का प्रयत्न कर रहा हो तो उसे प्रोत्साहित करें और उसका मार्गदर्शन करें।
- स्थानीय कला के प्रकार तथा कलाकार का परिचय करवा दें। संभव हो तो स्थानीय कलाकारों की कार्यशाला में क्षेत्र भेंट का आयोजन करें।

रंगमंच

- कक्षा में आनंददायी वातावरण की निर्मिति करके स्वाभाविक, प्राकृतिक कृति, हलचल एवं मूक अभिनय करवा लें। छोटे-छोटे समूह बनाकर प्रसंग प्रस्तुत करने के लिए कहें।
- प्राणी, पक्षी, प्रकृति के विविध घटकों की भूमिका देकर अभिनय करवा लें।
- स्वयं के संवाद एवं हलचल प्रस्तुत करने के अवसर दें। चित्र दिखाकर प्रश्न पूछें। जैसे 'तुम्हें इस चित्र से क्या दिखाई देता है?'
- प्रत्येक को भूमिका देकर प्रस्तुतीकरण में सहभागी करवा लें। दैनिक अनुभव से संबंधित प्रसंग चुनें।

- प्रस्तुतीकरण में हलचल करते समय सुरक्षितता पर ध्यान दें। उपलब्ध साधनों का उपयोग विविध प्रकार से करने की आदत डालें।
- एक समूह के प्रस्तुतीकरण का अन्य समूहों के विद्यार्थियों को निरीक्षण करने के अवसर दें। निरीक्षणात्मक अभिप्राय देने के लिए प्रेरित करें। नाट्यगृह कक्ष की संकल्पना अमल में लाएँ।

संगीत

- कक्षा में आनंददायी तथा उत्साही वातावरण निर्माण करके विद्यार्थियों का सक्रिय सहभाग लें।
- गाने सिखाते समय स्वयं गाने सुनकर प्रस्तुतीकरण करें। गाना सिखाते समय गाने के छोटे-छोटे भाग करके सिखाएँ।
- ताल, लय और सुर की पहचान सरल उदाहरण द्‌वारा करवा दें। ताल के लिए ताली का उपयोग करके गाने को अधिक रंजक बनाएँ। एकल और युगल गानों के लिए प्रोत्साहित करें।
- लोकसंगीत जैसे वासुदेव गीत, पोवाड़ा, भारूड, भजन, चक्की के गीत इनकी पहचान करा दें और प्रात्यक्षिक के साथ अभ्यास करवा लें।
- उपलब्ध वाद्‌यों का (ढोल, मंजीरा, झांझ, हार्मोनियम, तबला आदि) उपयोग करके ताल की समझ उनमें पैदा करवा दें। छोटे-छोटे समूह में विभाजित करके गीत प्रस्तुत करवा लें।
- प्रत्येक विद्‌यार्थी को गाने अथवा वादन में सहभागी होने का अवसर दें और उनके आत्मविश्वास को बढ़ावा दें।
- उपलब्ध साधनों या वीडियो के माध्यम से स्वर तथा अलंकारों का सुर ताल में अभ्यास करवा लें।
- **प्रथम पृष्ठ के क्यूं. आर.कोड का उपयोग करके गाने सुनवाएँ और सिखाएँ। समूह एवं वैयक्तिक प्रस्तुतीकरण के द्‌वारा मूल्यांकन करें।**

नृत्य एवं हलचल

- कक्षा में आनंदित और उत्साहित वातावरण की निर्मिति कर प्रत्येक विद्‌यार्थी को नृत्य में सहभागी होने के लिए प्रेरित करें।
- स्वाभाविक, प्राकृतिक हलचलों से नृत्य की पहचान करा दें।
- दैनिक हलचलों (जैसे- चलना, कूदना, घूमना) को नृत्य में रूपांतरित करने के लिए कहें।
- ताल, लय एवं गति की जानकारी खेल-खेल में करवा दें ।
- विविध भाव (आनंद, दुख, आश्चर्य) चेहरे के हावभाव व्यक्त करने में मार्गदर्शन करें।
- छोटे-छोटे समूहों में साधारण नृत्य प्रयोग प्रस्तुत करने हेतु प्रोत्साहन दें। प्रत्येक विद्‌यार्थी को नृत्य में स्वयं अपनी शैली में अभिव्यक्ति होने का अवसर दें
- नृत्य करते हुए शारीरिक सुरक्षा, योग्य अंतर रखना तथा योग्य पोषाक परिधान धारण करने संबंधी सूचना दें
- उपलब्ध साधन सामग्री (संगीत, जगह) का योग्य उपयोग करके विविध प्रकार के नृत्य अनुभव देने का प्रयत्न करें ।
- नृत्य के अंत में उन्होंने क्या अनुमव पाया, क्या सीखा इसपर संक्षेप में चर्चा लें। सर्जनशीलता और आत्मविश्वास को प्रोत्साहन देने वाला सकारात्मक अभिप्राय दें।

सभी प्रकार के विद्‌यार्थियों का सर्वसमावेशी विचार करके पाठ्‌यपुस्तक तैयार की गई है। प्रत्येक विद्‌यार्थी को अपनी क्षमता के अनुसार सहभागिता का अवसर मिले, उनकी कलाओं और गुणों को प्रोत्साहन मिले इसके लिए पाठ्‌यपुस्तक में उपक्रमों की रचना संवेदनशील दृष्टि से रखें।

प्रत्येक कला समूह के लिए दिए गए अभ्यासक्रम ध्येय और क्षमता उसी प्रकार अध्ययन निष्पत्ति का आधार लेकर अधिक प्रभावशाली अध्यापन करेंगे यही अपेक्षा है। इससे कला विषयों की ओर समग्र दृष्टि से देखनेवाला कौशल्यपूर्ण विद्‌यार्थी तैयार हो ओर वह आनंददायी जीवन जी सके यही उद्‌देश्य है। आओ इसके लिए हम सब मिलकर प्रयत्न करें।

कला शिक्षा विषय समिति

पाठ्‌यपुस्तक मंडळ, पुणे

३ री कक्षा कला शिक्षा	
दृश्यकला	
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG–1 : कला के माध्यम से मानवी भावनाओं का अन्वेषण, चित्र और अभिव्यक्ति करने का आत्मविश्वास विकसित करना।	
क्षमता : C–1.1 : दैनिक जीवन के भाव, भावना और कल्पना चित्रित करनेवाली प्रतिमा उत्साह से तैयार करता है।	
क्रमांक	**अध्ययन निष्पत्ति**
03AE01	परिसर के विविध घटकों का सरल पद्धति से रेखांकन करता है।
03AE02	परिसर के विविध घटकों का स्मरण से चित्रण करता है।
03AE03	चित्र में स्वयं अपनी कल्पना प्रस्तुत करता है।
03AE04	परिसर के विविध घटक स्व कल्पना से रेखांकित करता है।
क्षमता : C–1.2 : दृश्यकला में परस्पर समन्वय साधकर काम करते हुए विविध कल्पनाओं और प्रतिसादों की चर्चा करता है।	
03AE05	अक्षर अवयव को पहचानकर अक्षर लेखन करता है।
03AE06	विविध अक्षर नमूनों में से सुंदर हस्ताक्षर नमूना खोजकर उनका अक्षर लेखन में उपयोग करता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG–2 : कला के अभ्यास के लिए अपनी कल्पनाशक्ति और सर्जनशक्ति का मुक्त उपयोग करना।	
क्षमता : C–2.1 : दैनिक निरीक्षण, वैयक्तिक अनुभव और भावनाओं का चित्रण करते समय दृश्य घटकों के (रेखा, आकार, रंग, स्थान, बनावट) विविध संयोजनों का सर्जनशीलता के साथ उपयोग करता है।	
03AE07	रेखा की संकल्पना समझकर मुक्त रेखा रेखांकित करता है।
03AE08	विविध परिचित घटक आकारों का स्मरण कर चित्रण करता है।
03AE09	परिसर के प्राकृतिक घटकों का स्मरण कर चित्रण करता है।
03AE10	दैनिक उपयोग की वस्तुओं का सरल पद्धति से चित्रण करता है।
क्षमता : C–2.2 : कक्षा में साझा किए गए कलाकृति के दृश्य, घटक, संकल्पना और अभिव्यक्ति की तुलना और विरोधाभास स्पष्ट करता है।	
03AE011	आकारों का तुलनात्मक रेखांकन करके चित्रण करता है।
03AE12	आकार एवं रंगों के संयोजन से नक्काशी काम करता है।
03AE13	गहरी और उजली रंगछटाओं के अंतर को पहचानकर उन रंगों का उपयोग नक्काशी काम में करता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG –3 : कला की मूलभूत प्रक्रिया, साहित्य एवं तकनीक का आविष्कार करना।	
क्षमता : C–3.1 : दृश्यकला में काम करते हुए उपयोग में लाई जानेवाली सामग्री, साधन और तकनीक का चयन करता है।	
03AE14	विविध साधनों का उपयोग करके पोत निर्मिति करता है।
03AE15	उपलब्ध विविध सामग्री, साधन और माध्यमों का रेखांकन के लिए उपयोग करता है।
03AE16	मुद्रा लेने हेतु विविध वस्तुओं का उपयोग करता है।
03AE17	परिसर में उपलब्ध माध्यमों एवं साधनों का संकलन करके उससे त्रिमित रचना बनाता है।
क्षमता : C–3.2 : वैयक्तिक और सामूहिक दृश्य कलाकृति तैयार करते समय नियोजन, अमल और प्रस्तुतीकरण के सोपानों का पालन करता है।	
03AE18	कागज के छोटे–छोटे टुकड़े करके वैयक्तिक/सामूहिक कोलाज निर्मिति करता है।
03AE19	उपलब्ध सामग्री साधनों तथा माध्यमों के एकत्रीकरण से सरल त्रिविमीय आकार साकार करता है।
03AE20	संकलित की गई पर्यावरणपूरक सामग्री से सरल आकार वैयक्तिक/सामूहिक तैयार करत है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG –4 : आस–पास के प्राकृतिक सौंदर्य की खोज करना तथा विविध स्थानीय कला के प्रकारों एवं सांस्कृतिक रीति–रिवाजों की रूचि निर्माण करना।	
क्षमता : C–4.1 : प्रकृति के दृश्य घटक पहचानता है और उनके कलात्मक गुणों का वर्णन करता है।	
03AE21	विविध रेखा और आकार रेखांकन का अंतर समझकर रेखांकन करता है।
03AE22	विविध रेखा और आकार पहचानकर उनकी विशेषताओं का वर्णन करके रेखांकन करता है।
03AE23	प्रकृति के विविध घटकों का सरल पद्धति से रेखांकन करता है।
क्षमता : C – 4.2 : स्थानीय कलाकार और संस्कृति के बारे में उत्सुकता दर्शाता है।	
03AE24	स्थानीय संस्कृति के विषय में जानकारी बताता है।

03AE25	स्थानीय कलाकारों/कला के प्रकारों की जानकारी संकलित करके प्रकल्प तैयार करता है।
नाट्य	
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG–1 : कला के माध्यम से मानवी भावनाओं का अन्वेषण, प्रस्तुतीकरण और अभिव्यक्ति करने का आत्मविश्वास अनुभव से विकसित करना।	
क्षमता : C–1.1 : नाट्य कला के प्रसंग और अनुभव उसी प्रकार विविध घटकों के, पात्रों के उत्साह से प्रस्तुतीकरण करता है।	
03AE26	परिवार एवं परिसर की दैनिक मानवी कृतियों का निरीक्षण करके प्रस्तुतीकरण करता है।
03AE27	परिसर के प्राणियों तथा पक्षियों का निरीक्षण करके उनकी हलचलों का स्फूर्ति के साथ प्रस्तुतीकरण करता है।
क्षमता : C – 1.2 : नाट्य कलाकारों में परस्पर समन्वय साधकर काम करते हुए स्वयं के विचारों के प्रतिसादों की चर्चा करता है।	
03AE28	दैनिक उपयोग की वस्तुओं की आवाज पहचान कर प्रस्तुतीकरण करता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG–2 : कला के अभ्यास हेतु अपनी कल्पनाशक्ति और सर्जनशीलता का मुक्त उपयोग करना।	
03AE29	प्रस्तुतीकरण के लिए आवश्यक सामग्री की समूह में चर्चा करके सूची तैयार करता है।
03AE30	प्रस्तुतीकरण के लिए कक्षा के सहपाठियों की सहायता करता है।
03AE31	परिसर में ध्वनि निर्माण करने वाली वस्तुओं की खोज करके उनके प्रस्तुतीकरण का उपयोग करता है।
क्षमता : C – 2.2 : नाटक का एकाध विषय घटक और कक्षा में तैयार की गई उससे संबंधित कलात्मक अभिव्यक्ति की तुलना और विरोधाभास दिखाता है।	
03AE32	चुने गए प्रसंग का सामूहिक प्रस्तुतीकरण करता है।
03AE33	प्रस्तुतीकरण के बाद चर्चा में आई सूचनाओं पर विचार करके पुनः प्रस्तुतीकरण करता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 3 : कला की मूलभूत प्रक्रिया, साहित्य और तकनीक का आविष्कार करना।	
क्षमता : C – 3.1 : नाट्य कला में काम करते हुए उपयोग में लाई जानेवाली सामग्री, साधन और तकनीक का चयन करता है।	
03AE34	नाट्य कला के प्रस्तुतीकरण के लिए प्रत्यक्ष सामग्री उपलब्ध न होने पर पर्यायी सामग्री का उपयोग करता है।
03AE35	प्रस्तुतीकरण के लिए आवश्यक वेशभूषा, प्रतीकात्मक रूप सज्जा (मेकअप)का चयन करके प्रस्तुतीकरण करता है।
क्षमता : C – 3.2 : वैयक्तिक और सामूहिक नाटक करते समय नियोजन का अमल और प्रस्तुतीकरण के सोपानों का पालन करता है।	
03AE36	नाटक के विविध प्रसंग अथवा प्रस्तुतीकरण का अभ्यास करता है।
03AE37	प्रस्तुतीकरण करते समय सहायक तकनीकियों का उचित उपयोग करता है।
03AE38	नाट्यगृह कक्ष की संकल्पना से मानवी शरीराकृति का परदा तैयार करता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 4 : परिसर का सौंदर्य खोजकर विविध स्थानीय कला के प्रकार और सांस्कृतिक रीति–रिवाजों की रुचि निर्माण करना।	
क्षमता : C – 4.1 : प्रकृति के नाट्य और हलचल के घटक पहचानता है और उनके कलात्मक गुणों का वर्णन करता है।	
03AE39	प्रस्तुतीकरण में प्राकृतिक प्रकाश का उपयोग करता है।
03AE40	प्रस्तुतीकरण में ऋतु का विचार करके वेशभूषा धारण करता है।
क्षमता : C –4.2 : स्थानीय कला के प्रकार और संस्कृति के प्रति उत्सुकता दर्शाता है।	
03AE41	परिसर में होनेवाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों का निरिक्षण करके समूह में चर्चा करता है।
03AE42	परिसर में लोक कलाकारों के विषय एवं उनकी कला के विषय में जानकारी लेकर उसपर चर्चा करता है।
संगीत	
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG–: विविध कला प्रकारों से स्वयं के अनुभव व्यक्त करने के लिए और उन्मुक्त रूप से अभिव्यक्त होने के लिए आत्मविश्वास विकसित करता है।	
क्षमता : C – 1.1 : विविध संगीत कृति द्वारा उसके दैनिक जीवन के अनुभव आत्मविश्वास से व्यक्त करता है।	
03AE43	परिचित संगीत श्रवण करके गुनगुनाता है।
03AE44	गायन, वादन का रूचिपूर्वक अभ्यास करके गाता है।
क्षमता : C – 1.2 : संगीत कला में सामूहिक काम करते हुए स्वयं के विचारों और प्रतिसाद की चर्चा करता है।	
03AE45	सामूहिक कृति करते हुए उस कृति के संबंध में चर्चा करके अपना मत व्यक्त करता है।
03AE46	शिक्षकों तथा सहपाठी विद्यार्थियों द्वारा सुझाए गए परिवर्तनों पर ध्यान देकर उन पर प्रतिसाद देता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 2 : CG–2 कला के अभ्यास हेतु अपनी कल्पनाशक्ति और सर्जनशीलता का मुक्त उपयोग करना।	
क्षमता : C – 2.1 : विविध प्रकार के गायन, वादन (एकल, युगल समूह) संगीत संयोजन के गीत और ताल का अभ्यास तथा प्रस्तुतीकरण का संयोजन करता है।	
03AE47	परिचित गीत प्रकार (जैसे– बालगीत, अभिनय गीत) सुनकर गाता है।
03AE48	गायन के विविध प्रकार (जैसे– एकल युगल गायन) समझकर गाता है।
03AE49	एकल तथा युगल गायन का अभ्यास करके प्रस्तुतीकरण करता है।
क्षमता : C – 2.2 : गीत और अभिव्यक्ति के द्वारा कक्षा में प्रस्तुत किए गए संगीत कला के विविध घटकों की तुलना और विरोधाभास (लय, ताल, सुर, भाव) दिखाता है।	

03AE50	गीतों के विविध प्रकार बताता है और गाता है।
03AE51	गीतों के विविध प्रकार सुनकर अंतर पहचानता है।
03AE52	शास्त्रीय संगीत संबंधी परिभाषा बताता है। (जैसे- संगीत, आरोह, अवरोह)
03AE53	सरल अलंकारों की रचना और क्रम बताता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 3 : कला की मूलभूत प्रक्रिया सामग्री और तकनीक का आविष्कार करना।	
क्षमता : C – 3.1 : संगीत कला का प्रस्तुतीकरण करते समय ध्वनि, वाद्य और संयोजन का चयन करता है।	
03AE54	परिसर की विविध आवाजें सुनकर पहचानता है।
03AE55	परिसर की विविध ध्वनियाँ और उनसे निर्माण होनेवाली लय और ताल का उपयोग करके गायन और वादन करता है।
क्षमता : C – 3.2 : प्रस्तुतीकरण और अभ्यास में सहभागी होने के लिए संगीत का चयन करते समय विविध कल्पनाएँ सुझाता है।	
03AE56	ध्वनी और वाद्यों की सहायता से विविध प्रकार के गीत गाते हुए भिन्न-भिन्न कल्पनाएँ सुझाकर प्रस्तुतीकरण करता है।
03AE57	विविध गीतों का अभ्यास करके गाता है।
03AE58	अभ्यास के आधार पर तैयार किए गए गीतों का प्रस्तुतीकरण करता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 4 : परिसर का सौंदर्य खोजकर विविध स्थानीय कला के प्रकार और सांस्कृतिक रीति-रिवाजों की रूचि निर्माण करना।	
क्षमता : C – 4.1 : प्रकृति के संगीत घटक पहचानता है और उनके कलात्मक गुणों का वर्णन करता है।	
03AE59	परिसर में सुनी हुई ध्वनियों का संगीत की ध्वनियों से संबंध जोड़ता है।
03AE60	परिसर के/स्थानीय लोकसंगीत प्रकारों की जानकारी लेकर सहभागी होता है।
क्षमता : C – 4.2 : स्थानीय कला के प्रकार और संस्कृति के विषय में उत्सुकता दर्शाता है।	
03AE61	परिसर में स्थानीय लोकसंगीत के प्रकारों की जानकारी लेकर सहभागी होता है।

नृत्य

पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 1 : कला के माध्यम से मानवीय भावनाओं का अन्वेषण, प्रस्तुतीकरण और अभिव्यक्ति करने का आत्मविश्वास अनुभव से विकसित करना।	
क्षमता : C – 1.1 : परिचित नृत्य हलचलों का अभ्यास और प्रदर्शन उत्साह से प्रस्तुत करता है।	
03AE62	परिचित नृत्य की शारीरिक हलचलों का क्रमशः लयबद्ध प्रस्तुतीकरण करता है।
क्षमता : C – 1.2 : नृत्य और हलचलों में सामूहिक प्रस्तुतीकरण करते हुए कल्पना और प्रतिसाद की चर्चा करता है।	
03AE63	नृत्य और हलचलों के सामूहिक प्रस्तुतीकरण में सहयोग करता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 2 : कला के अभ्यास के लिए अपनी कल्पनाशक्ति और सर्जनशीलता का मुक्त उपयोग करना।	
क्षमता : C – 2.1 : दैनिक कृति और वैयक्तिक अनुभव पर आधारित नृत्य और हलचलों का क्रम तैयार करके प्रस्तुत करता है।	
03AE64	दैनिक जीवन में की जानेवाली शारीरिक हलचलों का क्रम तैयार करके प्रस्तुत करता है।
क्षमता : C – 2.2 : कक्षा में प्रस्तुत किया गया एकाध विषय, विविध नृत्य और हलचल, विविध शैली की अभिव्यक्ति, ताल, मुद्रा की तुलना और विरोधाभास दर्शाता है।	
03AE65	नृत्य में लय, ताल की संकल्पनाएँ स्पष्ट करता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 3 : कला की मूलभूत प्रक्रिया और सामग्री तकनीक का आविष्कार करना।	
क्षमता : C – 3.1 : नृत्य में उपयोग में लाए गए वाद्य, पोशाक, कृतिक्रम नृत्य की और अन्य व्यवस्थाओं का चयन करता है।	
03AE66	नृत्य के लिए उपयोग में लाए जानेवाले वाद्य पहचान कर उनके नाम बताता है।
03AE67	विविध वेशभूषाओं का निरीक्षण करके उनके द्वारा नृत्य का प्रकार पहचानता है।
03AE68	विविध वेशभूषाओं के अनुसार निरीक्षण करके कुछ नृत्य हलचलें करके दिखाता है।
क्षमता : C – 3.2 : नृत्य और हलचलों के क्रम को चुनते समय प्रस्तुतीकरण और अभ्यास में सहभागी होते हुए कल्पनाओं का योगदान देता है।	
03AE69	स्वयं की कल्पना के अनुसार विशिष्ट मुद्दों पर चर्चा करके उसपर आधारित नृत्य और हलचलों द्वारा प्रस्तुतीकरण करता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG – 4 : परिसर का सौंदर्य खोजना और विविध स्थानीय कला के प्रकार तथा सांस्कृतिक रीति-रिवाजों की रूचि निर्माण करना।	
क्षमता : C – 4.1 : प्रकृति के नृत्य और हलचलों के घटक पहचानता है तथा उनके कलात्मक गुणों का वर्णन करता है।	
03AE70	प्रकृति के घटकों का वर्णन करके विविध गीतों पर नृत्य और हलचल करता है।
क्षमता : C – 4.2 : स्थानीय कलाप्रकार और संस्कृति के विषय में उत्सुकता दर्शाता है।	
03AE71	विविध स्थानीय कलाप्रकारों का वर्णन करके उनके नृत्य प्रकारों की जानकारी बताता है।

सूचना : विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के साथ अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया करते समय सांकेतिक भाषा (Sign Language) तथा अन्य पूरक वैज्ञानिक शिक्षण पद्धतियों का उपयोग करें। विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को जिस प्रकार से संभव हो, उस प्रकार से स्वयं को अभिव्यक्त करने का अवसर दें।

विषय सूची

दृश्यकला

पाठ का नाम	पृष्ठ
१. नक्काशी का आनंद	१
२. अक्षरों की दुनिया में	९
३. मेरे चित्र, मेरी कल्पना	१२
४. वस्तुओं की दुनिया में	१६
५. त्रिमितीय कलाकृति	१९

रंगमंच

पाठ का नाम	पृष्ठ
६. चलो, अभिनय करें	२२
७. करें तैयारी नाटक की	२८
८. चलो, रंगमंच पर	३२

संगीत

पाठ का नाम	पृष्ठ
९. आओ, सब मिलकर गाएँ !	३९
१०. गीत एक का, गीत दोनों का	४७
११. सुर परंपरा का	५३
१२. मित्रता सुरों से	६०

नृत्य

पाठ का नाम	पृष्ठ
१३. नृत्य, मेरा आनंद	६६
१४. नृत्यमय जीवन	७१
१५. नृत्य के साथी	७६
१६. कला संस्कृति	८२

दृश्यकला

१. नक्काशी का आनंद

आज हम आस-पास के एक सुंदर स्थान की सैर करने वाले हैं! क्या तुमने कभी साड़ी की किनारी का निरीक्षण किया है अथवा शर्ट पर अंकित छोटे-छोटे चौकोनों का निरीक्षण किया है? हम जब घर से बाहर जाते हैं तो दरवाजे पर लगी वंदनवार (तोरण), दरवाजे के सामने बनाई गई रंगोली, इन सबमें समानता दिखाई देती है।

जब कोई रेखा, कोई आकार अथवा कोई रंग एक के बाद एक निर्धारित क्रम से बार-बार आता है तो एक सुंदर 'नक्काशी' तैयार होती है। नक्काशी केवल चित्र नहीं, वह है 'रेखाओं की, आकारों की, रंगों की प्रतिरूप पुनरावृत्ति या लय।'

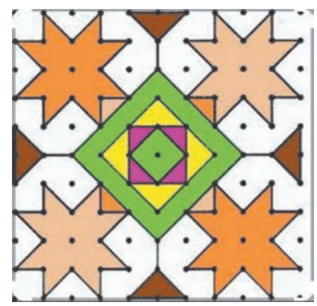

अपने घर की फर्श पर, खिड़की की लौह जाली में, यहाँ तक कि अपनी बनाई रंगोली में भी नक्काशी छिपी होती है। कभी वह सीधी रेखा में होती है, कभी सर्पीली घुमावदार होती है, कभी वह गोल होती है तो कभी त्रिभुजाकार! आज हम सादी रेखाओं की सहायता से इसी 'नक्काशी के आनंद' का अनुभव लेने वाले हैं। तो चलो फिर, हम भी अपनी कल्पना से कागज पर नक्काशी का संसार बनाएँ।

नक्काशी: रेखा और आकार

सुंदर नक्काशी काम के लिए हमें रेखा और आकारों से दोस्ती करनी पड़ेगी क्योंकि रेखा और आकार, नक्काशी काम की नींव है।

रेखा की पहचान : खड़ी, आड़ी, तिरछी, खंडित रेखा, वक्र रेखा, सर्पीली घुमावदार रेखा आदि।

खड़ी रेखा | आड़ी रेखा | तिरछी रेखा | खंडित रेखा | वक्र रेखा | सर्पीली घुमावदार रेखा

- दैनंदिन जीवन के विविध नक्काशी काम के नमूने दिखाकर अन्य उदाहरण पूछें। नक्काशी काम में उपयोग में लाए जाने वाले विविध आकारों के विषय में चर्चा करें।

CG - 4
C -4.1
LO- 03AE21

अपने आस-पास दिखने वाले इन विविध आकारों को देखो तो इनमें कुछ भौमितिक आकार तो कुछ नैसर्गिक आकार दिखाई देते हैं।

भौमितिक आकार: त्रिकोण, वर्ग, आयत, वृत्त, अर्धवृत्त।

त्रिकोण वर्ग आयत वृत्त अर्धवृत्त

नैसर्गिक आकार: पत्ता, फूल, पक्षी, प्राणी, चंद्रमा और तारे।

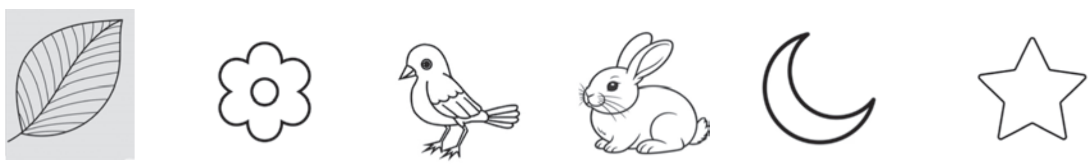

आओ, रेखा और आकारों का अभ्यास करें।

कागज पर विविध प्रकार की रेखाएँ खींचो। उसके बाद खुले हाथ से गोलाकार तथा विविध भौमितिक और नैसर्गिक आकार बनाने का अभ्यास करो।

आओ, रेखाओं के माध्यम से नक्काशी काम करें।

आगे की चौखट में खड़ी और सर्पीली घुमावदार रेखाओं को दोहराओ। देखो एक सादी किंतु आकर्षक नक्काशी तैयार हो जाएगी। उसके बाद अपनी कॉपी में केवल अलग-अलग रेखाओं का उपयोग करके नक्काशी तैयार करो।

आओ, आकारों के माध्यम से नक्काशी काम करें।

आगे की चौखट में केवल भौमितिक आकार जैसे चौकोर, वृत्त और त्रिकोण का उपयोग करो। अपनी पसंद के अनुसार क्रम लगाकर आकारों से नक्काशी तैयार करो।

- विविध आकारों की पहचान कराएँ।
- शुरुआत में केवल रेखा तथा बाद में केवल आकारों के माध्यम से नक्काशी तैयार कराएँ।
- रेखा तथा आकार के माध्यम से नक्काशी तैयार करने का अवसर दें।

CG - 2
C -2.1
LO7/12/21

आओ, रेखा और आकार के माध्यम से सुंदर नक्काशी काम करें !

दी गई चौखट में अब तक सीखी हुई विविध रेखाओं में से तुम्हें पसंद आई किसी भी रेखा और नैसर्गिक आकारों की सहायता से सुंदर नक्काशी तैयार करो।

गहरे और उजले रंगों की पहचान।

तुम्हें विविध रंगों और उनके नामों की जानकारी है ही। आओ, अब हम गहरे और उजले रंगों की पहचान कर लें।

अब इन रंगों का निरीक्षण करो और बताओ कि कौन-कौन-से रंग तुम्हारी आँखों को गहरे महसूस होते हैं तथा कौन-से उजले ?

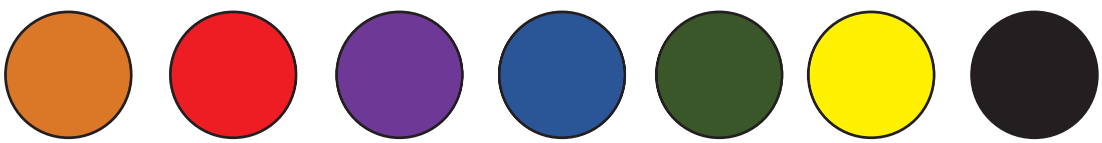

- **गहरे रंग :** नीला, गहरा हरा, जामुनी, काला रंग गहरी श्रेणी में आते हैं।
- **उजले रंग:** पीला, नारंगी, लाल रंग उजले और तेजस्वी दिखते हैं।

ध्यान में रखो : नक्काशी में रंग भरने पर वह जीवंत दिखाई देती है। नक्काशी में एक गहरा और एक उजला रंग उलट-पलटकर भरने पर वह आकर्षक दिखाई देती है।

आओ, रेखांकन और रंगकाम करें।

अब आगे चौखटें दी गई हैं। उन चौखटों में अपनी पसंद के अनुसार रेखा और आकार का उपयोग करते हुए सुंदर नक्काशी बनाओ। अब पहली चौखट में दी गई नक्काशी उजले रंग से रँगो तो दूसरी चौखट की नक्काशी गहरे रंग से रँगो।

नक्काशी रेखांकित करके उजले रंग से रँगो।

- गहरे और उजले रंग छटा का परिचय करवा दें।
- गहरे और उज्ज्वल रंगों से नक्काशी रँगने के लिए कहें।

CG -2
C -2.2
LO- 03AE12/13

नक्काशी रेखांकित कर गहरे रंग से रँगो।

नक्काशी रेखांकित कर गहरे और उजले दोनों रंगों से रँगो।

ठप्पा कला के माध्यम से नक्काशी।

अब तक हमने रेखा, आकार, रंग के माध्यम से सुंदर नक्काशी तैयार करके रँगी हैं।
अब नीचे दी गई नक्काशी देखो। तुम्हें क्या अलग दिखाई देता है, इसपर चर्चा करो।
हम भी ठप्पे लेकर नक्काशी तैयार कर सकते हैं।

तो चलो! फिर विविध प्रकार के ठप्पे और ठप्पे लेने की पद्धति समझ लो।
ठप्पा कला नक्काशी कला का सरल तंत्र है।

हम अपने आस-पास की किसी भी वस्तु के ठप्पे ले सकते हैं किंतु वह ठप्पा कागज पर अंकित होना चाहिए। जैसे भिंडी, प्याज, पेन का ढक्कन, पत्ते, हाथ की अँगुलियाँ, मरोड़ा हुआ कागज आदि।

जिस वस्तु का ठप्पा लेना है उस वस्तु के पृष्ठ भाग को रंग की डिश में डुबोकर कागज पर हल्के दबाव के साथ रखो ताकि उसका आकार कागज पर अंकित हो जाए। आगे कुछ ठप्पे दिखाए गए हैं।

- ठप्पा कला से तैयार की गई नक्काशी काम के नमूने दिखाएँ और वे किस वस्तु के हैं, उन्हें पहचानने के लिए कहें।
- ठप्पा कला के माध्यम से नक्काशी काम करवा लें।

CG - 2
C -2.2
LO-03AE13,/16

ठप्पे पहचानो और लिखो।

....

....

....

....

वे ठप्पे देखकर क्या तुम पहचान सकते हो कि वे किस वस्तु के हैं, उन्हें देखो और लिखो।

आओ, ठप्पा कला से नक्काशी निर्मित करो।

भिंडी को काटकर उसे रंग में डुबोकर उसके ठप्पे एक रेखा में अपनी चित्रकला की कॉपी में अंकित करो। दो ठप्पों के बीच अँगुली का ठप्पा अंकित कर नई नक्काशी तैयार करो।

बहुत सुंदर!

अब कॉपी में ऐसी चौखट बनाओ और विविध वस्तुओं के ठप्पे लेकर सुंदर नक्काशी तैयार करने का अभ्यास करो। उसमें से जो नक्काशी पसंद आए वह अपने शिक्षकों को दिखाओ।

सतह निर्मिति और नक्काशी

वस्तु का पृष्ठ भाग हाथ को कैसा लगता है (खुरदुरा या चिकना) इसे 'सतह' कहते हैं। ऐसे खुरदुरे पृष्ठभाग के आधार पर कागज पर सतह तैयार की जा सकती है। सतह तैयार करने के लिए निम्नलिखित सोपानों के अनुसार कृति करो।

- कोई भी खुरदुरा पृष्ठभाग चुनो जैसे सिक्का, टाट की बोरी, कंघा, जूट की थैली, खुरदुरी सतहवाले काँच के टुकड़े, वृक्ष के पत्ते के सिरे की ओर की सतह, वृक्ष का तना आदि।
- जिसकी सतह कागज पर लेना है वह वस्तु कागज के नीचे रखो, अब ऊपर से हल्के हाथ से उसपर पेन्सिल घिसो, देखो कागज पर एक सुंदर सतह तैयार हो जाएगी।

- विविध वस्तुओं के ठप्पे लेकर नक्काशी बनाने के अवसर उपलब्ध कराएँ और अभ्यास करवा लें।

CG – 3
C –3.1
LO– 03AE13, 16

- तैयार हुई सतहों को विविध आकारों में काट लो। जैसे- त्रिकोणी, वर्गाकार, गोल, अर्धवृत्त, वृत्त आदि।
- सतहों की सहायता से तैयार किए गए ये विविध प्रकार एवं रंगों के आकार कागज पर चिपकाकर नक्काशीयुक्त रंगोली तैयार करो।
- सतहों की निर्मिति हेतु रंगीन पेन्सिल, तैलीय खड़िया का उपयोग भी किया जा सकता है।

कोलाज तकनीक का उपयोग करके नक्काशी

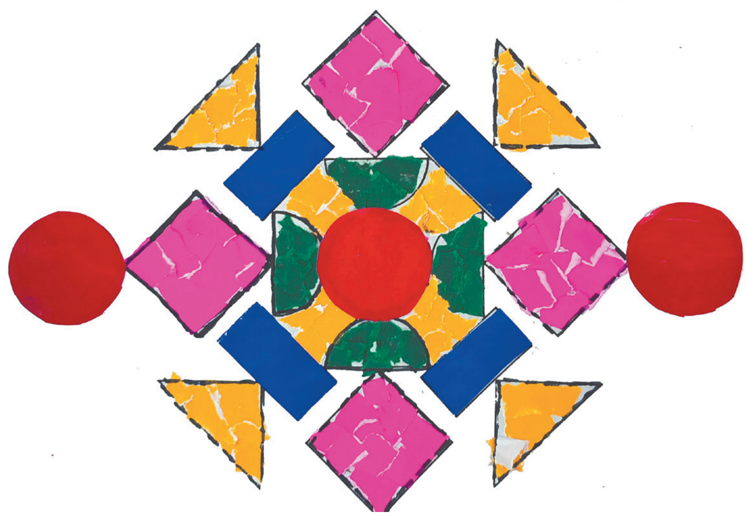

अब नक्काशी का अगला नमूना देखो। क्या इसमें तुम्हें कुछ भिन्नता दिखाई देती है? इसकी अपनी कक्षा के गुट में चर्चा करो।

साथ का चित्र न तो रंग से रँगा हुआ है और न ठप्पे लेकर तैयार किया गया है। यह कागज के छोटे-छोटे टुकड़ों को चिपकाकर तैयार किया गया है। इसी को 'कोलाज' चित्र कहते हैं।

कोलाज अर्थात विविध प्रकार के कागज, कपड़े या अन्य वस्तुओं के छोटे-छोटे टुकड़े इकट्ठे चिपकाकर बनाई गई कलाकृति। चित्र में कोलाज शैली का उपयोग करने पर एक सुंदर चित्र तैयार होता है।

- परिसर के विविध पृष्ठभागों पर सतह निर्मिति करने का प्रात्यक्षिक दिखाकर विभिन्न सतह तैयार करने का अवसर दें।
- विविध सतहों के माध्यम से चित्र/नक्काशी तैयार करने के लिए प्रोत्साहन दें।

CG - 3
C -3.1, 3.2
LO- 03AE14, 18

आओ, कागज से नक्काशी तैयार करो।

इसके लिए पुराने समाचारपत्र, रंगीन मासिक पत्रिकाओं की कतरनें, कैंची, गोंद और सफेद कागज लो। अब दिए गए क्रम से कृति करो।

१. रंगीन कागज के छोटे-छोटे त्रिभुज, वृत्त, और चौकोर काट लो।
२. सफेद कागज पर पेन्सिल से ५ सें. मी.चौड़ाई की एक लंबी पट्टी तैयार करो।
३. इस पट्टी में पहले से काटकर रखे हुए आकार एक विशिष्ट क्रम से (जैसे एक त्रिभुज, एक वृत्त) चिपकाओ।
४. दो आकारों के बीच थोड़ी जगह छोड़कर वहाँ रंगीन कागज की बारीक पट्टियाँ चिपकाओ।
५. देखो, तुम्हारी 'कागज की कोलाज नक्काशी' तैयार हो गई।

तैयार की गई नक्काशी अपने शिक्षक को दिखाओ।

अभ्यास के लिए और अलग-अलग रंगों के कागजों के टुकड़ों से नक्काशी तैयार करो।

कागज से जालीदार नक्काशी।

अब तक तुमने कागज पर नक्काशी का काम किया, पर तुम्हें मालूम होना चाहिए कि कागज से भी नक्काशी की जा सकती है।

इसके लिए तुम्हें चाहिए........

- रंगीन या सफेद चौकोर कागज।
- छोटी कैंची (कुंद सिरोंवाली, बच्चों के लिए सुरक्षित)।
- पेन्सिल।

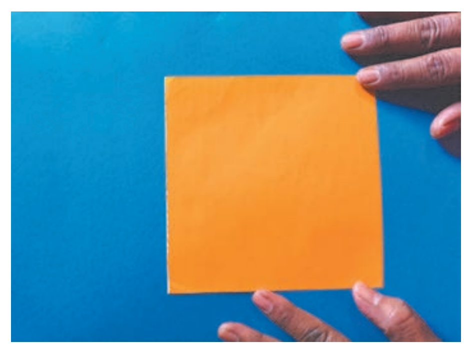

आओ अब एक-एक सोपान से नक्काशी तैयार करो।

सोपान १: कागज को मोड़ना

- सबसे पहले एक गहरे रंग का चौकोर, चिकना कागज लो।
- उस कागज को बीच से मोड़कर उसका आयत बनाओ।

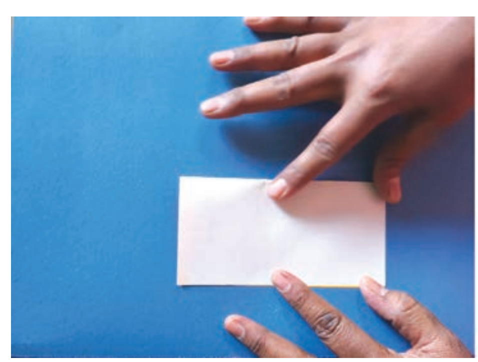

सोपान २: नक्काशी का रेखांकन

- अब कागज की बंद सतह और खुली सतह पर पेन्सिल से छोटे -बड़े आकार बनाओ।

- कोलाज शैली के नमूने दिखाकर कोलाज शैली की संकल्पना समझाएँ।
- विविध रंगीन कागज, मासिक पत्रिकाएँ, समाचारपत्रों के रंगीन कागजों का उपयोग करके नक्काशी तैयार करने के लिए कहें।

CG - 2
C -2.2
LO- 03AE 12

- कागज के बीच की बंद सतह पूर्ण रूप से न कट जाए इसकी सावधानी रखो, अन्यथा कागज के टुकड़े होकर नक्काशी बिखर जाएगी।

सोपान ३: कैंची से काटना।

- पेन्सिल से बनाए गए निशान पर से धीरे से कैंची चलाकर कागज काट लो।
- काटे हुए छोटे टुकड़े एक तरफ निकाल दो।

सोपान ४: नक्काशी खोलना ।

- अब धीरे से कागज की सारी तहें खोलो।
- तुम्हें कागज पर एक सुंदर, एक समान चक्राकर नक्काशी दिखाई देगी!

सोपान ५: नक्काशी का कागज चिपकाना ।

नक्काशी का तैयार हुआ कागज कॉपी में चिपकाओ। अभी तुमने कागज की चौकोर तह करके नक्काशी तैयार की किंतु तुम कागज की अलग-अलग प्रकार से तह करके भी नक्काशी तैयार करो और रंगीन कागज पर चिपकाओ।

मेरी कृति

१) पाँच अलग-अलग प्रकार की रेखाओं का उपयोग करके तुम्हारी कॉपी के पृष्ठ के लिए एक सुंदर किनारी (बॉर्डर) तैयार करो।

२) विविध ठप्पों की सहायता से एक सुंदर शुभकामना पत्र/बधाई कार्ड तैयार करो।

३) एक त्रिकोणी आकार बनाकर उसमें एक नक्काशी बनाओ। उसमें केवल उजले रंगों का उपयोग करके रँगो।

४) पुराने समाचारपत्रों से केवल विज्ञापन के रंगीन भाग चुनो। हाथ से ही उनके छोटे गोल टुकड़े करो। ये टुकड़े एक सरल रेखा में चिपकाकर रंग-बिरंगे 'मनकों की माला' तैयार करो।

५) एक कागज पर पाँच त्रिभुज और पाँच वृत्त आकार काटो। इन आकारों का उपयोग करके अनेक प्रकार की अलग-अलग नक्काशी तैयार करके उन्हें कॉपी में चिपकाओ।

- बच्चों द्वारा तैयार की गई नक्काशियों की कक्षा में प्रदर्शनी लगाएँ।

CG – 2,3,4
C –2.1, 2.2, 3.1, 3.2, 4.1
LO–03AE12/13/16/21/23/14/18

२. अक्षरों की दुनिया में

आगे दिए गए सुंदर हस्ताक्षर के नमूने देखो। कितने अच्छे, घुमावदार और सुंदर अक्षर, कितने सुंदर दिखते हैं न!.......आओ अपने अक्षरों को भी इसी तरह घुमावदार और सुंदर बनाने के लिए अक्षर लेखन का अभ्यास करो।

सह्याद्रि की ऊंची चोटी -सी।
भव्य है अपनी देव नागरी ।।

पाठशाला मन भाए ऐसी,
शिशु से माँ की प्रीति हो जैसी।

सुंदर हस्ताक्षर एक ऐसी कला है,
जिसे अभ्यास से किसी के लिए भी आत्मसात करना संभव है।

आओ अक्षर लेखन का अभ्यास करो।

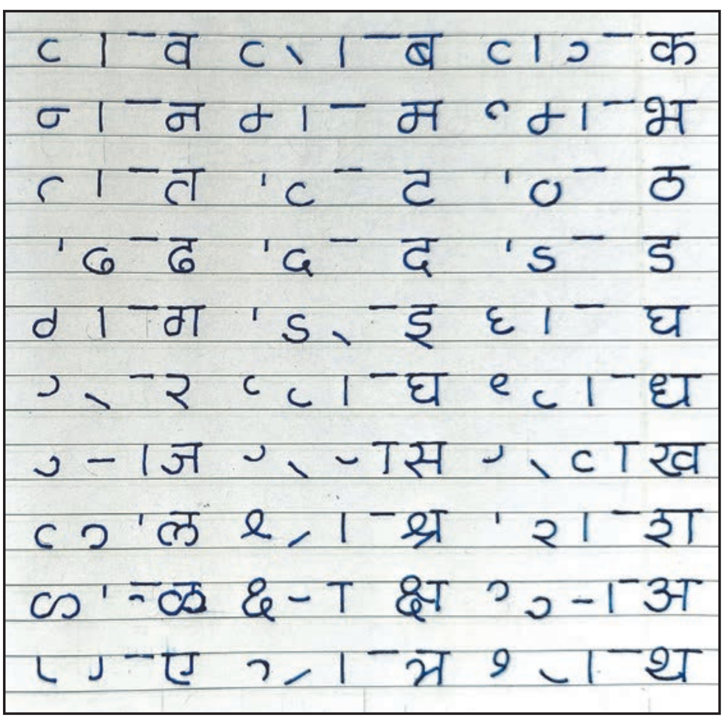

सुंदर हस्ताक्षर के लिए अक्षरों के अवयवों का अभ्यास आवश्यक है। कुछ अक्षर अवयव यहाँ दिखाए गए हैं। ये अक्षर अवयव किस क्रम से तथा कैसे लिखे जाएँ यह दिखाया गया है। उसी के अनुसार अक्षर अवयवों का अभ्यास करो।

बढ़िया! अब इन अक्षर अवयवों का अधिक अभ्यास अपनी दो पंक्तिवाली कॉपी में करो और अपने शिक्षक को दिखाओ।

- विविध अक्षरों के अवयव और उनके घुमाव बनाने का प्रात्यक्षिक दिखाएँ।
- अक्षर अवयव बनाते समय योग्य दिशा से घुमाव हो रहा है, यह सुनिश्चित करें।
- कॉपी में अक्षर अवयव का अभ्यास करने के लिए कहें।

CG - 1
C -1.2
LO- 03AE5

अक्षर अवयव से अक्षर की ओर।

तुमने अक्षर अवयव सीखा और उसका अभ्यास भी किया। आओ अब इन अवयवों से अक्षर कैसे तैयार होते हैं, यह सीखो और अभ्यास भी करो।

अक्षर लेखन का अधिक अभ्यास दो पंक्ति की कॉपी में करो और अपने शिक्षक को दिखाओ।

कुछ अक्षरों के नमूने

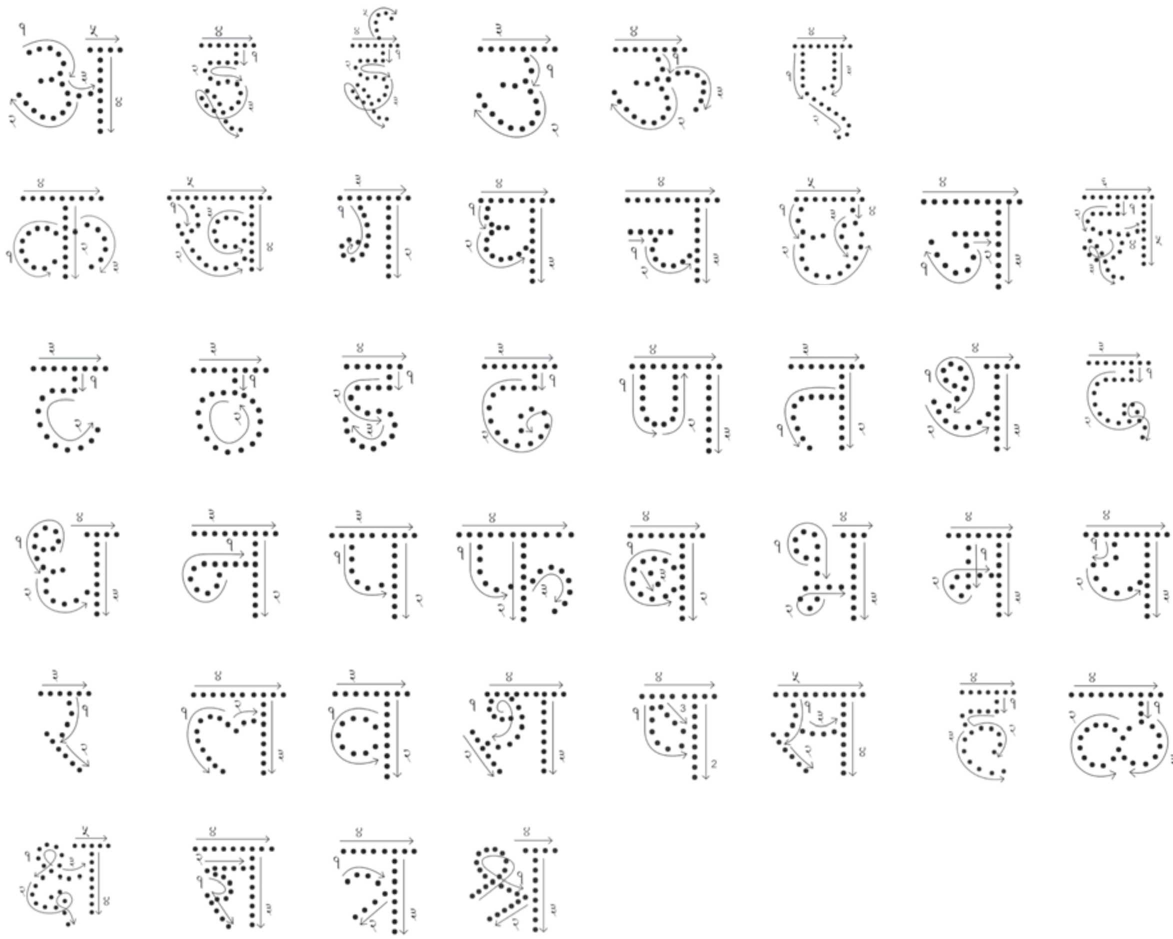

अक्षर से शब्द की ओर

अक्षर बनाना सीखो, आओ अब अक्षरों से सुंदर हस्ताक्षर में शब्द लिखो।

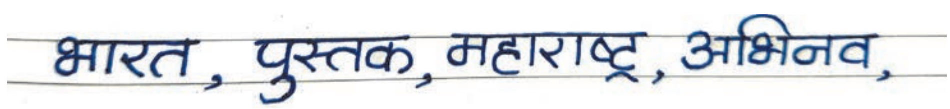

इस तरह तुम कोई भी बीस शब्द सुंदर हस्ताक्षर में लिखो।

- अक्षर अवयव से अक्षर लिखने की पद्धति को प्रात्यक्षिक द्वारा दिखाएँ।
- अक्षरों से लेखन करने का अभ्यास करवा लें।
- विविध शब्द, वाक्य कॉपी में सुंदर हस्ताक्षर में लिखने के लिए प्रोत्साहित करें।

CG – 1
C –1.2
LO– 03AE5

सुंदर अक्षरों में शुभकामना पत्र!

आगे निमंत्रण पत्रिका और शुभकामना पत्र के कुछ नमूने दिए हैं, उनका निरीक्षण करो। तुम भी विविध निमंत्रण पत्रिकाओं का संग्रह करो। इन संग्रह की गई पत्रिकाओं में अक्षरों के घुमाव देखो। अपनी पसंद के अनुसार एक शुभकामना पत्र सुंदर अक्षरों में लिखकर तैयार करो और अपने शिक्षक को दिखाओ।

विविध माध्यमों से अक्षर लेखन

अक्षर लेखन के लिए पेन्सिल, स्याही पेन, बॉल पेन, स्केच पेन, तैलीय खड़िया आदि माध्यमों का उपयोग किया जा सकता है।

पेन्सिल –
स्याही पेन –
बॉल पेन –
स्केच पेन –
तैलीय खड़िया –

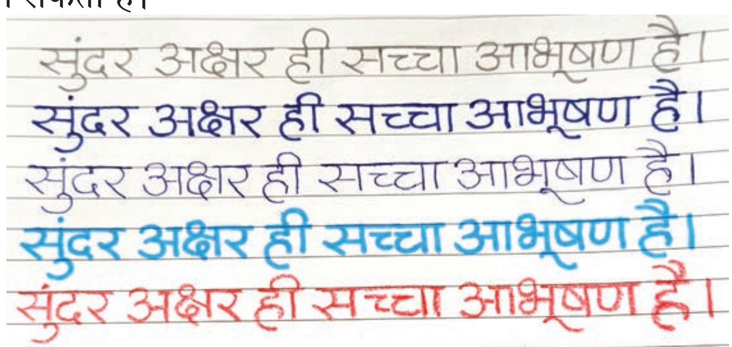

मेरी कृति

१. समाचारपत्र और पुस्तकों के सुविचार एकत्रित करो और उन्हें अपनी कॉपी में सुंदर अक्षरों में लिखो।

२. स्वयं अपना नाम विविध लेखन साधनों की सहायता से अपनी कॉपी में लिखो।
जैसे– पेन्सिल, स्याही पेन, बॉल पेन, स्केच पेन, तैलीय खड़िया।

- निमंत्रण पत्रिका और शुभकामना पत्र के नमूने दिखाएँ।
- निमंत्रण पत्रिकाओं और शुभकामना पत्रों का संग्रह करने के लिए कहें।
- शुभकामना पत्रों में विविध प्रकार के घुमावदार अक्षरों का उपयोग करने के लिए कहें।
- विविध माध्यमों से अक्षर लेखन का प्रात्यक्षिक दिखाएँ।

CG – 1
C – 1.2
LO– 03AE5,6

३.मेरे चित्र, मेरी कल्पना

क्या-क्या हुआ, यह आज हम याद करके बता सकते हैं। उसी प्रकार हम देखे हुए प्रसंग, वस्तु और अनुभव का वर्णन कर सकते हैं। उसी तरह उस प्रसंग को याद करके उसका चित्र भी बना सकते हैं। इस तरह याद करके बनाए गए चित्र को ही 'स्मरण चित्र' कहते हैं। स्मरण चित्र अर्थात स्मरण से या याद करके बनाया गया चित्र।

स्मरण चित्र बनाने के लिए तुम्हें रेखा और आकार से दोस्ती करनी पड़ेगी, जिसका अभ्यास तुमने नक्काशी काम करते हुए किया ही है। तो चलो फिर और थोड़ा अभ्यास करो और सुंदर स्मरण चित्र बनाओ।

हवा में रेखांकन – तुम्हारी पसंद के फूल या फल का आकार हवा में अँगुली से बनाकर देखो। अब वही आकार कागज पर पेन्सिल से बनाओ।

मुक्त रेखा – कागज पर न रुकते हुए लगातार वृत्ताकार, सर्पाकार और तिरछी रेखाएँ खींचो। देखो कि क्या इन रेखाओं में तुम्हें कोई चेहरा या पहाड़ जैसा आकार दिखाई देता है?

मनुष्यों के चित्र – मनुष्यों की हलचल/गतिविधियाँ (बैठना/चलना/दौड़ना/नाचना) दिखाने के लिए सादी रेखाओं के माध्यम से बनाए गए रेखाचित्र देखकर ऐसी कुछ मानव आकृतियाँ बनाने का अभ्यास करो।

प्राकृतिक और मानव निर्मित घटकों के सरल रेखांकन

अपने आस-पास विविध प्रकार की वस्तुएँ, घटक दिखाई देते हैं। इनमें कुछ घटक प्राकृतिक होते हैं तो कुछ मानव निर्मित।

प्राकृतिक घटक – जैसे – वृक्ष, पत्ते, फूल, पक्षी, प्राणी, पहाड़, नदी आदि।

मानव निर्मित घटक – जैसे – घर, वाहन, पुस्तक, संगणक, बल्ला, प्याला आदि।

इनके अतिरिक्त स्वयं देखे हुए पाँच प्राकृतिक घटक और पाँच मानव निर्मित घटकों की सूची तैयार करो।

- बच्चों के अनुभव विश्व की वस्तुओं और फलों के नाम लेकर, हवा में उनके आकार बनाने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें।
- रेखाचित्र बनाने के लिए कुछ कृतियों के नाम बताएँ और उनके अभ्यास के अवसर दें।

CG - 1, 2
C - 1.2, 2.1
LO- 03AE2,7,15

प्राकृतिक घटक	मानव निर्मित घटक
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

अपनी पसंद के अनुसार सूची में से स्वयं देखा हुआ एक प्राकृतिक घटक तथा एक मानव निर्मित वस्तु का चित्र पेन्सिल से अपनी कॉपी में बनाओ।

चित्र बनाने से पहले संबंधित घटक या वस्तु का विवरण याद करो। उसका आकार, रचना, रंग, स्पर्श यह सब याद करने का प्रयत्न करो। इसके बाद उस घटक का मूल विवरण बारीकी से रेखांकित करो।

अब स्वयं देखे हुए प्राकृतिक घटक या वस्तुओं के बनाए हुए कुछ चित्र अपने शिक्षक और सहपाठियों को दिखाओ।

प्रसंगों के स्मरण चित्र

आओ, अब हम अपनी स्मृति से एक चित्र बनाओ। पाठशाला का तुम्हारा पहला दिन तो याद आता ही होगा।

तो आओ हम 'पाठशाला का पहला दिन' विषय पर स्मरण चित्र बनाएँ।

१. **याद करो** – पाठशाला का पहला दिन कैसा था? तुम पाठशाला में कैसे आए? क्या पाठशाला की इमारत और कक्षा याद है? पाठशाला में तुम्हारा स्वागत कैसे हुआ? क्या तुम्हें पाठशाला में छोड़ने के लिए कोई आया था? पाठशाला का परिसर कैसा था? पाठशाला में आते समय तुम्हें कैसा लग रहा था? इनमें से कोई भी बात तुम्हें स्पष्ट रूप से याद है क्या, यह सुनिश्चित करो। वह घटक किस भौमितिक आकार जैसा दिखता है, यह तय करके उसे रेखांकित करो।

२. **मुख्य आकृति की रचना** – चित्र के मध्य भाग में स्वयं की या मित्र की आकृति बनाओ। मुख्य आकृति की रचना, चित्र के महत्त्वपूर्ण घटक और उस घटक की स्थूल आकृति पेन्सिल से धुँधली रेखांकित करो।

३. **विवरण** – चित्र के सारे घटकों की रचना सुनिश्चित हो जाने पर स्मृति के अनुसार बारीकी से विवरण रेखांकित करो जैसे पाठशाला की दीवार, पाठशाला के प्रवेश द्वार पर लगाया गया वंदनवार (तोरण), स्वागत पट्ट आदि।

- प्राकृतिक/मानव निर्मित घटकों का वर्णन करते समय उन दृश्यों का विवरण बताने के लिए प्रोत्साहित करें।
- वर्णन के अनुसार चित्र में विवरण दिखाने के लिए प्रोत्साहित करें।

CG - 1
C -1.1
LO03AE02

४. रँगना – स्मरण चित्र रेखांकन पूर्ण हो जाने पर उसे रँगने का कार्य करो। स्मरण चित्र में तुमने जो देखा है उसे वैसा ही दिखाने का प्रयत्न किया जाता है। अपनी पसंद के रंग के माध्यम से चित्र को रँगकर पूर्ण करो।

नीचे दिए गए दोनों चित्र देखो और उनके अंतर को समझो।

इनमें से एक है स्मरण चित्र और दूसरा है कल्पना चित्र। **स्मरण चित्र** में देखे हुए प्रसंग या वस्तु घटक को वह जैसा है वैसा ही रेखांकित कर रँगने का प्रयत्न किया जाता है।

कल्पना चित्र स्मरण चित्र से अलग है। उस चित्र में नयेपन के साथ वास्तविकता से अलग घटक दिखाई देते हैं। इस चित्र में हमें अपने मन की अनोखी कल्पनाएँ दिखाई जाती हैं। अपने मन की मजेदार कल्पना चित्र द्‌वारा बनाई जाती है तो उस चित्र को **कल्पना चित्र** कहते हैं।

....

उपरोक्त दोनों चित्रों में कौन-सा चित्र स्मरण चित्र और कौन-सा कल्पना चित्र होगा, यह पहचानकर उस चित्र के नीचे उसका नाम लिखो।

आओ, कल्पना से एक अनोखा कल्पना चित्र बनाएँ।

जो बातें प्रत्यक्ष में नहीं होती लेकिन हम वैसा विचार कर सकते हैं, ऐसी कल्पना पर आधारित चित्र को कल्पना चित्र कहते हैं। पक्षियों को जैसे पंख होते हैं वैसे हमें पंख नहीं होते। लेकिन यदि तुम्हें पंख होते तो?

तो चलो फिर हम 'मुझे पंख होते तो...' विषय पर कल्पना चित्र बनाएँ।

नीचे दिए गए चरणबद्‌ध तरीके से चित्र बनाओ

१. कल्पना करो – मुझे पंख होते तो मैं दैनिक जीवन में क्या-क्या करता? पाठशाला में कैसे आया होता? क्या पक्षियों की तरह पेड़ों पर, पहाड़ों पर उड़कर गया होता? पंखों से उड़कर और क्या-क्या किया होता? तुम्हारे पंख किन रंगों के होते, इसकी कल्पना करो। कल्पना किए गए प्रसंगों से अपनी मनपसंद कल्पना सुनिश्चित करो।

- बच्चों को मानव आकृति बनाते समय रेखाचित्र बनाकर पूर्ण आकृति की ओर ले जाने का अभ्यास कराएँ।
- स्मरण चित्र और कल्पना चित्र का अंतर स्पष्ट करें।

CG - 1
C - 1.1
LO- 03AE03

२. मुख्य आकृति – चित्र के मध्य भाग में अपनी कल्पना की आकृति पेन्सिल से धुँधली रेखांकित करो।

विवरण – तुम्हारी कल्पना के अन्य आधार का विवरण चित्र में बारीकी से रेखांकित करो।

जैसे– पहाड़, बादल, चंद्रमा, इंद्रधनुष, ऐसी कल्पना के अनुसार पृष्ठभूमि रेखांकित करो।

३. कल्पना में कुछ भी संभव होता है! पेड़ो पर फूल की जगह टॉफिया (चॉकलेट) लगी हुई दिखाओ अथवा बादलों से बारिश, नहीं तो रंग बिरंगी गोलियाँ बरसती हुई दिखाओ। तुम इस प्रकार कोई भी कल्पना कर सकते हैं।

४. रँगना : कल्पना चित्र को रँगने के लिए तुम अपनी पसंद के किसी भी अनोखे रंग का उपयोग कर सकते हो।

अपना कल्पना चित्र कक्षा के मित्रों और शिक्षक को दिखाओ और अपने चित्र की कल्पना के संबंध में चर्चा करो।

ध्यान में रखो :

कल्पना चित्र में रंग का कोई भी बंधन नहीं होता है। तुम स्वयं अपना विश्व तैयार कर सकते हो।

जैसे– जामुनी घास, गुलाबी आकाश बना सकते हो।

मेरी कृति

१) मनपसंद प्राणी का चित्र बनाओ।

२) किसी भी एक त्योहार का चित्र बनाओ।

३) 'आकाश से उड़ने वाली मेरी गाड़ी' इस विषय पर कल्पना चित्र बनाओ।

४) 'मेरे सपनों की परी' इस विषय पर कल्पनाचित्र बनाओ।

- विद्‌यार्थियों की कल्पना शक्ति को अवसर मिले, ऐसे प्रश्न पूछकर कल्पना चित्र बनाने तथा रँगने के लिए प्रोत्साहित करें।

CG – 1
C –1.1
LO– 03AE03,4

४. वस्तुओं की दुनिया में

दैनिक जीवन में हम अनेक वस्तुओं का उपयोग करते हैं। घर में, पाठशाला में, परिसर में अनेक छोटी-बड़ी वस्तुएँ हमें दिखाई देती हैं। वस्तुओं का उपयोग करते हुए उन वस्तुओं की विशेषताओं की हमें अनुभूति होती है। जैसे- उनका आकार, मोटाई, लंबाई, चौड़ाई, रंग तथा उसकी सतह आदि।

वस्तु का चित्र बनाने के लिए पहले उस वस्तु का निरीक्षण करके उसकी विशेषता समझना आवश्यक होता है। आओ वस्तुओं का निरीक्षण करके उनकी विशेषताएँ समझ लो। वस्तु का आकार, उस वस्तु में छिपा हुआ भौमितिक आकार, उसके लिए आवश्यक रेखाएँ, उसका रंग उसी प्रकार उसकी सतह (Structure) आदि।

आकार और वस्तु

अपने परिसर की वस्तुओं का निरीक्षण करो और निम्नलिखित भौमितिक आकार के अनुसार उनका वर्गीकरण करके वस्तुओं के नाम लिखो।

चौकोर आकार की वस्तु	त्रिभुजी आकार की वस्तु	वृत्ताकार की वस्तु	भौमितिक आकार की वस्तुएँ
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

आओ, वस्तु में छिपे भौमितिक आकार खोजें।

चित्र में दी गई वस्तुओं का निरीक्षण करो। उसमें छिपे हुए भौमितिक आकार खोजकर पास के चौकोर में बनाओ।

तुम वस्तुओं का निरीक्षण करके उनके भौमितिक आकार खोजना समझ गए हो। अब तुम्हें वस्तु चित्र आसानी से बनाना आ जाएगा।

- वस्तु और उसमें भौमितिक आकार पहचानने के लिए प्रश्न पूछें।

CG - 1
C -1.1
LO- 03AE01

आओ, वस्तुओं के चित्र बनाएँ

आओ साथ में रखी हुई दो वस्तुओं के वस्तु चित्र निम्न सोपानों के अनुसार बनाएँ।

१. पहले वस्तुओं का निरीक्षण करो।

२. शुरुआत में उन वस्तुओं में छिपे भौमितिक आकार खोजो।

३. उन दोनों वस्तुओं के एक-दूसरे से आकार में भिन्नता और प्रमाण पर ध्यान दो।

४. वस्तु के बाह्य आकार का भौमितिक आकार में रेखांकन करो।

५. वस्तु की विशेषताओं के अनुसार रेखाओं की सहायता से उसके आकार को उचित घुमाव देकर रेखांकन पूर्ण करो।

६. वस्तु की बारीकियों का रेखांकन करो।

७. तैयार हुए रेखांकन में मनपसंद रंग माध्यम से रँगकर पूर्ण करो। जैसे- तैलीय खड़िया, जलरंग आदि।

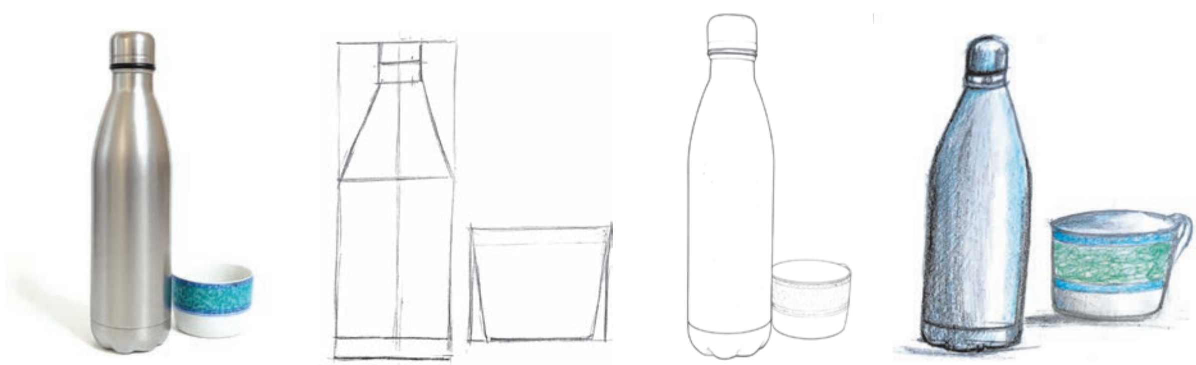

आओ, ठप्पे लेकर वस्तु चित्र रँगो

तुमने वस्तु चित्र बनाकर बहुत सुंदर रँगे। पर क्या तुम जानते हो कि हम वस्तु चित्र को ठप्पे की सहायता से रँगकर भी पूर्ण कर सकते हैं?

पहले हमने नक्काशी काम के लिए विविध ठप्पे लिए हैं, याद है ना तुम्हें!

तो चलो फिर ठप्पों का उपयोग करके चित्र को रँगें।

१. तुम्हारी कक्षा के किसी एक वस्तु का रेखाचित्र रेखांकित करो। जैसे- बस्ता, डिब्बा, पुस्तक, पेन आदि।

२. इन वस्तुओं के रंगानुसार ठप्पे लेने के लिए जलरंगों का चयन करो।

३. चुने हुए वस्तु चित्र को रँगने के लिए कौन-से ठप्पे का उपयोग करना है, यह सुनिश्चित करो। जैसे- अँगुली के ठप्पे, भिंडी के ठप्पे, प्याज के ठप्पे, पत्ते के ठप्पे आदि।

- ठप्पा काम की संकल्पना समझा दें तथा उसका उपयोग करके वस्तु रेखांकन पर ठप्पे लेने का प्रात्यक्षिक करके दिखाएँ।

CG - 2,3
C -2.2, 3.1
LO- 03AE11,16

४. चुनी गई सामग्री का उपयोग करके विविध रंगों की सहायता से ठप्पा कला का चित्र पूर्ण करो।
५. अपना चित्र अन्य लोगों को दिखाकर अपने अनुभव का वर्णन करो।

कोलाज के माध्यम से वस्तु चित्र

ठप्पा कला से तुमने वस्तुचित्र की सुंदर रँगाई की। अब वस्तुचित्र को रँगने की एक और विधि हम समझेंगे, वह है कोलाज। नक्काशी काम में भी हमने कोलाज किया है।

कोलाज कला से वस्तुचित्र तैयार करने के लिए निम्नलिखित सोपानों का उपयोग करो।

१. चयनित वस्तु का बाह्य रेखांकन कागज पर शोभा दे, इतने बड़े आकार में करो।
२. वस्तु के रंग के अनुसार चिपकाने के काम के लिए रंगीन कागज और गोंद जैसी सामग्री जमा करो।
३. वस्तु के रंग के अनुसार रंगीन कागज के हाथ से टुकड़े करो।
४. तैयार किए गए टुकड़े वस्तु पर दिखाई देने वाले रंग के अनुसार वस्तु के रेखांकन पर चिपकाकर कोलाज के माध्यम से चित्र पूर्ण करो।

मेरी कृति

- घर की दो वस्तुओं को एक-दूसरे के पास रखकर उसका अनुपातयुक्त वस्तु चित्र बनाकर रँगो।
- मनपंसद वस्तु का चित्र बनाकर उसे ठप्पा कला से रँगो।
- एक वस्तु का वस्तु चित्र बनाकर उसे कोलाज विधि से पूर्ण करो।

- कोलाज की संकल्पना समझाएँ। कोलाज के नमूने दिखाएँ । चिपकाकर वस्तु चित्र तैयार करने हेतु प्रोत्साहित करें।

CG - 3
C - 3.1
LO- 03AE18

५. त्रिमितीय कलाकृति

निम्नांकित दोनों तस्वीरें देखो। इनमें तुम्हें क्या अंतर दिखाई देता है, इसपर चर्चा करो।

१. 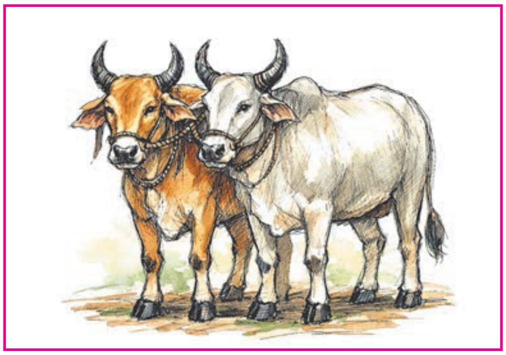

२.

चित्र के दो आयाम होते हैं। लंबाई और चौड़ाई। दो आयामवाली कलाकृति को द्विमितीय या द्विआयामी कलाकृति कहते हैं। तुम्हारे बनाए हुए चित्र द्विमितीय कलाकृति हुए। अब हमें त्रिमितीय कलाकृति तैयार करना है। त्रिमितीय अर्थात तीन आयाम लंबाई, चौड़ाई और मोटाई। त्रिमितीय कलाकृति को 'शिल्प' भी कहा जाता है।

प्राकृतिक घटक से त्रिमितीय कलाकृति (शिल्प)

घोड़ों के शिल्प देखकर वे किन घटकों से बनाए हैं, उन घटकों के नाम लिखो।

....

इस तरह हम विविध प्राकृतिक घटकों से त्रिमितीय रचना (शिल्प) तैयार कर सकते हैं। जैसे– कागज, मिट्टी, लकड़ी इन घटकों को 'माध्यम' कहते हैं।

इन माध्यमों के अलावा अपने परिसर में और किन माध्यमों से त्रिमितीय रचना (शिल्प) की जा सकेगी उनकी सूची बनाओ।

....

....

....

- परिसर में उपलब्ध माध्यम और सामग्री का संकलन कर लें।
- संकलित सामग्री का उपयोग करके त्रिमितीय रचना निर्मिति का प्रात्यक्षिक करके दिखाएँ।
- संकलित सामग्री से त्रिमितीय रचना करने के लिए कहकर कलाकृति का वर्णन करने हेतु प्रोत्साहित करें।

CG – 3
C – 3.1
LO– 03AE19

तैयार की गई सूची के माध्यम से कौन-सी त्रिमितीय कलाकृति तैयार की जा सकेगी, वह लिखो।

माध्यम	कलाकृति का नाम
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

आओ, गाड़ी तैयार करें

तुम्हारे परिसर में उपलब्ध माध्यमों से तुम अपनी पसंद के अनुसार एक गाड़ी का त्रिमितीय शिल्प तैयार करो।

दो माध्यमों की सहायता से त्रिमितीय रचना

तैयार किए गए त्रिमितीय शिल्प और उसे तैयार करते समय आए अनुभव के बारे में कक्षा में चर्चा करो।

आओ, अब हम एक के स्थान पर दो माध्यमों का उपयोग करके त्रिमितीय रचना (शिल्प) तैयार करो।

- इसके लिए तुम्हारे परिसर में उपलब्ध पर्यावरणपूरक कोई दो माध्यम चुनो।
- उन दो माध्यमों से घर की सुंदर प्रतिकृति तैयार करो।
- तैयार की गई घर की प्रतिकृति त्रिमितीय रचना (शिल्प) अपने सहपाठी मित्रों और शिक्षकों को दिखाओ।

मेरी कृति

ध्यान में रखो :

पर्यावरणपूरक माध्यम अर्थात ऐसे माध्यम जिनसे पर्यावरण दूषित नहीं होता, पर्यावरण को हानि नहीं पहुँचती।

- तुम्हारे परिसर में उपलब्ध माध्यम से प्राणी या पक्षी की प्रतिकृति अर्थात त्रिमितीय शिल्प तैयार करो।
- तुम्हारी पाठशाला में 'प्रति समूह एक शिल्प' के अनुसार पर्यावरणपूरक वस्तु/घटकों के माध्यम से तैयार करो।
- जैसे- किला, यंत्र मानव आदि।

- परिसर में उपलब्ध माध्यमों और साधनों को एकत्र करें।
- एकत्रित सामग्री का उपयोग करके त्रिमितीय रचना निर्मिति का प्रात्यक्षिक करके दिखाएँ।
- एकत्रित सामग्री से त्रिमितीय रचना निर्माण करने के लिए कहकर कलाकृति का वर्णन करने के लिए प्रोत्साहित करें।

CG – 3
C – 3.1
LO– 03AE19, 20,17

रंगमंच

६. चलो, अभिनय करें

प्रकृति में अनेक प्रकार के प्राणी एवं पक्षी पाए जाते हैं। प्रत्येक प्राणी और पक्षी की आवाज भिन्न होती है। उनकी गतिविधियाँ भी भिन्न-भिन्न होती हैं। क्या तुम्हें कुछ पशु-पक्षियों की आवाज की नकल उतारना आएगा?

आओ, मजेदार खेल खेलें

निम्नांकित चित्र के पशु-पक्षियों की आवाज की नकल उतारो।

पहचानो तो कौन?

इस खेल में हम अपने परिसर के प्राणी एवं पक्षी की आवाज की नकल करेंगे। वह आवाज किसकी है, यह पहचानेंगे। इसके लिए तुम परिचित प्राणी-पक्षियों की आवाज निकालो।

अब कक्षा के सभी विद्यार्थी गोल आकार में बैठे। तुममें से कोई एक किसी प्राणी या पक्षी की आवाज निकाले। अन्य विद्यार्थी वह प्राणी या पक्षी कौन-सा है, पहचाने। जो सही उत्तर देगा उसे अगली आवाज निकालने का अवसर दो।

आओ, अब हम चित्र के पशु-पक्षियों की गतिविधियों की भी नकल उतारें।

- विविध प्राणी-पक्षी के चित्र दिखाकर उनकी आवाजों और गतिविधियों की नकल उतारने का अवसर दें।
- प्रत्येक विद्यार्थी सहभागी हो इसकी पुष्टि कर लें।
- दिया हुआ खेल प्रत्यक्ष खेलने का अवसर दें।

CG - 4,1
C - 1.1
Lo - 03AE26
03AE27

आनंद वस्तुओं की आवाजों का !

हमने भिन्न-भिन्न पक्षियों, प्राणियों की आवाजें निकाली और पहचानी भी। प्रत्येक वस्तु की आवाज भिन्न होती है। अब और कौन-कौन-सी वस्तुओं की आवाजें तुमने सुनी हैं, उनकी सूची बनाओ।

....

....

....

....

आवाजों का खेल :

एक विद्‌यार्थी की आँखें रूमाल से बाँधो। कक्षा की कोई भी वस्तु बजाओ।(जैसे- कंपास खोलना, दरवाजा खोलना) आँखों पर रूमाल बाँधा विद्‌यार्थी वह आवाज किस वस्तु की है, यह पहचाने। यदि वह आवाज को पहचान जाए तो अगले विद्‌यार्थी की आँखों पर रूमाल बाँधकर आवाज पहचानने का अवसर दो। किंतु दो अवसर देने के बाद भी वह आवाज नहीं पहचानता है तो उसे किसी भी प्राणी या पक्षी की आवाज या गतिविधियों की नकल उतारने के लिए कहो।

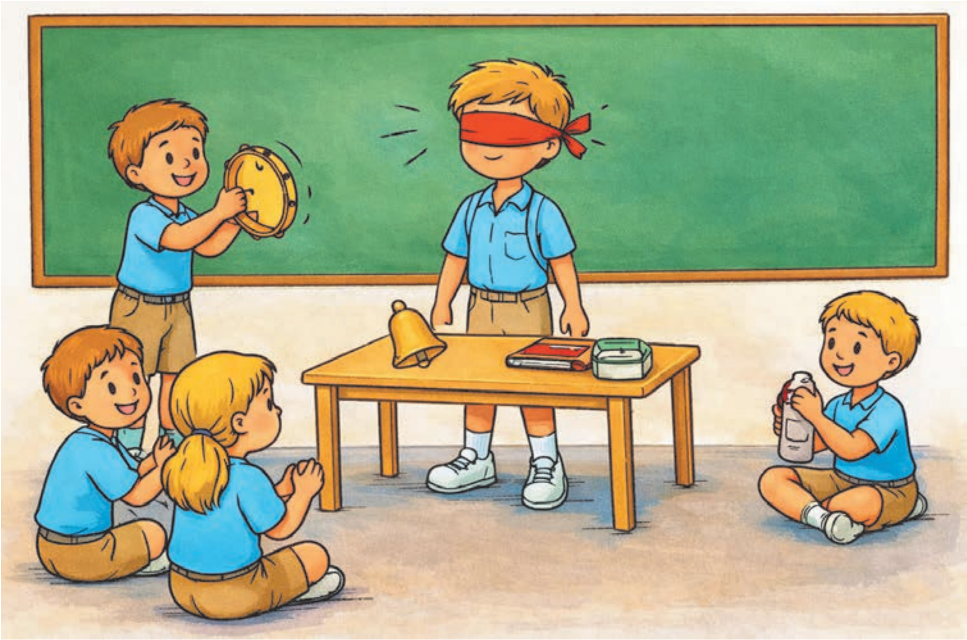

- दिए गए क्यू आर कोड की आवाज विद्‌यार्थी बराबर पहचानता है, इसकी पुष्टि करें।
- विद्‌यार्थियों को विविध वस्तुओं की आवाजें करने के लिए कहकर अभ्यास करवा लें।
- विविध वस्तुओं की आवाजें याद करके उनकी सूची बनाने के लिए कहें।
- आवाज का खेल खेलते समय प्रत्येक विद्‌यार्थी को अवसर मिले, इसका ध्यान रखें।

CG - 1
C- 1.2
Lo- 03AE28

करें व्यक्तियों की नकल

अपने घर में, अगल-बगल में विविध आयु के व्यक्ति रहते हैं। आओ, इन व्यक्तियों की आवाजों और गतिविधियों की नकल करके देखें।

जैसे -

इसी तरह अपने परिसर के व्यवसायियों तथा अन्य व्यक्तियों की नकल करके देखें।.

ध्यान में रखो :

नकल करने आना एक कौशल है।

किंतु नकल अन्य लोगों को **चिढ़ाने के लिए नहीं की** जानी चाहिए।

नाट्य प्रसंगों का अभ्यास

हमने प्राणियों, पक्षियों, वस्तुओं की आवाजों की नकल उतारी। कुछ व्यक्तियों की आवाजों और गतिविधियों की नकल भी की। इन सबका उपयोग करते हुए हम कुछ प्रसंग प्रस्तुत करके देखें।

आओ, निम्नलिखित कुछ प्रसंगों के संवाद पढ़कर उनपर छोटे-से नाट्य प्रसंग प्रस्तुत करें।

प्रसंग १. सुबह हो गई

(पात्र : चिड़िया, कौआ, मुर्गा, माँ और एक सोया हुआ लड़का)

इन पात्रों की भूमिकाएँ समूह में बाँट लो और निम्नलिखित संवादों पर अभिनय करो।

मुर्गा : कुकड़ू कूँ.....कुकड़ू कूँ......अरे उठो रे, उठो। सुबह हो गई!

चिड़िया : चिउँ.....चिउँ....चिउँ.....अरे देखो-देखो सूरज भैया ऊपर आ गए!

कौआ : काँव.....काँव.....काँव.....चलो-चलो काम में जुटो।

माँ : मन्नू, उठ बेटा। तेरे दोस्त कबके उठ गए। तू कब उठेगा?

लड़का : हाँ माँ सच में..... कितनी मीठी आवाजें हैं इनकी। चलो मैं भी उठता हूँ। अब पाठशाला की तैयारी करता हूँ। लाललालाला लाललालाला।

- विविध आवाजों की नकल करवाकर वे कब और किनके लिए उपयोग में लाई जा सकेंगी यह पूछें।
- परिवार तथा परिसर के व्यक्तियों की गतिविधियों की नकल उतारने का अवसर दें।
- नाट्य प्रसंग के प्रस्तुतीकरण के समय आरंभ में वाचिक अभिनय करवा लें, बाद में प्रसंग का प्रस्तुतीकरण करवाएँ।

CG- 1
C- 1.1
Lo- 03AE 26

क्यों फिर मजा आया ना? अब नीचे और कुछ प्रसंग दिए हैं। समूह में उनका प्रस्तुतीकरण करो।

प्रसंग २. रसोईघर की गड़बड़

(पात्र : कुकर, नल, थाली और माँ)

नल : टप.....टप.....टप..... मुझे कोई ठीक तरह से बंद करो ना रे!

कुकर : शऽऽऽऽऽ शऽऽऽऽऽ सब्जी पक गई भला!

थाली : खन्नऽऽऽ....ओ माँ, लगा ना मुझे!

माँ : अरे भगवान, सबकुछ कितना बिखरा है! और यह थाली नीचे कैसे गिरी, कमाल ही हो गया! पहले कुकर की गैस बंद करती हूँ। अरे यह नल भी चालू ही है क्या? अरे रुक रे भाई बंद करती हूँ तुझे, तेरी टप-टप बंद कर। हाँ! अब जरा रसोईघर ठीक दिख रहा है। हुश्श....

प्रसंग ३. नहीं चाहिए काट-छाँट

(पात्र : पेन्सिल, स्केल पट्टी, रबर, रफीक)

पेन्सिल – खर.....खर.....खर.....ऐ रफीक जरा ठीक से लिख ना।

रफीक – क्या हो गया दर्द हुआ क्या? मैं ऐसे ही लिखता हूँ ।

रबड़ – मिटा.....मिटा.....मिटा.....वह ऐसा ही है ठीक तरह से नहीं लिखता और लगातार मेरा उपयोग करता है।

पेन्सिल – और मुझे लेकर फिर से लिखता है।

पट्टी – मेरा उपयोग तो रेखा खींचने के लिए कम और मारामारी करने के लिए ही अधिक होता है।

रफीक – अच्छा बाबा, अब मैं अच्छी तरह से, सावधानीपूर्वक, सुवाच्य ही लिखूँगा फिर तो ठीक है?

तुम्हारी अन्य पाठ्यपुस्तकों के अथवा कहानी की पुस्तकों से ऐसे कुछ छोटे प्रसंग ढूँढ़कर उनका समूह-समूह में प्रस्तुतीकरण करो।

अपने समूह का प्रस्तुतीकरण करते समय अन्य सहपाठी मित्रों और शिक्षक द्‌वारा दी गई सूचनाओं पर विचार करके पुनः प्रस्तुतीकरण करो।

- अन्य पाठ्यपुस्तक अथवा कहानी की पुस्तक से प्रसंग चुनकर उसके प्रस्तुतीकरण का अभ्यास दें। उसी प्रकार प्रसंग तैयार करके विद्‌यार्थियों को प्रस्तुतीकरण का अवसर दें।
- प्रसंग प्रस्तुतीकरण का निरीक्षण करके सूचनाएँ दें और उनके अनुसार पुनः प्रस्तुतीकरण करवा लें।

CG - 1,3
C - 1.1, 3.2
LO03AE26,36

नीचे दिए गए चित्र देखकर ऋतुओं के नाम पहचानो और लिखो।

....

....

....

नीचे कुछ चित्र दिए हैं चित्र देखकर किस ऋतु में कौन-सी पोशाक का उपयोग करें, इसके लिए रेखा खींचकर जोड़ियाँ लगाओ।

वर्षाऋतु	शीतऋतु	ग्रीष्मऋतु

विविध ऋतुओं में उपयोग में लाई जाने वाली पोशाकों के संबंध में चर्चा करो।

- तीनों ऋतुओं की विशेषताओं और उनमें उपयोग में लाए जाने वाले कपड़ों के विषय में चर्चा करने के लिए कहें।

CG -4
C - 4.1
LO03AE40

प्रसंग एक – ऋतु अनेक

प्रसंग : पाठशाला की तैयारी करके सुबह पाठशाला में पैदल जाने वाला राजू। यद्‌यपि यह एक प्रसंग है तो भी अलग-अलग ऋतुओं में यह कैसे होगा यह अभिनय करके दिखाना है।

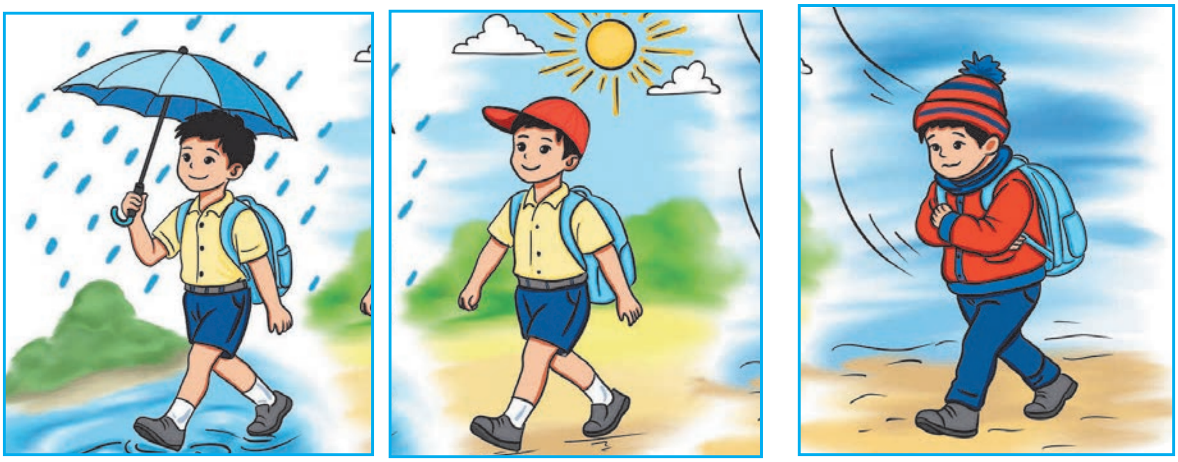

उपर्युक्त प्रसंग चूँकि एक ही है तो भी अब अलग-अलग ऋतुओं में वह कैसा घटित होगा यह अभिनय करके दिखाओ।

मेरी कृति

१. सुबह से रात तक घर में सुनाई देने वाली भिन्न-भिन्न पाँच आवाजों का अभ्यास करके कक्षा में मित्रों को सुनाओ। (जैसे- साइकिल की घंटी, मिक्सर की आवाज, कुकर की सीटी)

२. निरुपयोगी वस्तु का उपयोग करके एक वाद्‌य बनाओ। जैसे- एक प्लास्टिक की बोतल में थोड़े कंकड़ या मनके डालो। बोतल हिलाने पर होने वाली आवाज सुनो। 'शेकर' वाद्‌य तैयार होगा।

३. निम्नलिखित पात्रों की चलने की नकल करो।

(१) शान से चलने वाला सिंह (२) घबराया हुआ चूहा

(३) खेलकर थका हुआ लड़का (४) शिशु का रेंगना

४. प्रत्यक्ष वेशभूषा का उपयोग करके इस प्रसंग का समूह में प्रस्तुतीकरण करो।

(१) ग्रीष्मकाल – भरी दोपहरी में बाजार से सब्जी की थैलियाँ लेकर घर आना।

(२) वर्षाकाल – बारिश में बस की प्रतीक्षा करते हुए पेड़ के नीचे खड़े रहना।

(३) शीतकाल – रास्ते के किनारे बैठे कुत्ते के पिल्ले को घर लाना।

- कृति और हावभाव का सामंजस्य हो रहा है, इसकी पुष्टि करें।
- बच्चों को भावना और हावभाव व्यक्त करने पर बल देने के लिए कहें। उनके चेहरे के हावभाव संवाद के अनुसार योग्य हैं या नहीं, यह देखकर मार्गदर्शन करें।

CG -4
C - 4.1
LO03AE40

७. करें तैयारी नाटक की

नाटक की तैयारी आरंभ करने के लिए सबसे पहले चाहिए एक कथा या प्रसंग, जिसे हम 'स्टोरी' कहते हैं। उसके बाद उसमें लगने वाली सामग्री और पोशाक का विचार किया जाता है। प्रसंग प्रस्तुत करते समय वह अधिक अच्छा एवं स्वाभाविक लगे इसके लिए अभिनय तो सुंदर होना ही चाहिए पर उसके साथ-साथ उसके लिए लगने वाली सामग्री, वेशभूषा, संगीत भी महत्त्वपूर्ण होता है। आओ अब हम अगला प्रसंग पढ़ेंगे।

राजू पाठशाला से दौड़ते हुए ही घर आया उसने बस्ता रखा, डिब्बे की थैली तो फेंक ही दी, क्योंकि आज उसका क्रिकेट मैच था। उसने घर में रखी बैट और टोपी हाथ में ली और दीदी से बोला, "मैं चला दीदी।" इसपर उसकी दीदी बोली, ''अरे अभी तो घर में आया है और आते ही कहाँ चला?'' इसपर राजू बोला,"हमारा क्रिकेट मैच है। क्या मुझे यह पानी की बोतल भरकर दोगी?" इसपर दीदी बोली,"अरे बाहर बारिश का वातावरण बन गया है। देख कितना अँधेरा हो गया है। तू घर में ही बैठ, नहीं तो माँ आने पर गुस्सा होगी।" राजू बोला,''हमारा मैच पहले ही तय हो चुका है। बरसात बाद में आई। उसके कारण हम अपना मैच रद्द नहीं कर सकते।'' दीदी हँसे या गुस्सा हो समझ नहीं पा रही थी, इसपर वह बोली,"ठीक है, पर पाठशाला का गणवेश तो बदल ले और यह टी-शर्ट पहनकर जा। और हाँ यह ले छाता बारिश आई तो लगेगा।" "अरे दीदी मैं बैटिंग करते हुए बैट छोड़कर छाता से बॉल मारूँ क्या? तू भी ना..." "ये देख तुझे यह छाता तो ले जाना ही पड़ेगा।" दीदी गुस्से से बोली। इतने में बारिश गिरने की आवाज आने लगी। इसपर दीदी बोली,"देख बारिश शुरू हो गई, अब उसके खुलने तक कुछ खा लो। तुझे खेलने के लिए थोड़ी ताकत मिलेगी।"

यह प्रसंग तुमने ध्यानपूर्वक पढ़ा ही होगा। अब इस प्रसंग को प्रस्तुत करने से पहले आओ कुछ पूर्व तैयारी करो।

*** आओ, प्रसंग प्रस्तुत करने के लिए उपयोग में आने वाली सामग्री की सूची बनाओ –**

....

....

....

यह सामग्री अपने परिसर में उपलब्ध हो तो उसे एकत्रित कर अभ्यास करो।

- प्रसंग का योग्य आवाज के चढ़ाव-उतार के साथ वाचन करवा लें।
- प्रसंगानुरूप आवश्यक सामग्री की सूची बनवा लें।

CG- 2
C- 2.1
Lo-03AE29

वैकल्पिक सामग्री का उपयोग

कुछ सामग्री तुम्हारी पाठशाला एवं परिसर में उपलब्ध न हो तो उसके लिए वैकल्पिक सामग्री का उपयोग करो। जैसे–

इस प्रकार एक ही वस्तु का कल्पनाशीलता से भिन्न–भिन्न प्रकार के उपयोग किए जा सकते हैं।

सामग्री निर्मिति

कभी–कभी अपने परिसर में उपलब्ध वस्तुओं में थोड़ा–सा परिवर्तन करके भी उपयोगी सामग्री की निर्मिति की जा सकती है। जैसे–

कुर्सी से सिंहासन

- बच्चों को परिचित वस्तु दिखाकर उस वस्तु की कल्पनाशीलता से नाटक के प्रस्तुतीकरण में कैसे उपयोग किया जा सकेगा, इसकी कृति करवा लें।

CG- 2,3
C- 2.1, 3.1
Lo-03AE30
03AE34

ऐसी वैकल्पिक अथवा तैयार सामग्री के उपयोग से दिए गए प्रसंगों के प्रस्तुतीकरण का अभ्यास करो। अपने अन्य समूह के मित्रों और शिक्षकों को दिखाओ। शिक्षक तथा मित्रों द्वारा सुझाए गए सुधारों को सुनकर प्रस्तुति में आवश्यक परिवर्तन करके पुनः नया प्रस्तुतीकरण करो।

वेशभूषा

वेशभूषा अर्थात पोशाक। पिछले प्रसंग में राजू और उसकी दीदी का प्रसंग प्रस्तुत करने के लिए उन्हें कौन-सा पोशाक पहनना चाहिए, आओ इसकी सूची बनाओ।

राजू	दीदी
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

- एक-दूसरे के सहयोग से यह वेशभूषा जमा करो।
- वेशभूषा सहित अभ्यास करो।
- अपने अन्य मित्रों को यह अभ्यास दिखाओ तथा उन्होंने कुछ अच्छे परिवर्तन सुझाए तो वैसे परिवर्तन के साथ पुनः प्रस्तुतीकरण करो।

चलो खेल खेलें : तालियों की बारिश

एक विद्यार्थी को समूह के सामने खड़े रहकर अँगुलियों से संख्या का संकेत दिखाने के लिए कहो।

अन्य विद्यार्थी संख्या के संकेत के अनुसार ताली बजाएँगे। एक अँगुली की एक ताली, फिर दो अँगुलियों की दो तालियाँ, धीरे-धीरे अँगुलियों की संख्या बढ़ाकर दोनों हाथों की ताली बजती रहेगी। तालियों की आवाज बारिश के बढ़ने की आवाज की तरह सुनाई देगी।

अब पुनः उल्टे क्रम से अँगुली कम करते हुए अंत में फिर एक अँगुली की एक ताली बजेगी अर्थात बारिश कम होकर बंद होने जैसा लगेगा। खेल की रोचकता बढ़ाने के लिए सूचना के अनुसार अँगुलियों की संख्या कम अधिक करें।

इस खेल का उपयोग राजू और दीदी के प्रसंग के समय बारिश की आवाज निकालने के लिए करो।

- बच्चों की कल्पनाशीलता को बढ़ावा देने के लिए विविध प्रसंगों का कथा वाचन एवं प्रस्तुतीकरण करवा लें। उसके लिए आवश्यक वेशभूषा चयन करने का अवसर दें।
- 'तालियों की बारिश' कृति के लिए बीच-बीच में कम-अधिक अंगुली दिखाएँ और बारिश के बदलने की आवाज का अनुभव दें।

CG- 2
C- 2.1
Lo-03AE32
03AE33
03AE36
03AE37

मेरी कृति

१. थोड़ा विचार करो और बताओ कि इस कंपास बॉक्स का उपयोगी वस्तु के रूप में कहाँ–कहाँ उपयोग किया जा सकता है ?

....

....

....

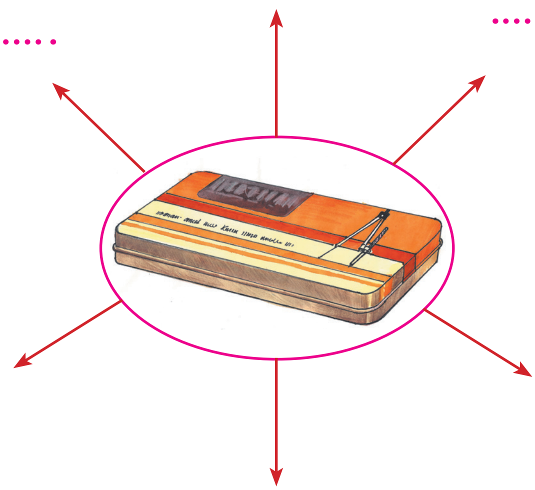

....

....

....

२. तुम्हारी कक्षा के पाठों से या अन्य विषय की पाठ्यपुस्तक से अथवा कहानी की पुस्तक से एक प्रसंग चुनो। चयनित प्रसंग के प्रस्तुतीकरण हेतु निम्नलिखित मुद्दों पर विचार करो।

- पात्रों का चयन
- सामग्री का चयन
- वेशभूषा का चयन
- नाट्यगृह कक्ष की रचना
- प्रस्तुतीकरण

- बच्चों की सहभागिता और कल्पनाशीलता को बढ़ावा दें।
- प्रसंग प्रस्तुत करते समय योग्य मार्गदर्शन करें।

CG- 2
C- 2.1
Lo-03AE32
03AE33
03AE36
03AE37

८. चलो, रंगमंच पर

अभी तक तुमने नाटक की सारी पूर्व तैयारी कर ली पर तुम्हारे सामने प्रश्न उपस्थित हुआ होगा कि यह नाटक प्रस्तुत कहाँ करें। एक कक्षा में ऐसा ही कुछ हुआ? आओ अगले प्रसंग में वह देखो।

प्राची – सर, नाटक की सारी तैयारियाँ हो गईं पर नाटक प्रस्तुत कहाँ करना है?

सर – क्यों, क्या हुआ?

शबाना – पाठशाला के सभागृह में अभिभावक सभा की तैयारी चल रही है और मैदान का मंच धूप से तप रहा है। पैर जलेंगे।

सर – अरे, फिर अपनी कक्षा में ही नाटक प्रस्तुत करते हैं ना, कारण अपने विद्‍यार्थी मित्र ही अपने दर्शक हैं। वे इस कक्षा में आराम से बैठेंगे।

राजू – सर, हम नाटक श्यामपट्‍ट के सामने खड़े रहकर करेंगे ना?

सर – हाँ...

राजू – तो फिर उस श्यामपट्‍ट पर नाटक के अनुकूल चित्र बनाएँ क्या?

सर – हाँ बनाओ। लेकिन वह टेबल थोड़ा बगल में रखो तो नाटक प्रस्तुत करने के लिए पर्याप्त जगह मिलेगी।

प्राची – सर, ये बेंचें थोड़ी पीछे सरकाएँ क्या? संगीत देने वाले बच्चे यहाँ बैठ जाएँगे।

शबाना – हाँ! उनको उनकी सामग्री रखने के लिए जगह लगेगी ना।

सर – चलेगा। लेकिन नाटक देखने वाले अपने विद्‍यार्थी उनकी जगह पर बैठकर पूरा नाटक देख सकें, इस प्रकार बेंचें रखनी पड़ेंगी।

जॉन – पर नाटक में उपयोग में लाई जाने वाली सामग्री सामने रख देने पर सबको पहले ही दिख जाएगी ना!

राजू – सर हम उसे कैसे ढँकें ताकि नाटक आरंभ होने से पूर्व वह किसी को भी दिखाई न दे।

अक्षरा – सर, हमें भी नाटक में लीजिए ना।

सर – अरे अक्षरा, तुम्हारे जैसे और कई विद्‍यार्थी भी नाटक में सहभाग लेने वाले हैं । तुम, भी उनके साथ सहभागी हो जाओ।

सर – तुम्हारी भूमिका है परदे की।

- दिए गए संवाद का वाचन करवा लें और प्रत्येक पात्र, बच्चों में बाँटकर उनसे संवाद बुलवा लें।

CG - 3
C- 3.2
Lo- 03AE35
03AE38

अक्षरा – क्या! परदे की?

सर – हाँ, बच्चों के नाटक का परदा भी बच्चों का ही होता है। अब तैयार है अपनी कक्षा का नाट्यगृह कक्ष।

सभी – क्या नाट्यगृह कक्ष?

सर – हाँ, इसे ही 'कक्षा नाट्यगृह' कहते हैं।

शबाना – लेकिन सर नाटक शुरू होने से पहले अपनी सामग्री और पीछे का सजाया हुआ श्यामपट्ट तो किसी को दिखना नहीं चाहिए ना! उसे कैसे ढँकें !

सर – इसीलिए ही तैयार करना है बच्चों की शरीराकृति का परदा। रंगमंच के सामने की ओर ऐसे बच्चे पास–पास खड़े करेंगे यानी दर्शकों को कुछ भी नहीं दिखेगा। लेकिन नाटक शुरू होने से पूर्व बच्चे धीर–धीरे दायीं और बायीं ओर सरकेंगे। अब प्रस्तुतीकरण का भाग दिखाई देने लगेगा और नाटक शुरू हो जाएगा।

मानवी शरीराकृति का परदा

बंद परदा

परदा खुलते समय

- प्रस्तुतीकरण करते समय पर्याप्त संख्या का विचार करके अलग–अलग समूह तैयार करें।
- प्रत्येक विद्यार्थी को मौका मिले इसका ध्यान रखें।

CG – 3
C– 3.2
Lo– 03AE35
03AE38

संगत संगीत की

कोई प्रसंग प्रस्तुत करते समय दर्शकों को और अधिक मनोरंजक लगे इसके लिए प्रसंग को संगीत की संगत दी जा सकती है। यह संगीत भी अपने परिसर की अनेक वस्तुओं से निर्माण किया जा सकता है।

ऐसी अनेक वस्तुओं से नाटक के लिए आवश्यक ध्वनि निर्माण करके संगीत की संगत दे सकेंगे।

अपने भीतर भी छिपा है संगीत

- मुँह से भिन्न-भिन्न आवाज निकाल सकते हैं।
- हाथों और पैरों से ताल देकर ध्वनि निर्माण कर सकते हैं।

प्रस्तुतीकरण में संगीत की संगत देने वाले विद्यार्थी

क्या तुम जानते हो?

भारतीय नाट्य शास्त्र की नींव भरत मुनि ने रखी थी। मराठी रंगभूमि के इतिहास में 'संगीत शाकुंतल' को पहला संगीत नाटक माना जाता है।

चलो करके देखें

कक्षा के विद्यार्थियों के कुछ समूह बनाएँ।

पहला समूह – आओ अपनी पाठ्यपुस्तक की कविता/प्रसंग हावभाव के साथ प्रस्तुत करो।

दूसरा समूह – प्रस्तुतीकरण के चलते दूसरा समूह मंजीरा अथवा उपलब्ध सामग्री से ताल निर्माण करेगा।

संगीत देने हेतु –

- परिसर में उपलब्ध होने वाली सामग्री जमा करके उनका संग्रह करवाएँ।
- जमा की गई सामग्री से संगीत निर्माण करने के अवसर दें।

CG -3
C-3.2
Lo- 03AE37

करें उपयोग प्रकाश का

हम जो प्रसंग प्रस्तुत करने वाले हैं वह कौन-से समय का है, यह देखते हैं। अर्थात सुबह, दोपहर, रात इस तरह दिन का कौन-सा प्रहर है, इसपर ध्यान देंगे। इससे उस तरह का उजाला कक्षा के नाट्यगृह कक्ष में कर पाएँगे। आओ, देखें यह कैसे होगा।

हम सबको प्रकाश देनेवाला है।
इसी का उपयोग यदि हमने अपनी प्रकाश योजना में किया
तो कितना आनंद आएगा। अपनी कक्षा में है और
उन्हें बंद करके अंधकार किया तो हो गई
अब धीरे-धीरे सुबह होते हुए दिखाना हो
तो धीरे-धीरे खोलो और
पर सारे मत खोलो। क्योंकि सुबह मद्धिम प्रकाश
होता है। उसके बाद पर्याप्त उजाला करो तो हो जाएगी
दोपहर। आने पर भी उजाला कम ही होता
है, ठीक! कक्षा में होती है लाइट अथवा
इसका उपयोग भी सुबह, दोपहर तथा रात
दिखाते समय चालू-बंद करके दिखा पाएँगे।
अब हमारे नाटक को मिलेगा इन सबका साथ। जिससे
उसके दृश्य लगने लगेंगे बिलकुल वास्तविक। प्रकाश
योजना का अनुभव हमें कर जाएगा आनंदित।

- प्रस्तुतीकरण के अभ्यास के समय बच्चे प्राकृतिक प्रकाश का उपयोग कर पाएँ इसके लिए दरवाजे खिड़कियों को खोलने बंद करने का अभ्यास करवा लें। इससे उचित समय कृति का समन्वय कर पाना संभव हो पाएगा।

CG -4
C - 4.1
LO03AE39

धारण करें वेशभूषा

किसी प्रस्तुतीकरण से पहले हम उसके लिए भिन्न-भिन्न तैयारी करते हैं। उसका अभ्यास करते हैं, फिर जो भूमिका करने वाले हैं उस तरह की पोशाक पहनकर प्रस्तुतीकरण करते हैं। यह देखने वाले मित्र सहेलियों को वह वास्तविक लगने लगता है। पोशाक का अर्थ ही वेशभूषा होता है। उसका चयन करने से पूर्व समूह में चर्चा करके ही उसे तय करो। फिर देखें कि वह अपने नाप की है या नहीं और अब अभ्यास की शुरुआत करो। वेशभूषा धारण करके अभ्यास किया तो पोशाक पहनकर चलने का, बैठने का, उठने का अभ्यास हो जाता है तथा प्रस्तुतीकरण के समय अपना ध्यान बार-बार उसकी ओर नहीं जाता और प्रस्तुतीकरण बहुत बढ़िया होता है।

- प्रस्तुतीकरण में पात्रों के साथ वेशभूषा का अभ्यास करवा लें।

CG -2, 3
C-3.1, 3.2
Lo- 03AE35

चलो, अभ्यास करें

आओ अपने चयनित प्रसंगों या नाटकों के प्रस्तुतीकरण का कक्षा में अभ्यास करो। इसके लिए कक्षा की बैठक व्यवस्था बदलें और बच्चों को प्रस्तुतीकरण के लिए जगह दो।

- आओ अभ्यास करते समय प्रसंग के अनुरूप प्रकाश योजना का उपयोग करो।
- अभ्यास करते समय प्रस्तुतीकरण के लिए आवश्यक सामग्री जुटाकर उनका उपयोग आरंभ करो।
- यदि उचित वाद्य न हों तो उपलब्ध सामग्री का संगीत देने के लिए उपयोग करो।
- नाटक के पात्रों की वेशभूषा निर्धारित करें और वेशभूषा के साथ अभ्यास करो।
- परदे तैयार करने के लिए अपने सहयोगियों की सहायता लेकर अभ्यास आरंभ करो।
- आओ बढ़िया प्रस्तुतीकरण करने के लिए तैयार हो जाओ।

प्रस्तुतीकरण –

पर्याप्त अभ्यास के बाद नाट्यगृह कक्ष की रचना करके अभ्यास के अनुसार वेशभूषा, सामग्री, संगीत, प्रकाश योजना जैसे तकनीकी साधनों का सुयोग्य उपयोग करके उत्तम प्रस्तुतीकरण करो।

प्रस्तुतीकरण के बाद अन्य विद्यार्थियों, शिक्षकों द्‌वारा दी गई सूचनाओं का विचार करके पुनः प्रस्तुतीकरण करो।

मेरी कृति

१. पाठ्‌यपुस्तक अथवा कहानी की पुस्तक से एक प्रसंग चुनो प्रस्तुतीकरण के लिए –

- पात्रों का चयन
- आवश्यक सामग्री
- ध्वनि
- प्रकाश योजना
- वेशभूषा

इन सभी तकनीकी बातों का उपयोग नियोजनपूर्वक करके समूह में प्रस्तुतीकरण करो।

- प्रस्तुतीकरण के लिए पहले अभ्यास किया हुआ अथवा पाठ्‌यपुस्तक, कहानी की पुस्तक का आयु के अनुरूप कोई एक प्रसंग या एकांकी चुनने का अवसर दें।

CG –2, 3
C–3.1, 3.2
Lo– 03AE33
03AE35
03AE38

धा धीं धीं धा
संगीत

९. आओ, सब मिलकर गाएँ !

हम सभी को गाने गाना या सुनना बहुत अच्छा लगता है, सही है ना! लेकिन तुम्हें पता है क्या? जब हम सब इकट्ठे गाते हैं तो उस गाने का आनंद कुछ और ही होता है।

आज हम सब ऐसे ही कुछ अच्छे गानों का परिचय प्राप्त करने वाले हैं। चलो, फिर सुरों के सुंदर सफर पर चलें और गाएँ.....

राज्यगीत

राष्ट्रीय एकात्मता की भावना बढाने के लिए एवं महाराष्ट्र का गुनगान करने के लिए राज्यगीत गाया जाता है। इस गीत में महाराष्ट्र के गौरवशाली इतिहास का वर्णन किया है। राज्यगीत का आदर रखने के लिए सावधान की स्थिति में खड़े होकर ही राज्यगीत का गायन किया जाता है।

राज्यगीत

जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा॥धृ॥
भिती न आम्हा तुझी मुळी ही गडगडणाऱ्या नभा
अस्मानाच्या सुलतानीला जबाब देती जिभा
सह्याद्रीचा सिंह गर्जतो शिव शंभू राजा
दरी दरीतून नाद गुंजला महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा ॥१॥
काळ्या छातीवरी कोरली, अभिमानाची लेणी
पोलादी मनगटे खेळती, खेळ जीवघेणी
दारिद्र्याच्या उन्हात शिजला
निढळाच्या घामाने भिजला
देश गौरवासाठी झिजला
दिल्लीचे ही तख्त राखितो, महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा ॥२॥

गीत – राजा बढे

- सुर-ताल के साथ राज्यगीत का अभ्यास करवा लें।

CG - 1
C - 1.1
LO 03AE43/57

श्लोक – अपने दिन की शुरुआत आनंद के साथ करने के लिए हम ईश्वर के सामने श्लोक बोलते हैं। इस कारण हमपर अच्छे संस्कार पड़ते हैं। भोजन से पूर्व हम श्लोक बोलते हैं।

वदनी कवळ घेता नाम घ्या मातृभूचे ।
सहज स्मरण होते आपुल्या बांधवांचे ।
कृषिबल कृषिकर्मी रावती दिवस रात्र ।
श्रमिक श्रम करोनी वस्तू या निर्मितात ।
स्मरण करून त्यांचे अन्नसेवा खुशाल ।
उदरभरण आहे चित्त होण्या विशाल॥

भावार्थ

हो निवाला मुँह में मातृभू का नाम आए।
सहज स्मरण अपने बंधुओं का हो जाए।
परिश्रम से किसान के अनाज उग पाए।
निर्माण श्रमिकों का वस्तुएँ हमें दे जाए।
याद कर अन्नसेवा उनकी भोजन लीजिए।
उदरभरण के साथ ही उदार मन कीजिए॥

पढ़ो और बोलो

हम अपने दिन और अध्ययन की शुरुआत प्रार्थना से करते हैं इस कारण हमारा मन प्रसन्न रहता है। आओ अब हम अगली प्रार्थना एक साथ मिलकर गाएँ।

प्रार्थना

प्रणाम प्रभुजी तुला आमुचा
प्रणाम प्रभुजी तुला ॥धृ॥

सूर्य चंद्र जणू दिवे विजेचे,
लटकती तारे कसे मजेचे
वीज नभातुनी तुला मिळे का ॥ १ ॥

पाऊस पडुनी शेते पिकती,
मातीमधुनी निघती मोती
सांभाळिसी मुलाफुलांना ॥ २ ॥

शक्ती, बुद्धी आम्हा द्यावी,
देश आमुचा सुखात ठेवी
हेच मागणे तुला आमुचे ॥ ३ ॥

भावार्थ

हे प्रभुजी, तुम्हें प्रणाम हमारा
हे प्रभुजी, तुम्हें प्रणाम हमारा॥धृ॥
सूर्य चंद्रमा मानो बिजली के दीप
लटके तारे आनंदित उनके समीप
क्या पा जाते यह बिजली तुम आकाश से ।।१।।
बारिश होने पर खेतों में फसलें होती हैं,
ज्यों मिट्टी से निकल रहे होते मोती हैं
तुम बच्चों और फूलों की रक्षा करते हो ।।२।।
शक्ति और बुद्धि का तुम देना हमको दान
और देश को सारे सुख करना सदा प्रदान
सारे मिल हम तुमसे यही प्रार्थना करते।।३।।

- उपलब्ध साधनों की सहायता से श्लोक और प्रार्थना का सुर – ताल में अभ्यास करवा लें।

CG – 1
C – 1.1
LO 03AE44

पाठशाला का आरंभ हमेशा प्रार्थना से ही होती है। उसमें हम राष्ट्रगान, राज्यगीत, श्लोक, प्रार्थना, समूह गीत एकत्रित होकर बोलते हैं। इस कारण मन एकाग्र होकर प्रसन्न रहता है।

चलो, फिर सब लोग मिलकर निम्नलिखित प्रार्थना सुनकर गाएँ।

प्रार्थना गीत

चराचरांच्या सर्व शक्तींनो
ही आमुची प्रार्थना ।
करा अम्हांला निर्भय निर्मळ ।
उजळू द्या जीवना ।।धृ।।
विद्येवर निष्ठा ठेवू या।
उद्योगाची कास धरू या ।
साहस शिकवा संयम शिकवा ।
घडवू द्या जीवना ॥१॥
नको कधी तो गर्व यशाचा।
नको कधी आळस कामाचा ।
द्वेष कुणाचा नको कधीही।
फुलवू सहजीवना ॥२॥
रक्षण करणे या सृष्टीचे।
वाटो आम्हा अतिमोलाचे।
ममतेची आणिक समतेची ।
द्या आम्हां प्रेरणा ॥३॥

भावार्थ

जगत की सारी शक्तियों
यही हमारी प्रार्थना है।
हमें निर्मल निर्भय करो,
उज्ज्वल जीवन दो।।धृ।।
विद्या पर रखें निष्ठा
उद्योग की लगन दो।
साहस सिखाओ, संयम सिखाओ,
गढ़ने यह जीवन दो ।।१।।
कभी यश का घमंड न हो,
कभी काम का आलस न हो।
किसी से द्वेष न हो,
खिलने सहजीवन दो ।।२।।
इस सृष्टि की रक्षा करना
लगे अनमोल हमें सदा
ममता और समता की
हमें प्रेरणा दो।।३।।

ध्यान में रखो :

प्रार्थना जोर से चिल्लाकर नहीं बोली जाती वह धीरे-धीरे मधुर एवं भावपूर्ण सुर में गाई जाती है।

- प्रार्थना लय में बुलवा लें और उसपर चर्चा करें।
- गीत की धुन शब्दोच्चार स्वर और ताल के संबंध में मार्गदर्शन करें।

CG - 1
C -1.2
lo03AE45/46/57

बालगीत

क्या बालगीत गाते हुए तुमने कभी नृत्य किया है? किस बालगीत पर तुम्हें नाचना अच्छा लगता है? चलो फिर हम भी प्रकृति के रंग में रँग जाएँ और इस गीत के माध्यम से पक्षियों की चहचहाहट, पानी की कल-कल अभिनय के साथ प्रस्तुत करें!

मला न कळते सारेगम
गाण्याचे संगीत
मी गातो बडबडगीत
बडबड बडबड बडबड गीत॥धृ॥

जमवून सारी वेडी पोरं
टपटप पाडून कैऱ्या-बोर
खुशाल बसतो फांदीवरती
नाही कुणाला भीत॥१॥

ओढा गाई झुळझुळ गाणी
कोकिळ गाई अमृतवाणी
आम्ही गातो त्यांच्यासंगे
तीही होती धीट॥२॥

कधी पाखरे होऊन फिरतो
कधी आईच्या कुशीत शिरतो
बालपणीचा काळ सुखाचा
हीच आमुची रीत॥३॥

कवी - जगदीश खेबुडकर

भावार्थ

मुझे न समझे सारेगम,
गानों का संगीत।
मैं गाता हूँ बड़बड़ गीत,
बड़बड़, बड़बड़, बड़बड़ गीत ।।धृ।।

करूँ इकट्ठा सारे नटखट बच्चे
टप -टप तोड़ूँ बेर, आम कच्चे
निश्चिंत होकर डाल पर बैठूँ
नहीं किसी से मैं भयभीत॥ १ ॥

झरना झर-झर गीत गाए
कोयल अमृत वाणी गाए
हम भी गाते संग में उनके
हम हैं इतने ढीट ।।२।।

कभी पक्षी बनकर घूमें
कभी माँ की गोद में झूमें
बचपन बड़ा सुखद होता है,
है यही हमारी रीत॥ ३ ॥

- उपलब्ध साधनों का उपयोग करके विद्यार्थियों से सुर ताल में अभिनय के साथ गीत का गायन करवा लें।
- गीत गायन में प्रत्येक विद्यार्थी को सहभागी कराएँ।

CG - 2
C - 2.1
LO03AE
47/57

बालगीत

टप टप टप थेंब वाजती, गाणे गातो वारा
विसरा आता पाटी-पुस्तक
मजेत झेला गारा पाऊस आला
रे पाऊस आला ॥धृ॥

घराघरावर कौलारांवर आले झिमझिम पाणी
गुणगुणती झाडांची पाने हिरवीहिरवी गाणी
अवतीभवती भिजून माती सुगंध भरला सारा ॥१॥

काळ्याभोर ढगांना झाली कोसळण्याची घाई
इवले इवले पंख फुलवुनी गाते ही चिऊताई
आनंदे हंबरती गाई समोर विसरून चारा ॥२॥

गीत - मंगेश पाडगांवकर

भावार्थ

टप-टप-टप बूँदें बजती, गीत हवा गाती है
भूल जाओ अब पाटी-पुस्तक
मज़े से ओले झेलो,
देखो बारिश आई रे।।धृ।।

घर-घर की खपरैलों पर रिमझिम बरसे पानी।
गुनगुनाती हरी पत्तियाँ गीत की धुन सुहानी
भीगी मिट्‌टी ने सुगंध सोंधी फैलाई रे।।१।।

काले बादल बरसने को हैं आतुर
पंख फैलाए चिड़िया उड़ती फुर
आनंद में गायें भी चारा छोड़ रँभाई रे।।२।।

- प्रस्तुत बालगीत तालियों के ताल पर सुर में गाने का अभ्यास करो।
- यह बालगीत गाते समय तुम्हें कैसा लगा, इसके संबंध में अपने सहपाठियों के साथ समूह में चर्चा करो।
- इस बालगीत की कौन-सी पंक्तियाँ तुम्हें पसंद आईं, इस विषय पर अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करो।

- तालियाँ बजाकर ताल और धुन में बालगीत गवा लें।
- बालगीत के विषय में क्या लगा, कौन-सी पंक्तियाँ अच्छी लगीं, इसपर चर्चा कराएँ।

CG - 1/2
C -1.1/2.2
LO 03AE
44/45/ 57

अभिनयगीत :

केवल गीत न गाते हुए उसके शब्दों के अर्थ ध्यान में रखकर, आओ अभिनय के साथ गीत को प्रस्तुत करें

छोटी छोटी आम्ही बालके
मौज नि गंमत करू।
झाडे वेली फुले पाखरे
यांची मैत्री धरू॥

करू नकला आवाज काढू
पक्षी अन् प्राण्यांचे ।
गाऊ गाणे खेळ मांडू
मैदानावरचे।

बागडताना आनंदाने
अभ्यासा सावरू॥
छोटी छोटी आम्ही बालके
मौज नि गंमत करू।

कवी– राजेंद्र अत्रे

भावार्थ

छोटे–छोटे हैं हम बच्चे,
मौज–मस्ती हम करेंगे।
पेड़, लताएँ, फूल और पंछी,
इनसे मित्रता हम करेंगे॥

नकल करेंगे, आवाज निकालेंगे,
पक्षियों और पशुओं की।
गीत गाएँगे, खेल रचेंगे
मैदान आबाद हम करेंगे।।

दौड़ते–कूदते आनंद से,
पढ़ाई भी सँवारेंगे।
छोटे–छोटे हम हैं बच्चे,
मौज–मस्ती हम करेंगे ॥

ध्यान में रखो :
बालगीतों में बालकों की पसंद, प्रकृति, पशु–पक्षी, खेल–खिलौने आदि का वर्णन होता है।

- अभिनय गीत का अभ्यास सुर–ताल और अभिनय के साथ करवा लें।

CG–2
C–2.1
LO 03AE47/57

देशभक्तिपरक समूहगीत

हम भारत देश में रहते हैं। इस देश का हमें अभिमान होना ही चाहिए। इस देश के सैनिक सीमा पर तैनात रहकर सदैव देश की रक्षा करते हैं। इसीलिए हम सब सुरक्षित रह सकते हैं। आओ, अब हम सारे लोग मिलकर आगे का देशभक्तिपरक गीत गाएँ।

चला चला चला, पुढे पुढे चला
देशरक्षणा चला, ना मागुती वळा
बालवीर हे, सिंह छातीचे
ताठ मान ही, हात बाजीचे ॥१॥

हिमालयावरी, चढून जाऊ या
ध्वज तिरंगी हा, सदैव रक्षुया ॥ २॥

हाक मारिता, कोणी त्या क्षणी
रणात ठाकुया, शस्त्र घेऊनी ॥३॥

भिती ही मनी आमुच्या नसे
विजय शेवटी आपुला असे ॥ ४ ॥

कवी – प्रदीप

भावार्थ

चलो-चलो-चलो, आगे-आगे चलो,
देशरक्षा हेतु चलो, पीछे न मुड़ो।
बालवीर हम, सिंह-सा सीना
ऊँचा मस्तक, बलशाली भुजाएँ ॥१॥

चढ़ें हिमालय पर हम हर्षित
रक्षा में तिरंगे के सदा समर्पित॥२॥

कोई जब पुकारे, उसी क्षण में
लेकर हम हथियार कूदें रण में॥३॥

हमारे मन में कभी न कोई भय हो
अंत में सदा हमारी ही विजय हो ॥४॥

- **निम्नलिखित में से अपनी पसंद का एक समूहगीत सुनकर अभ्यास करो।**
  - मंगल देशा पवित्र देशा...
  - बल सागर भारत होवो...
  - सारे जहाँ से अच्छा...
  - हिंद देश के निवासी...

ध्यान में रखो :
जब अनेक व्यक्ति मिलकर सुर ताल में गाते हैं तो उसे समूहगीत कहते हैं।

- देशभक्तिपरक गीतों का सुर-ताल में अभ्यास करवा लें।

CG-3
C - 3.2
LO 03AE57

मेरी कृति

१) निम्नलिखित आकृति में पाठ में आए गीतों के विविध प्रकार लिखो।

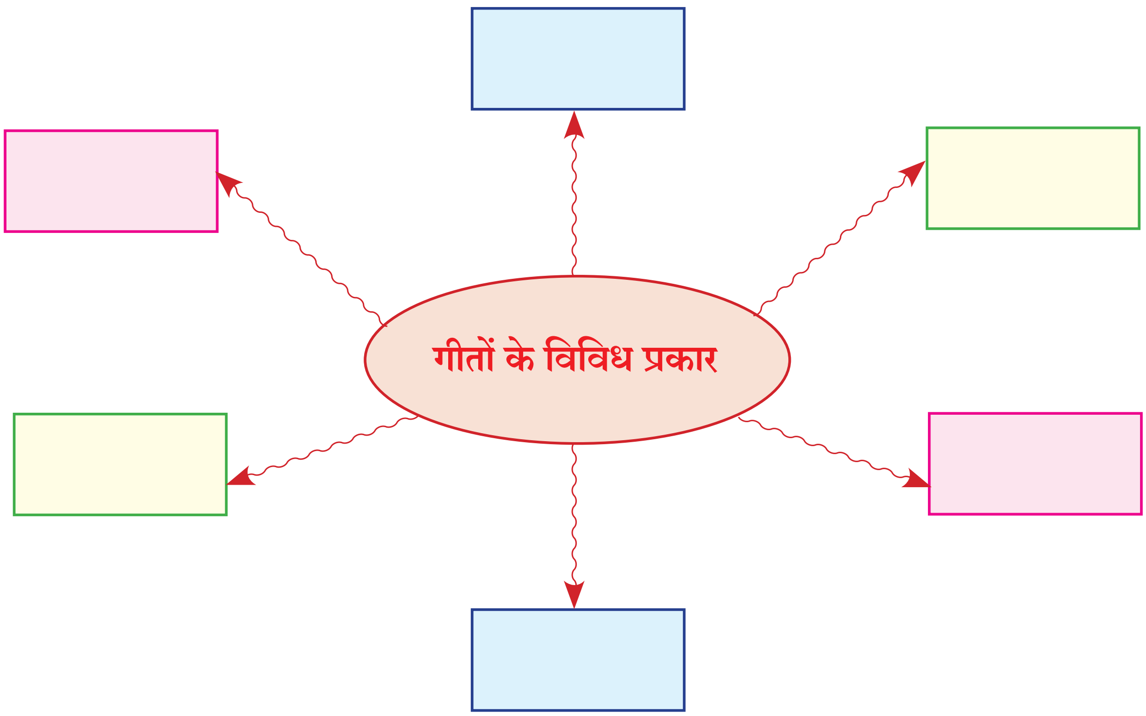

२) पाठ में पढ़ा कौन-सा गीत तुम्हें बहुत पसंद आया, उसकी चार पंक्तियाँ लिखो।

....

....

....

....

३) पाठ में पढ़े किसी भी एक गीत का अभ्यास करके गायन करो।

- पाठ में दिए गए गीतों का पर्याप्त अभ्यास कराके समूह-समूह में प्रस्तुतीकरण का अवसर दें।
- इस तरह के अन्य गीत विद्यार्थियों से गँवा लें।

१०. गीत एक का, गीत दोनों का

निम्नांकित सभी चित्रों का निरीक्षण करो।

१.

२.

३.

४.

५.

६.

उपर्युक्त सभी चित्रों का निरीक्षण करके तुम्हें उनमें क्या समानता या भिन्नता दिखाई दे रही है, अपनी कक्षा के मित्रों/सहेलियों को बताओ।

तुम्हें एक जैसे लगने वाले चित्रों के क्रमांक नीचे दिए गए चौखट में लिखो।

- एकल और युगल गीतों की जानकारी दें।

CG - 2
C - 2.1
LO03AE48

जब कोई व्यक्ति अकेला ही गीत गाए तो उसे **'एकल गीत'** कहा जाता है। इसके विपरीत जब दो व्यक्ति मिलकर सुर में सुर मिलाकर गाते हैं तो उसे **'युगल गीत'** कहते हैं।

तो चलो आज हम एकल और युगल गीत गाकर गाने का आनंद लें

एकल गीत :

दिया गया गीत पढ़ो और गाओ। तुम्हें ये गीत अकेले भी गाना आना चाहिए। इसके लिए गाने सुनकर उनका खूब अभ्यास करो।

आनंदाचे गाणे

चला चला गाऊ चला आनंदाचे गाणे
आनंदाचे गाणे गाऊ आनंदाचे गाणे ॥धृ॥
फुलपाखरांचे पंख घेऊनी
उडू बागडू धुंद होऊनी
वाऱ्यासंगे नाचू चला छेडू या तराणे ॥१॥
फुलाफुलांचे रंग घेऊ या
झाडे जशी उंच तसे उंच होऊ या
हिरवे हिरवे रान सारे हिरवी हिरवी पाने ॥२॥
आभाळात काहीतरी नवे पाहू या
नवे नवे पाहता नवे शोधू या
गीत नवे शब्द नवे गाऊ या नव्याने ॥३॥

कवी – अच्युत ठाकूर

भावार्थ

आओ, आओ गाएँ आओ, आनंद का गाना
आनंद का गाना गाएँ, आनंद का गाना ।।धृ।।
तितलियों के पंख लेकर,
उड़ें, खेलें, मस्त होकर,
संग हवा के नाचें आओ, छेड़ें मधुर तराना ॥१॥
फूलों के रंग अपनाएँ,
पेड़ों-से ऊँचे बन जाएँ,
हरा-भरा जंगल सारा है और पत्तों का बाना।।२।।
आकाश में कुछ देखें नया,
नया देखकर खोजें नया,
गीत नया, शब्द नये, अंदाज नया अपनाना।।३।।

- उपलब्ध साधनों का उपयोग करके सुर-ताल में एकल गीत के गायन का अभ्यास करवा लें।

बालगीत

ससा तो ससा की कापूस जसा
त्याने कासवाशी पैज लाविली
वेगवेगे धावू नि डोंगरावर जाऊ
ही शर्यत रे अपुली

चुरुचुरु बोले तो तुरुतुरु चाले
नि कासवाने अंग हलविले
ससा जाई पुढे नि झाडामागे दडे
ते कासवाने हळू पाहियले
वाटेत थांबले ना, कोणाशी बोलले ना
चालले लुटुलुटु पाही...ससा !

हिरवी हिरवी पाने नि पाखरांचे गाणे
हे पाहुनिया ससा हरखला
खाई गार चारा, घे फांदीचा निवारा
तो हळूहळू तेथे पेंगुळला
मिटले वेडे भोळे, गुंजेचे त्याचे डोळे
झाडाच्या सावलीत झोपे... ससा ।

झाली सांजवेळ तो गेला किती काळ
नि शहारली गवताची पाती
ससा झाला जागा, तो उगा करी त्रागा
नि धाव घेई डोंगराच्या माथी
कासवा तेथे पाही ओशाळला मनी होई
"निजला तो संपला!" सांगे ......ससा।

कवी – शांताराम नांदगावकर

भावार्थ

खरगोश तो खरगोश, जैसे रुई का फाहा,
उसने कछुए से एक शर्त लगाई।
तेज़-तेज़ दौड़कर पहाड़ पर जाएँगे,
यही हमारी दौड़ है भाई।

चुरु-चुरु बोलता वह, तुरु-तुरु चलता वह,
और कछुए ने अपना शरीर हिलाया ।
खरगोश आगे निकल गया पेड़ के पीछे छिप गया,
यह कछुए ने धीरे से देख लिया।
रास्ते में न रुका, न किसी से बात की,
वह धीरे-धीरे चलता ही रहा... खरगोश !

हरी-हरी पत्तियाँ और पक्षियों के गीत,
उन्हें देखकर खरगोश खुश हो गया।
ठंडी घास खाई, डाल की छाया में बैठा,
और धीरे-धीरे वहीं ऊँघने लगा।
उसकी भोली-भाली आँखें मुँद गईं,
गुंजा के दानों जैसी उसकी आँखें
पेड़ की छाया में सो गया... खरगोश!

शाम हो गई, कितना समय बीत गया,
और घास की पत्तियाँ सिहर उठीं।
खरगोश जाग गया, व्यर्थ झुँझलाने लगा,
और पहाड़ की चोटी की ओर दौड़ पड़ा।
वहाँ कछुए को देखकर, उसके मन में लज्जा हुई।
कछुआ कहने लगा-
"जो सोया, वह खोया !"... खरगोश !

- विद्‌यार्थियों से गीत का सुर-ताल में अभ्यास करवा लें।

कुछ और एकल गीत

नीचे कुछ गीतों की सूची दी है। ये गाने अकेले गाने आना चाहिए। तुम्हें निम्नलिखित में से जो गाना पसंद आए उसे सुनकर गाओ और उसका अभ्यास करो।

हिंदी एकल गीत

१) चांदोबा चांदोबा भागलास का?...
२) चला मुलांनो आज पाहू या शाळा चांदोबा गुरुजींची...
३) झुक झुक झुक झुक आगीनगाडी, धुरांच्या रेषा हवेत काढी...
४) लकड़ी की काठी, काठी पे घोडा...
५) लाल टांगा घेऊन आला आला टांगेवाला...

१) चंदा मामा दूर के पुए पकाएँ बूर के।
२) आओ बच्चो तुम्हें दिखाएँ झाँकी हिंदुस्तान की।
३) आओ बच्चो खेल दिखाएँ छुक छुक छुक छुक रेल चलाएँ।
४) नानी तेरी मोरनी को मोर ले गए।
५) नन्हा मुन्ना राही हूँ देश का सिपाही हूँ।

युगल गीत

अब हम एक और युगल गीत सीखनेवाले हैं। इसके लिए अगला गीत पढ़ो, सुनो और गाओ।

झोप आता चिऊताई। रात्र किती झाली बाई
चिमणा-चिमणीसाठी। बाबा गातो ही अंगाई ॥धृ॥

सुरासंगती कधी खट्याळी। शाळेतील गमती
गमती अति भारी। अवखळ शोभे ही चतुराई ॥१॥

भाग्यलक्ष्मी माझी गोडंबी। माझी गुंगुडी किती सानुली
मोठ्ठं होण्याची करू नको घाई। बाबा गातो ही अंगाई ॥२॥

सरल बालपण होशील मोठी। शहाणपणाच्या करशील गोष्टी
जोजविते बापातील आई। जोजविते बाळाची आई ॥३॥

कवी– अभय कुलकर्णी

भावार्थ

सो जाओ अब, चिड़िया रानी, रात बहुत गहराई
चिड़ा- चिड़िया की खातिर, पापा ने लोरी गाई।।धृ।।

सुरों की संगत कभी शरारती, शाला की बातें न्यारी ।
मस्ती की यादें हैं चंचल, समझदारी अब आई ॥१॥

भाग्यलक्ष्मी प्यारी गुड़िया, नन्हीं-सी, भोली बिटिया ।
बड़ी होने की मत कर जल्दी, पापा ने लोरी गाई ॥२॥

बीत गया जो बचपन तेरा, समझ की होंगी बातें।
पिता का मन तुझको दुलराए, बनकर तेरी माई ॥३॥

- एकल और युगल गीतों के प्रकारों का सुर - ताल में अभ्यास करवा लें।

CG - 2
C - 2.1
LO 03AE48/49

युगल गीत

अब अगला गीत पढ़ो और सुनो। यह गीत दो व्यक्तियों ने मिलकर गाया है, इसलिए इसे युगल गीत कहते हैं।

तो चलो तुम भी यह गीत पढ़ो, सुनो और गाओ।

''तुझ्या गळा, माझ्या गळा,
गुंफू मोत्यांच्या माळा''
''ताई, आणखि कोणाला?''
''चल रे दादा चहाटळा !''
''तुज कंठी, मज अंगठी
आणखि गोफ कोणाला?''
''वेड लागले दादाला!
मला कुणाचे? ताईला!''
''तुज पगडी, मज चिरडी।
आणखि शेला कोणाला?''
''दादा, सांगू बाबाला?
सांग तिकडच्या स्वारीला !''
''खुसूं खुसूं गालिं हसू''
''वरवर अपुले रुसू रुसू''
''चलनिघ, येथे नको बसू ''
''घर तर माझे तसू तसू''
''कशी कशी, आज अशी''
''गंमत ताईची खाशी!''
''आता कट्टी फू दादाशी''
''तर मग गट्टी कोणाशी?''

कवी – भा. रा. तांबे

भावार्थ

तेरे गले में, मेरे गले में,
पिरोएँ मोतियों की माला"
"दीदी, और किसे दें?"
"चल रे भैया, बहक गया!"
"तेरा हार, मेरी अँगूठी,
और यह गोफ किसे दें?"
"भैया तो पगला गया
मैं कहाँ? दीदी!"
"तेरी पगड़ी, मेरी साड़ी!
और शाल किसे दें?"
"भैया, बोलूँ बाबू जी से ?
बोल उधर सवारी को!"
"मंद-मंद गालों में हँसना
ऊपर-ऊपर से रूठना"
"चल निकल यहाँ मत बैठ
घर तो मेरा पास-पास"
कैसी-कैसी आज ऐसी
दीदी की मजा खास!"
"अब तो भैया से कट्टी"
"तो फिर बट्टी किससे ?"

- युगल गीत सुनवाएँ और सुर – ताल में अभ्यास करवा लें।

CG - 2
C - 2.1
LO03AE48,49

कुछ और युगल गीते

नीचे कुछ युगल गीतों की सूची दी है। तुम्हें पसंद आए ऐसे गीत को सुनकर उस गीत का अभ्यास करो।

- नाकावरच्या रागाला औषध काय?
- निळे गगन निळी धरा, निळे निळे पानी!

हिंदी युगल गीत

- दादी अम्मा दादी अम्मा मान जाओ।
- उसको नहीं देखा हमने कभी पर इसकी जरूरत क्या होगी ।

मेरी कृति

१) उचित शब्द का उपयोग कर वाक्य पूर्ण करो।

अ) अकेले द्‌वारा गाया गीत अर्थात ----------

आ) युगल गीत गाने के लिए --------व्यक्तियों की आवश्यकता होती है।

२) अपनी पसंद का कोई भी एक एकल गीत का अभ्यास करके कक्षा में प्रस्तुत करो।

३) अपनी पसंद का कोई भी एक युगल गीत का अभ्यास करके कक्षा में प्रस्तुत करो।

- युगल गीतों का अभ्यास करवाकर प्रस्तुतीकरण करवा लें।

११. सुर परंपरा का

चित्र देखकर वह किसका है यह लिखो।

....

....

....

....

....

....

- चित्रों का निरीक्षण करके चित्रों के नीचे नाम लिखने के लिए कहें।
- चित्र में प्रदर्शित लोक संगीत के प्रकार की जानकारी बताएँ।

CG - 2
C - 2.2
LO 03AE51

तुमने वासुदेव तो देखा होगा? पोवाड़ा भी सुना होगा!

और कभी जाँत की ओवियाँ भी सुनी होंगी! ऐसे ही अनेक आँचलिक बोली-भाषाओं, परंपराओं से लोकसंगीत तैयार होता है। आज हम लोकसंगीत के ऐसे ही कुछ गीतों का आनंद लेंगे।

पढ़ो, सुनो और गाओ।

शेतकरी गीत

आम्ही लेकर काळ्या आईची
राबतो शेतामंदी। करितो काम गाळतो घाम
राहतो सदा आनंदी ॥ धृ ॥
जरी आमचं कष्टाचं जीणं
दैवाचे आम्हाला लाभत देणं
ऊन-पावसाशी झुंजून आम्ही
पिकवितो सोनं चांदी ॥१॥

कवी -राजेंद्र अत्रे

भावार्थ

हम संतानें काली माँ की,
खेतों में करते हैं मेहनत। करें काम बहाएँ पसीना
सदा रहें आनंदित।।धृ।।
यद्‌यपि कष्ट भरा है जीवन
मिला भाग्य से ईश्वर का प्रतिदान
करें धूप-बरखा में अथक परिश्रम
पाएँ सोने-चाँदी-सी फसलों का वरदान।।१।।

ध्यान में रखो :
किसान गीत के लिए ढोल, खंजरी, झाँझ और घुंघरू आदि वाद्‌य उपयोग में लाए जाते हैं।

कोळीगीत

वल्हव रे नाखवा, वल्हव रे नाखवा
वल्हव रे नाखवा, वल्हव
आम्ही कोळ्याची पोरं हाय् हो
आम्हा दर्याची भीती नाय हो
वर आभाळ भरलंय् हो जाळं जोरात धरलंय् हो कोण
करील आम्हा काय हो?
लाट जोसात येऊ द्या झेप खुशाल घेऊ द्या
मागे घेणार न्हाई पाय हो
देव मल्हारी पावला हो मासा जाळ्यात गावला हो होडी
मजेत पुढे जाय हो

कवी – मंगेश पाडगांवकर

भावार्थ

खेओ रे नाविक, खेओ रे नाविक,
खेओ रे नाविक, खेओ रे।
हम मछुआरों की संतान हैं रे,
हमें समुद्र से कोई भय नहीं रे।
ऊपर आकाश भरा है रे, जाल मजबूती से धरा है रे ।
हमारा कोई क्या बिगाड़ेगा ?
लहरें जोश से आने दो, हमें खुशी-खुशी टकराने दो
हम कदम पीछे नहीं हटाएँगे रे ।
देवमल्हारी ने कृपा की है रे,
मछली जाल में आ फँसी है रे ।
नाव आनंद से आगे जा रही रे ।

ध्यान में रखो : मछुआरा गीत के लिए खास तौर पर ढोलक, ढोलकी, घुंघरू, हार्मोनियम, झाँझ आदि वाद्‌य उपयोग में लाए जाते हैं।

- कोली गीत और कृषक गीत पर चर्चा कराके उनके अंतर पर समूह में चर्चा करने के लिए कहें।

CG-2
C- 2.2
LO03AE
50/51

पढ़ो, सुनो और गाओ।

पुराने समय में परिवार की स्त्रियाँ सुबह जल्दी उठकर जाँत में अनाज पीसती थीं। अनाज पीसते समय वे ओवियाँ गाती थीं, इन ओवियों को जाँत की ओवियाँ कहा है।

जात्यावरील ओव्या

१) पहिली माझी ओवी गं, लावीन मी माळा।
विठूच्या चरणी गं, ठेवीन मी कपाळा।

२) सुंदर माझे जाते गं फिरे बहुतेकें ।
ओव्या गाऊ कौतुके तू येरे बा विठ्ठला ॥

भावार्थ

१) मेरी पहली ओवी रे,
माला मैं चढ़ाऊँगी।
विठ्ठल के चरणों में रे,
मस्तक मैं झुकाऊँगी।।

२) सुंदर घूमे चक्की रे,
आए मधुर आवाज रे।
ओवी गाऊँ कौतुक से,
आजा विट्ठल आज रे।।

पोवाडा

छत्रपति शिवाजी महाराज के पराक्रम की कहानियाँ तो सुनी होंगी लेकिन वही कहानियाँ जब गानों के रूप में सुनते हैं तो घटनाओं की कल्पना साकार हो जाती हैं। ऐसा ही एक पोवाड़ा सुनो और गाओ।

रायरीचा रायगड झालाऽऽऽ
बांधीले दुर्गेश्वराला, तटबंदी महाद्वाराला
बाजारपेठ राजसदरेला, सेवेचे ठाई तत्पर
हिरोजी इंदुलकर वर देई जगदिशेश्वर
झाली राजधानी तैयार जीऽ जी जी
मराठीयांच्या सिंहासनाची वाढविली ख्याती
जिजाऊ झाल्या राजमाता अन् शिवबा छत्रपती
कित्येकांच्या बलिदानाने दिन हा अवतरला
शेतकऱ्यांचा राजा शिवबा छत्रपती झाला

कवी – संतोष साळुंके

भावार्थ

रायड़ी का रायगढ़ हो गयाऽऽऽ
दुर्गदुर्गेश्वर का निर्माण, किला महाद्वार
बाजार सेवा के लिए तैयार
ऊपर हीरोजी इंदुलकर ने बनाया जगदीशेश्वर
राजधानी शहर तैयार जीऽ जी जी
मराठी सिंहासन की बढ़ाई कीर्ति
जिजाऊ बनीं राजमाता और शिवबा छत्रपति
कितनों के बलिदान से ये दिन हुआ साकार
राजा छत्रपति शिवबा किसानों के करतार।

तुम्हें छत्रपती शिवाजी महाराज की कौन–कौन–सी शौर्यकथा की जानकारी है। उसपर चर्चा करो।

ध्यान में रखो : पोवाड़ा प्रस्तुतीकरण के समय डफ, हार्मोनियम, एकतारा, मंजीरा आदि वाद्य उपयोग में लाए जाते हैं।

- लोकसंगीत के लिए उपयोग में लाए जाने वाले वाद्यों का परिचय कराएँ।
- स्थानीय परिसर के लोकगीत प्रकारों की पहचान कराएँ।

CG –4
C– 4.2
LO03AE61

भारूड़

गाने के माध्यम से कहानी बोलते हुए अभिनय के साथ प्रस्तुत करने में बहुत आनंद आता है। गीत के ऐसे प्रकार को 'भारूड़' कहते हैं।

सूर्य उगवला प्रकाश पडला आडवा डोंगर
आडवा डोंगर तयाला माझा नमस्कार
अगगगगगगं विंचू चावला
देवा रे देवा ...विंचू चावला
आता काय मी करू ... विंचू चावला
– संत एकनाथ

भावार्थ

सूरज उगा, प्रकाश फैला उस पार पहाड़ पर,
उस पार के पहाड़ को मेरा नमस्कार ।
अरे-अरे-अरे-अरे, बिच्छू ने डंक मार दिया!
हे भगवान, हे भगवान... बिच्छू ने डंक मार दिया!
अब मैं क्या करूँ... बिच्छू ने डंक मार दिया!

ध्यान में रखो : भारूड़ प्रस्तुतीकरण के लिए हार्मोनियम, ढोलकी, मृदंग, मंजीरा, एकतारा आदि वाद्‌य बजाए जाते हैं।

ध्यान में रखो :
स्थानीय बोलीभाषा में गाए जाने वाले पारंपरिक गीतों को **'लोकगीत'** कहते हैं।

- लोकगीत के साहित्य का परिचय कराएँ।
- लोकसंगीत के विविध प्रकार बच्चों से गवा लें।
- लोकगीतों के विविध प्रकारों का अंतर पहचानने के लिए कहें।

CG -3/4
C- 3.2/4.2
LO03AE
56/61

प्रासंगिक गीत

वर्ष भर में आने वाले अनेक त्योहार उत्सवों में उन त्योहार उत्सवों के अनुसार जिन गीतों का प्रस्तुतीकरण किया जाता है, उन्हें प्रासंगिक गीत कहा जाता है।

भजन :

देव माझा विठू सावळा
देव माझा विठू सावळा
माळ त्याची माझिया गळा॥धृ॥

विठु राहे पंढरपुरी वैकुंठच हे भूवरी
भीमेच्या काठी डुले भक्तिचा मळा॥१॥

साजिरे रूप सुंदर कटि झळके पीताम्बर
कंठात तुळशीचे हार, कस्तुरी-टिळा॥२॥

भजनात विठू डोलतो कीर्तनी विठू नाचतो
रंगुन जाई भक्तांचा पाहुनी लळा॥३॥

भावार्थ :

मेरा देव विठ्ठल साँवला,
मेरा देव विठ्ठल साँवला ।
उसकी माला मेरे गले में ॥ ध्रुव ॥

विठ्ठल रहते पंढरपुर में, यह धरती ही वैकुंठ है।
भीमा नदी के तट पर ही भक्ति का बगीचा है ॥१॥

उनका सुंदर रूप मनोहर, कटि पर पीतांबर
गले में तुलसी माला है, मस्तक पर तिलक कस्तूरी॥२॥

भजन में झूमें विठ्ठल, नृत्य करें कीर्तन में ।
भक्तों का प्रेम देख वे आनंद में रँग जाते हैं॥ ३ ॥

कवी- सुधांशू

- प्रासंगिक गीतों के विविध प्रकारों का अभ्यास करवा लें।

CG - 3
C- 3.2
LO03AE57
LO03AE58

गौरी – गणपती :

चला चला गं सयांनो गौरी आणू या
गौरी आईचं गाणं गाऊ या
चला चला गं...

पाट मांडू चला माझ्या गौराईला शालू
जरतारी हा आता देऊ तिला
सोन्या पाचूचं दागिनं तिला घालू या
चला चला गं सयांनो गौरी आणू या...

हळदी कुंकू फुलं गंध वाहू तिला
गौराईच्या दारी दीप लाऊ चला
आली गौराई माझी सोन्याच्या पाऊली
चला चला गं सयांनो गौरी आणू या..

भावार्थ :

चलो-चलो, सखियों, गौरी ले आएँ,
गौरी माँ का गीत गाएँ ।
चलो-चलो, सखियों ...
आओ, मेरी गौरा माई के लिए आसन सजाएँ,
उसे जरीदार सुंदर साड़ी पहनाएँ ।
सोने-पन्ने के गहने उसे पहनाएँ,
चलो-चलो, सखियों, गौरी ले आएँ...
हल्दी, कुमकुम, फूल सुगंध चढ़ाएँ
गौरा माई के द्वार पर दीप जलाएँ ।
मेरी गौरा माई सोने-से चरणों से आई है,
चलो-चलो सखियों, गौरी ले आएँ...।

दिवाळी गीत :

चक चक चकली काट्याने माखली
तुकडा मोडताच खमंग लागली

कड कड कडबुळे कुडकुडीत झाले
एकच खाताना दात दुखू लागले

गोरीपान करंजी, नावे सारखी दिसते
तिच्या पोटातले खाताना, आणखी हवी वाटते

तिखट तिखट चिवडा, आम्हांला नको बुवा
'दाणे खोबरं वेचून, लाडू ऐवजी दादाला द्या

एवढा मोठा लाडू, हातात काही मावत नाही
तुकडा तुकडा खाताना, केव्हा संपला कळत नाही.

भावार्थ :

चक-चक चकली, काँटेदार
टुकड़ा तोड़ते ही बड़ी मजेदार
कड़क-कड़क-कड़बोले, बड़े करकरे
खाते-खाते दाँतों में होने लगा दर्द
गोरी-सी करंजी, देखने में प्यारी
भीतर मिठास और स्वाद में न्यारी
तीखा-तीखा चिवड़ा, मुँह झन्ना जाए
मूँगफली और नारियल के लड्डू मन भाए।
इतना बड़ा लड्डू, हाथ में समाता ना
टुकड़ा-टुकड़ा खाओ तो जल्दी खत्म हो जाए।

- प्रासंगिक गीतों के विविध प्रकारों का सुर-ताल में अभ्यास कराएँ।

CG -3
C- 3.2
LO03AE57
LO03AE58

मेरी कृति

१) पाठ में आए लोकगीत प्रकारों के नाम लिखो।

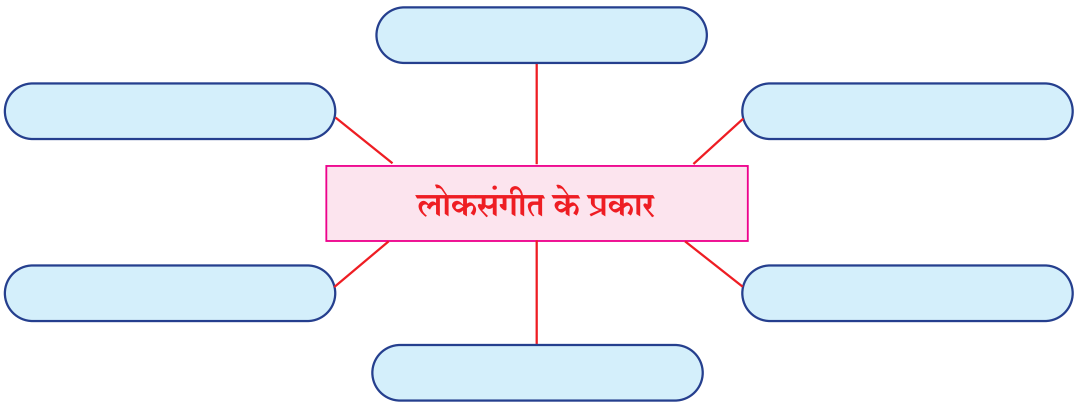

२) नीचे दिए गए चित्रों के वाद्‌य लोकसंगीत के कौन-से प्रकारों के लिए उपयोग में लाए जाते हैं लिखो।

....

....

....

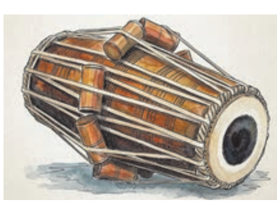

....

....

....

३) गाँव या परिसर के लोकगीतों के संबंध में घर के किसी बड़े व्यक्ति से जानकारी लेकर सूची बनाओ।

१२. मित्रता सुरों से

निम्नांकित चित्र देखो।

चित्रों की आवाज समझकर आवाजों का वर्गीकरण करो।

प्राकृतिक आवाज	मानव निर्मित आवाज
१)	१) ....
२)	२) ....
३)	३) ....

उपर्युक्त आवाजों के अतिरिक्त तुम्हारी जानकारी की अन्य प्राकृतिक और मानव निर्मित आवाज लिखो।

ध्यान में रखो :

- प्रकृति के विविध घटकों की आवाजों को प्राकृतिक ध्वनि कहते हैं।
- वस्तुओं से आने वाली आवाजों को मानव निर्मित ध्वनि कहते हैं।

विचार करो

प्राकृतिक आवाज	मानव निर्मित आवाज
१)	१) ....
२)	२) ....
३)	३) ....

आओ आवाजों की नकल करो !

अपने मित्रों के सामने सुनी हुई आवाजों की नकल करके दिखाओ।

- प्राकृतिक और मानव निर्मित आवाजों का अंतर समझाकर बताएँ।
- विविध प्राकृतिक और मानव निर्मित आवाजों की नकल करने के अवसर दें।

CG - 3
C - 3.1
LO03AE54/55/59

उपर्युक्त चित्रों में तुम्हें क्या दिखाई देता है?

जिस प्रकार गायन के लिए वादन की आवश्यकता होती है उसी प्रकार नृत्य के लिए गायक और वादक की आवश्यकता होती है।

ध्यान में रखो :

गायन, वादन और नृत्य, इन तीन कलाओं के समूह को संगीत कहते हैं।

आरोह – अवरोह

निम्नांकित चित्र का निरीक्षण करो और उसपर समूह में चर्चा करो।

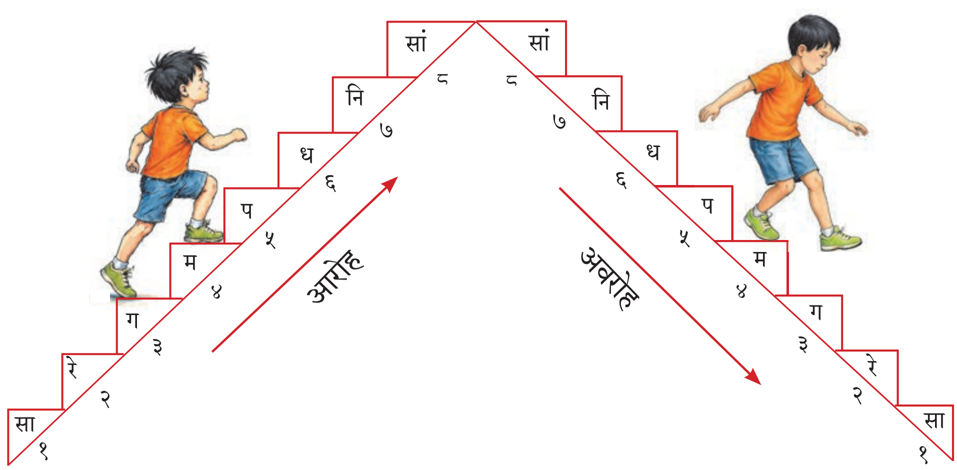

ध्यान में रखो :

- चढ़ते क्रम से स्वर गाने की क्रिया को 'आरोह' कहते हैं। उदाहरणार्थ सा रे ग म प ध नि सां
- उतरते क्रम से स्वर गाने की क्रिया को 'अवरोह' कहते हैं। उदाहरणार्थ सां नि ध प म ग रे सा

- उपलब्ध साधनों की सहायता से आरोह-अवरोह का अभ्यास करवा लें।

CG – 2
C – 2.2
LO03AE52

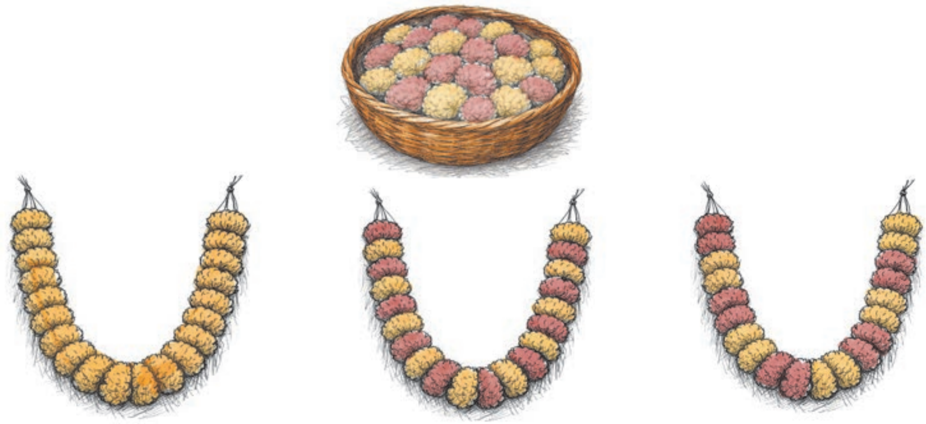

चित्र देखो और निरीक्षण करो।

चित्र के हारों में क्या – क्या अंतर दिखाई देता है। इसपर समूह में चर्चा करो।

सात स्वर

संगीत में सात स्वर होते हैं। क्या इन स्वरों की रचना भिन्न-भिन्न पद्धति से की जा सकती है? इसका विचार करो।

१	२	३	४	५	६	७
सा	रे	ग	म	प	ध	नि

क्या तुम जानते हो?

- सात स्वरों के समूह को '**सप्तक**' कहते हैं।
- सप्तक के मंद्र, मध्य और तार कुल तीन प्रकार होते हैं।
- ऊपर का सा लिए बिना सप्तक पूर्ण नहीं होता।

•

	१	२	३	४	५	६	७	८
आरोह –	सा	रे	ग	म	प	ध	नि	सां
	८	७	६	५	४	३	२	१
अवरोह –	सां	नि	ध	प	म	ग	रे	सा

- आरोह, अवरोह एवं अलंकार का अभ्यास करवा लें।

CG – 2
C – 2.1
LO03AE53/56

अवरोह –

१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८
सा		रे		ग		म		प		ध		नि		सां	

८	८	७	७	६	६	५	५	४	४	३	३	२	२	१	१
सां		नि		ध		प		म		ग		रे		सा	

करके देखो

निम्नलिखित रिक्त स्थान भरकर स्वर क्रम पूर्ण करो।

सा	रे	रे	ग										
सां	नि	नि	ध										

ध्यान में रखो : स्वरों की क्रमबद्‌ध आकर्षक रचना को **अलंकार** कहते हैं।

ध्यान में रखो

हार्मोनियम

तबला

बाँसुरी

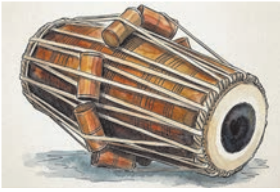
पखावज

गिटार

ढोल

तुतारी

संबल

- ताली की सहायता से अलंकारों का सुर-ताल में अभ्यास करवा लें।

CG-2
C-2.2
LO03AE53

चित्रों का निरीक्षण करके उनके बजाने की पद्धति के अनुसार वर्गीकरण करो।

१. हाथ से बजाए जाने वाले वाद्य ------------------------------

२. मुँह से फूँककर बजाए जाने वाले वाद्य --------------------------

३. तार की सहायता से बजाए जाने वाले वाद्य ------------------------

मेरी कृति

१) निम्नलिखित रिक्त चौखटों में क्रम से आने वाले स्वर लिखो।

सा		ग	म		ध	

२) पाठशाला में आते समय कौन-कौन-सी प्राकृतिक और मानव निर्मित ध्वनियाँ सुनाई देती हैं?

प्राकृतिक आवाज	मानव निर्मित आवाज
१)	१) ....
२)	२) ....
३)	३) ....

नृत्य

१३. नृत्य, मेरा आनंद

बच्चो, जब हमें बहुत आनंद होता है तो हम आनंदित होकर तालियाँ बजाते हैं, कूदते हैं और कभी-कभी तो नाचने भी लगते हैं। इससे पहले भी हमने एकाध गाने पर नृत्य किया होगा। अब हम सुंदर नृत्य करना सीखने वाले हैं तो चलो फिर शुरू करें नृत्य की आनंदित यात्रा.....

नृत्य अर्थात भाव और संगीत के आधार पर की जाने वाली हाथ, पैर तथा संपूर्ण शरीर की लयबद्ध सुंदर हलचल।

आओ, चित्र में दिखाई गई कृतियों का निरीक्षण करके एक के बाद एक कृतियाँ करके देखें। प्रत्येक विद्यार्थी को ये कृतियाँ ताल में करनी हैं।

१. ऊपर-नीचे तालियाँ बजाना।

२. ताली बजाकर पैर आगे निकालना।
ताली बजाकर पैर पीछे खींचना।

३. दायीं और बायीं ओर ताली बजाना।

चलो, नाचें!

ऊपर चित्र में दी गई कृतियों का उपयोग करके अपनी पसंद के गाने पर नृत्य प्रस्तुत करो। इस कृति के साथ तुम्हारी पसंद के अनुसार कूद तथा अन्य हलचलों का समावेश करो।

- दी गई हलचलों का निरीक्षण करके, उन्हें मनपसंद संगीत पर करके देखने के लिए प्रेरित करें। मनपसंद कृतियों के अलावा अन्य आसान हलचलें भी करवा लें।
- प्रत्येक विद्यार्थी इस कृति में सहभागी हों, इसका ध्यान रखें।

CG - 1
C - 1.1
LO 03AE62

आओ देखें! आओ सीखें! आओ नाचें!

दी गई प्रत्येक हलचल का निरीक्षण करके प्रत्येक नृत्य हलचल बायीं और दायीं ओर करो।

चलो, अब इस नृत्य का अभ्यास करो।

- नृत्य का अभ्यास एवं प्रस्तुतीकरण करने हेतु प्रोत्साहन दें।

CG - 1
C - 1.1
LO 03AE62

आओ, सारे मिलकर नाचें।

सारे लोग मिलकर एक साथ नृत्य करने से आनंद एवं ऊर्जात्मक वातावरण हो जाता है।
चित्र में दी गई कृतियों का निरीक्षण करो और उसके अनुसार एक के बाद एक कृति करके देखो।

मित्रो/सखियो के साथ गोलाकार में घूमें!

ताली बजाओ, सामने वाले को ताली दो।

फुगड़ी खेलो!

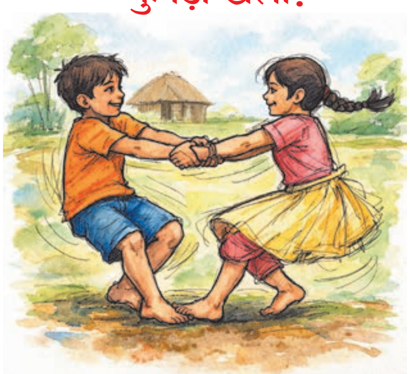

**ताली बजाकर दो कदम आगे जाओ
ताली बजाकर दो कदम पीछे आओ।**

नाव खेने की कृति करो।

**एक समूह ताली बजाए,
एक समूह पैर पटके।**

- दी गई हलचलों का निरीक्षण करके, मनपसंद संगीत पर उन्हें करके देखने के लिए प्रेरित करें।

CG – 1
C – 1.2
LO 03AE63

चलो करके देखें!

सारे लोग एक कतार में ठहर जाओ। सभी दायीं ओर मुड़कर अपने दोनों हाथ सामनेवाले मित्र/सखी के कंधे पर रखो। सबसे आगे वाले मित्र/सखी के अनुसार चलो। उसकी हलचलों का अनुकरण करो।

१	२	३	४	५	६
आगे	पीछे	आगे	पीछे	आगे	पीछे

अब ४ से ६ विद्‌यार्थियों का एक समूह तैयार करो। समूह के सारे लोग एक कतार में ठहरो। १,३,५ क्रमांक पर खड़े बच्चे पहले सामने कूदो फिर पीछे जाओ। २,४,६ क्रमांक पर खड़े बच्चे पहले पीछे जाओ फिर सामने कूदो। देखो फिर से एक कतार में हम सब आ गए होंगे। अब इसका अभ्यास करो। अब पर्याप्त अभ्यास हो जाने पर अपनी मनपसंद गाने पर इन हलचलों का उपयोग करके नृत्य प्रस्तुत करो।

- दी गई हलचलों का निरीक्षण करके मनपसंद संगीत पर प्रत्यक्ष करने के लिए प्रेरित करें।
- कक्षा के विद्‌यार्थियों की संख्या ध्यान में रखते हुए चार या छह विद्‌यार्थियों के समूह बनाकर यह कृति करवा लें।

CG – 1
C – 1.2
LO 03AE63

चिपकाएँ चित्र नृत्य के !

समाचार पत्र या मासिक पत्रिकाओं में आए समूह नृत्य के चित्र अथवा पाठशाला के कार्यक्रम में तुम्हारे द्‌वारा प्रस्तुत किए गए समूह नृत्य की तस्वीरें अपनी कॉपी में चिपकाओ।

ध्यान में रखो

जब अनेक बच्चे या कलाकार इकट्‌ठे होकर नृत्य करते हैं तो उसे 'सामूहिक नृत्य' कहते हैं।

आओ खेलें खेल – नेता पहचानो।

अब हम सब आओ एक खेल खेलें। इसके लिए सभी एक वृत्ताकार में बैठें। अब एक विद्‌यार्थी पर राज्य दें। उसे एक ओर भेजकर वृत्ताकार के सारे लोग मिलकर अपना एक नेता चुनें। नेता जैसी कृति करेगा उसी प्रकार की कृति का सभी अनुकरणीय करें। नेता सबकी नजर बचाकर हलचल बदलता जाए। जिसपर राज्य है वह नेता पहचाने यह अपेक्षित है। नेता को पहचानने पर अगला राज्य नेता का होगा। इस प्रकार खेल शुरू रखें।

मेरी कृति

अभी तक सीखी गई नृत्य की हलचलों का अपनी कल्पना के अनुसार एकत्रित उपयोग करके अपनी पसंद के गाने पर नृत्य बैठाकर प्रस्तुत करो।

- समाचार पत्र और मासिक पत्रिकाओं का निरीक्षण करने के लिए कहें और उनमें आए समूह नृत्य के सभी चित्र पहचानने के लिए कहकर वे छाया चित्र की कॉपी में चिपकाने के लिए कहें।
- नेता पहचानो खेल कक्षा में खेलवा लें।
- सीखी हुई नृत्य की सभी हलचलों का एकत्रित उपयोग करके प्रस्तुतीकरण करने हेतु प्रोत्साहन दें।

CG – 1
C – 1.2
LO 03AE63

१४. नृत्यमय जीवन

दैनिक जीवन में हम अपने हाथ का उपयोग विविध कामों के लिए विविध पद्धतियों से करते हैं। हाथ की हथेलियों का, उँगलियों का उपयोग सुंदर नृत्यात्मक हलचल के लिए भी किया जाता है। इस तरह हाथों की नृत्यात्मक हलचलों की पहचान कर लें

आओ अपने हाथों की उँगलियों की पहचान कर लें।

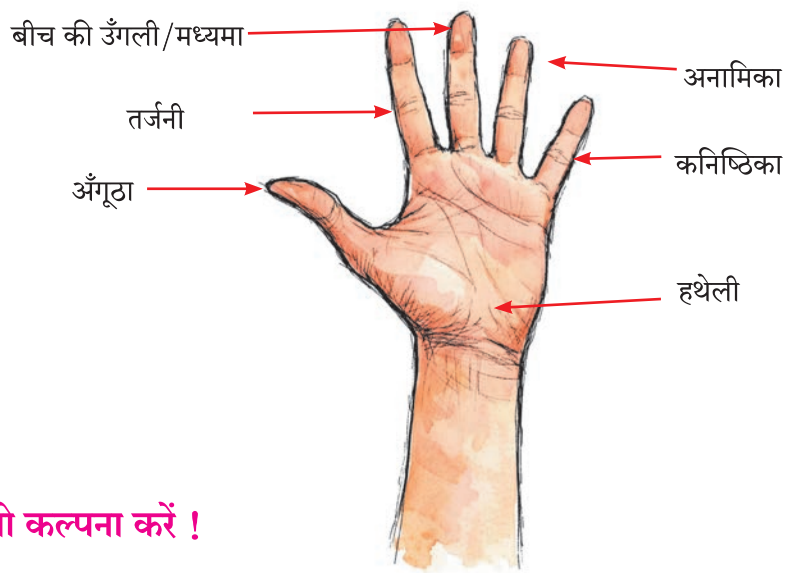

चलो कल्पना करें !

हम अपनी हथेली भिन्न-भिन्न पद्धति से रखकर देखें। जैसे हथेली आकाश की ओर है, हथेली नीचे की दिशा की ओर है। इसी प्रकार हाथ की हाथ की उँगलियाँ, हाथ के द्‌वारा कोई भी हलचल की जा सकेगी इसपर कक्षा में चर्चा करो।

अपने हथेलियों और उँगलियों का विविध पद्‌धति से उपयोग करके भिन्न-भिन्न प्राणी अथवा पक्षी दिखाने का प्रयत्न करो। (जैसे मोर, तोता, हिरण, सिंह और मछली आदि।)

आओ हस्तमुद्राओं का उपयोग समझ लें !

नृत्य में हाथ का उपयोग करके भिन्न-भिन्न क्रियाएँ अथवा वस्तुएँ दिखाई जाती हैं, उन्हें 'हस्तमुद्रा' कहते हैं ।

अगले पृष्ठ पर दी गई हस्तमुद्राओं का निरीक्षण करो। दैनिक जीवन में हस्तमुद्राओं का और किस तरह उपयोग किया जा सकेगा इसपर कक्षा में चर्चा करके लिखो।

- दी गई हस्तमुद्राओं का निरीक्षण करने के लिए कहकर उन्हें प्रत्यक्ष करने के लिए कहें तथा कल्पनाशक्ति का उपयोग करके उन्हीं हस्तमुद्राओं का उपयोग दैनिक जीवन में कैसे होता है इसपर चर्चा करने के लिए कहें।

CG – 2,
C –2.1,
LO 03AE64

१. पताका हस्त

....

....

....

....

२. हंसास्य हस्त

....

....

....

....

....

३. मुष्टी हस्त

....

....

....

....

....

- दी गई हस्तमुद्राओं का निरीक्षण करने का कहकर, उन्हें प्रत्यक्ष में करने के लिए कहें तथा आगे कल्पनाशक्ति का उपयोग करके उनका दैनिक जीवन में कैसा उपयोग होता है, पूछें।

CG – 2,
C –2.1,
LO 03AE64

प्रकृति के विविध घटकों की हलचल देखें तो उन हलचलों का रूपांतरण सुंदर नृत्य की हलचलों में किया जा सकता है। जैसे पेड़ का हवा से डोलना, नदी का बहना, मछली का तैरना आदि। प्रकृति के विविध घटकों और उनकी हलचलों का निरीक्षण करो।

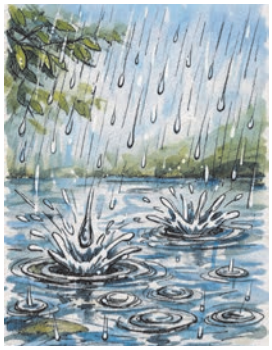

वर्षा

नदी

तैरती मछली

फूल

उड़ता पक्षी

हिलता पेड़

ऊपर दिए गए चित्रों के प्राकृतिक घटक देखो! इन घटकों की हलचलों की कल्पना करो। इन हलचलों को अब नृत्य के लिए कैसे उपयोग में लाया जा सकेगा इसकी कल्पना करके उन हलचलों को लयबद्ध करके देखो ।

- प्रकृति के विविध घटकों का निरीक्षण करने के लिए कहकर उनके अनुसार हलचलों का अनुकरण करने के लिए कहें।

CG – 4,
C –4.1,
LO 03AE70

चिट्ठी में क्या लिखा है ?

आओ, अब हम एक बढ़िया-सा खेल खेलें। इसके लिए हम कुछ विद्यार्थियों के समूह तैयार करें। अब समूह में जितने मित्र/सहेलियाँ हैं उतनी प्रकृति के विविध घटकों की हलचलों की लिखित चिट्ठियाँ तैयार करो। सारी चिट्ठियाँ एक गोले में डाल दें। समूह का प्रत्येक विद्यार्थी उस गोले से एक-एक चिट्ठी उठा ले।

तुम्हारी उठाई गई चिट्ठी में जो प्राकृतिक घटक होगा उसे समझकर उस घटक की हलचल की तुम्हारी कल्पना के अनुसार नृत्यमयी हलचल करके दिखाओ।

नाचें-डोलें प्रकृति के संग

बढ़िया! अभी तक हमने प्रकृति के विविध घटकों की सुंदर-सुंदर हलचलें करके देखीं। हमने उत्तम तरीके से उनका अभ्यास भी किया है।

चलो, तो फिर अब हम एक प्रकृति गीत पर आधारित एक नृत्य करके देखें।

अगला प्रकृति गीत पढ़ें। दिए गए नृत्य का समूह में अभ्यास करके कक्षा में प्रस्तुतीकरण करो।

- प्राकृतिक घटक संबंधित हलचलों की चिट्ठियाँ तैयार करके सूचना के अनुसार खेल खेलाएँ।

CG - 4,
C -4.1,
LO 03AE70

किलबिल किलबिल पक्षी बोलती!

किलबिल किलबिल पक्षी बोलती!
झुळझुळ झुळझुळ झरे वाहती,
पानोपानी फुले बहरती,
फुलपाखरे वर भिरभिरती.
स्वप्नी आले काही,
एक मी गाव पाहिला बाई!॥धृ॥
त्या गावाची गंमत न्यारी,
तिथे नांदती मुलेच सारी.
कुणी न मोठे, कुणी धाकटे,
कुणी न बसते इथे एकटे.
सारे हसती, गाती नाचती,
कोणी रडके नाही.
एक मी गाव पाहिला बाई! ॥१॥

कवी– शांता शेळके

चहचह–चहचह पक्षी चहकें !

चहचह–चहचह पक्षी चहकें
झर–झर झरने बहते हैं।
पत्ते–पत्ते फूल खिले हैं,
तितलियाँ ऊपर मँड़राएँ,
सपने में मैंने कुछ देखा,
अरी बहन ! मैंने एक गाँव देखा ।
उस गाँव का निराला आभास,
वहाँ केवल बच्चों का ही वास,
न कोई बड़ा, न कोई छोटा,
न कोई वहाँ अकेला बैठता था ।
हँसते, गाते और नाचते,
कोई न रोने वाला था,
अरी बहन ! मैंने एक गाँव देखा ।।१।।

मेरी कृति

अपना मनपसंद प्रकृति गीत या बाल गीत चुनो। चुने हुए गीत पर समूह में अपनी कल्पनाशीलता से नृत्य प्रस्तुत करो।

- कक्षा में नृत्य का प्रात्यक्षिक साकार करवाएँ। विद्यार्थियों की नृत्यात्मक हलचल का निरीक्षण कर अभ्यास तथा प्रस्तुतीकरण के लिए प्रोत्साहन दें।

CG – 4,
C –4.1,
LO 03AE70

१५. नृत्य के साथी

हम नृत्य करते समय संगीत का उपयोग करते हैं। संगीत में गाने के साथ-साथ लय और ताल का भी समावेश होता है। संगीत के साथ ही नृत्य के लिए भी लय और ताल बहुत महत्त्वपूर्ण होते हैं।

तो चलो हम लय और ताल के बारे में जान लें।

हमारे दैनिक जीवन में उसी तरह प्रकृति में लय होती है। घड़ी में तीन काँटे होते हैं। घंटे का काँटा, मिनिट का काँटा और सेकंड का काँटा। घंटे का काँटा मंद गति से, मिनिट का काँटा मध्यम गति से और सेकंड का काँटा तीव्र गति से घूमता है। ये गति ही लय है। दो ताल के बीच समान अंतर ही लय है। लय का अर्थ वेग या गति है। लय के तीन प्रकार हैं।

लय

१. विलंबित लय – मंद गति

२. मध्यम लय – मध्यम गति

३. द्रुत लय – तीव्र गति

विलंबित लय – मंद गति

मध्य लय – मध्यम गति

द्रुत लय – तीव्र गति

- लय की संकल्पना भिन्न-भिन्न उदाहरणों से समझाकर बताएँ।
- लय की कृति अकेले या समूह द्वारा समझी जा सकती है।

CG – 2
C – 2.2
LO 03AE65

लयों का आनंद !

आओ, इन तीन लयों से संबंधित कृति करो।

१. विलंबित लय – मंद गति

१ से ४ तक संख्या गिनो केवल १ संख्या बोलते समय ताली बजाओ।

१.	२.	३.	४.
	X	X	X

२. मध्यम लय – मध्यम गति

१ से ४ तक संख्या गिनो। अब १ और ३ बोलते समय ताली बजाओ।

१.	२.	३.	४.
	X	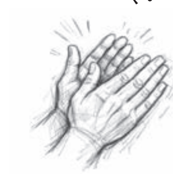	X

३. द्रुत लय – तीव्र गति

१ से ४ तक संख्या गिनो। अब १,२,३,४ प्रत्येक अंक बोलते समय ताली बजाओ।

१.	२.	३.	४.

चित्र में दिखाए अनुसार भिन्न-भिन्न लयों में तालियाँ बजाओ।

अब इन तीन गतियों में से एक गति चुनकर उसके अनुसार हाथों की नृत्यात्मक सरल हलचलें करो। इसके बाद गति बदलकर वही हलचलें अलग-अलग रूपों में करके देखो। जैसे हाथ पंखे की तरह हिलाना, चुटकियाँ बजाना।

- उपर्युक्त कृतियों का विद्‌यार्थियों को निरीक्षण, अनुकरण तथा अभ्यास करने के लिए प्रेरित करें।

CG – 2
C – 2.2
LO 03AE65

ताल

ताल से तात्पर्य है– गाने या वाद्य को दी गई एक समय की चौखट। ताल की गणना मात्राओं के चक्र अर्थात ठेका से की जाती है। जैसे– केहरवा ताल – ८ मात्रा ; बोल – धा गे ना ती ना क धी न।

लय ताल का आनंद !

केहरवा विलंबित, मध्यम एवं द्रुत इन तीन लयों का उपयोग करके केहरवा ताल बोलकर देखो। ताल का प्रत्येक अक्षर बोलते समय दोनों हाथों से ताली बजाओ अथवा एक पैर जमीन पर पटककर ठेका दो।

ताल केहरवा कृति

अब यह केहरवा ताल हम समूह में लय में बोलेंगे। इसके लिए इस बोल के आठ अक्षरों के लिए आठ मित्रों / सखियों का एक समूह तैयार करो। प्रत्येक को एक अक्षर क्रम से बाँट दो।

ताल के बोलों के अनुसार अपना अक्षर चयनित गति से बोलो। यह करते हुए सभी अपनी निर्धारित गति से बोलने का अभ्यास करो।

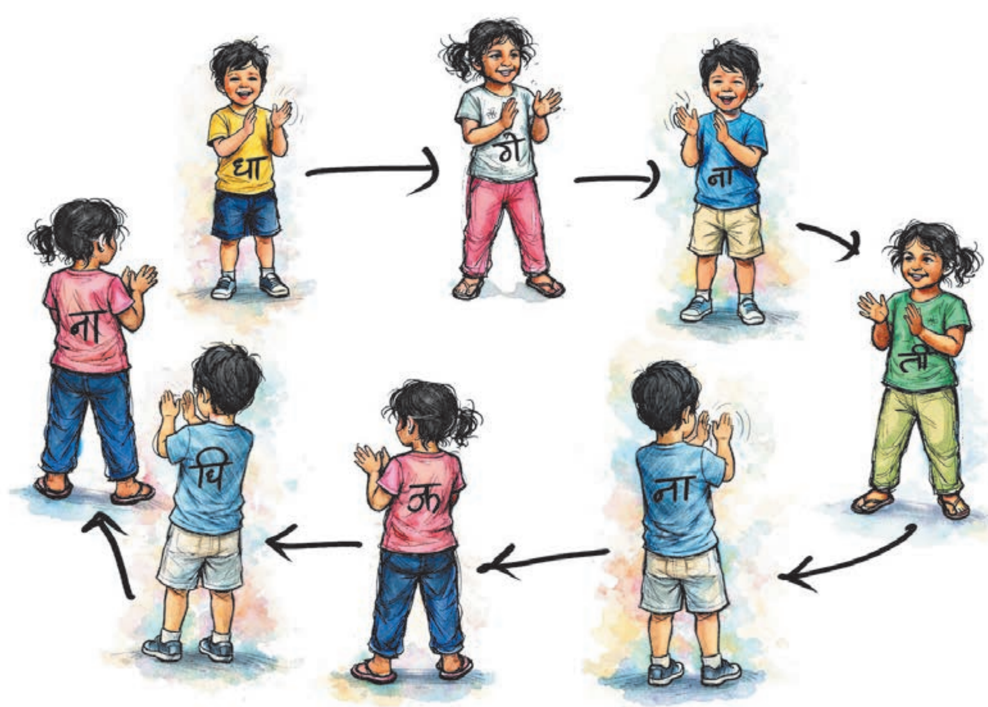

- केहरवा ताल विविध लयों में बोलने का अभ्यास करवा लें।
- ताल के अक्षरों के उच्चारण तथा ताली अथवा पैर पटकने की क्रिया एक साथ हो रही है, इसका निरीक्षण करें। उसी प्रकार प्रत्येक बोल एक के बाद एक, एक ही लय में बोला जा रहा है, इस ओर ध्यान दें।

CG – 2
C – 2.2
LO 03AE65

वाद्य

आओ, नृत्य के लिए उपयोग में लाए जाने वाले वाद्यों की पहचान कर लें।

वाद्यों के दिए गए चित्र देखो। आवाज सुनो और वे किस नृत्य के लिए उपयोग में लाए जाते हैं इसपर समूह में चर्चा करो।

तबला

घुंघरू

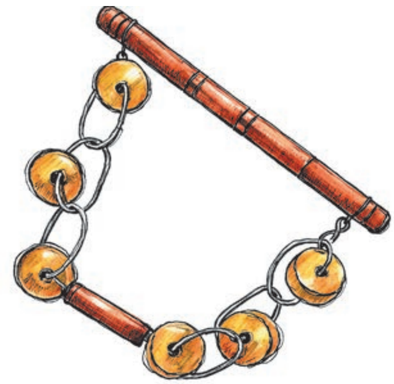

लेजिम

डफली

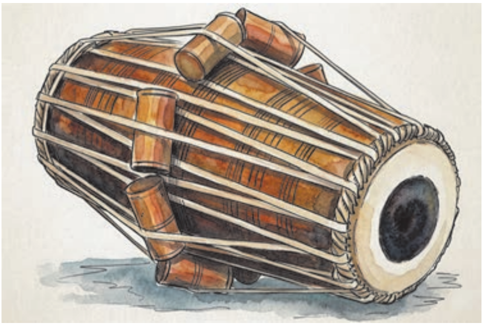

मृदंग

मँजीरा

ढोलकी

हार्मोनियम

- वाद्यों के चित्र देखकर उनकी आवाज और नृत्य के लिए उपयोग पर कक्षा में चर्चा करें।
- विविध नृत्य प्रकारों के संबंध में जानकारी देकर उनके लिए कौन-से वाद्यों का उपयोग किया जाता है, बताएँ।

CG - 3
C - 3.1
LO 03AE66

परिसर के वाद्य

तुम्हारे परिसर में देखे हुए वाद्यों के नामों की सूची तैयार करो।

....

....

....

आओ, चित्र बनाएँ !

जिन्हें जानते हो, ऐसे वाद्यों के आकार समझकर चित्र बनाओ।

नीचे दिए गए वाद्यों के नामों को चित्र में खोजकर रेखा द्वारा चित्र से जोड़ो।

तबला	बाँसुरी
मृदंगम	मँजीरा
ढोल	झाँझ
ढोलकी	हार्मोनियम
ताशा	घुंघरू

ध्यान में रखो:

नृत्य करते समय हम हलचल, भाव और ताल का उपयोग करते हैं। इस कारण हमारी सृजनशीलता और आत्मविश्वास बढ़ता है।

- वाद्यों का आकार समझकर सरल पद्धति से चित्र बनाने के लिए कहें।
- चित्र के वाद्य पहचानने के लिए कहकर नामों और चित्रों की जोड़ियाँ मिलाने के लिए कहें।

CG – 3
C – 3.1
LO 03AE66

वेशभूषा

हम सभी विविध प्रकार की वेशभूषा धारण करते हैं। महाराष्ट्र की महिलाएँ और पुरुष विविध प्रकार के पोशाक पहनकर समारोह में नृत्य करते हैं।

चित्र की वेशभूषा देखकर उसका नृत्य प्रकार पहचानो। उसका दो-तीन वाक्यों में वर्णन करो।

मेरी कृति

नृत्य का नाम –

नृत्य का नाम –

१) परिसर के स्थानीय नृत्य प्रकार का निरीक्षण करके उसके लिए लगने वाली वेशभूषा, सामग्री तथा वाद्यों की सूची तैयार करो।

नृत्य प्रकार	वेशभूषा	सामग्री	वाद्य
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

- आस-पास के परिसर के वाद्यों पर चर्चा करवाकर देखे हुए वाद्यों के नामों की सूची बनाने के लिए कहें।
- स्थानीय नृत्य प्रकार देखकर उसकी वेशभूषा का निरीक्षण करने के लिए कहें और लगने वाली सामग्री और वाद्यों की सूची तैयार करने के लिए कहें।

CG - 3
C - 3.1
LO 03AE67/68

१६. कला संस्कृति

अपने परिसर के स्थानीय त्योहार - उत्सव एवं परंपरा से अपनी कला संस्कृति दिखाई देती है।

हम विविध त्योहार, समारोह और उत्सव मनाते हैं। उनमें हर्षोल्लास से सहभागी होते हैं। नीचे कुछ त्योहारों और उत्सवों के चित्र दिए हैं। उन्हें देखो और उनमें से तुम कौन-से त्योहार और उत्सव मनाते हो यह अपने मित्रों को बताओ।

इसी प्रकार अपने परिसर में मनाए जाने वाले अन्य त्योहारों, समारोहों का वर्णन अपने समूह या कक्षा में करो।

परिसर के त्योहार -उत्सव

- परिसर में मनाए जाने वाले त्योहार समारोह और उत्सवों का निरीक्षण करने हेतु मार्गदर्शन करें।
- समूह में त्योहार समारोह का वर्णन करने पर प्रोत्साहन दें।
- सभी को अवसर उपलब्ध करा दें।

CG -4
C-.2
Lo- 03AE24

अपनी कला संस्कृति का आस-पास के पर्यावरण से संबंध रहता है। प्रत्येक भौगोलिक रचना के अनुसार त्योहार - उत्सव एवं परंपरा में थोड़ा बहुत फेर-बदल होता रहता है। जैसे बैलपोला कुछ भागों में बेंदूर, कुछ भागों में श्रावण पोला, कुछ भागों में भाद्रपद पोला नामों से प्रसिद्ध है।

आगे दिए गए कुछ प्रश्नों पर कक्षा के अपने मित्रों के साथ तथा शिक्षकों के साथ चर्चा करो।

- तुम्हारे परिसर में कौन-कौन-से त्योहार - उत्सव मनाए जाते हैं?
- इन त्योहारें-उत्सवों की कौन-सी परंपराएँ तुम्हें भाती हैं?
- क्या तुम्हारे रिश्तेदार के गाँव में ये त्योहार - उत्सव कुछ अलग पद्धति से मनाए जाते हैं?

त्योहार - उत्सव के गीत और नृत्य

हमारे राज्य में बहुत सुंदर ढंग से त्योहार - उत्सव मनाए जाते हैं। उत्सव में लोग इकट्ठे होते हैं, गाने गाते हैं, नृत्य करते हैं और बड़े आनंद के साथ त्योहार मनाते हैं। त्योहारों के कारण हमें आनंद मिलता है, त्योहार -उत्सवों से हमारी एकता और संस्कृति की पहचान होती है।

त्योहार -उत्सवों में सामूहिक रूप से गीत गायन और नृत्य किए जाते हैं।

गणेशोत्सव

नाग पंचमी

होली

ग्रामोत्सव/जत्रा

इसके अलावा तुम्हारे परिसर में कौन-कौन-से प्रसंगों पर पारंपरिक गीत गाकर नृत्य किए जाते हैं इनकी सूची बनाओ।

- परिसर में मनाए जाने वाले त्योहार उत्सव एवं समारोहों के विषय में चर्चा करने के लिए कहें।
- परिसर में कौन-से उत्सव गीत गाकर नृत्य किए जाते हैं, इसपर चर्चा करने के लिए कहें।

CG - C- Lo- 03AE61/71

स्थानीय कला के प्रकार व कलाकार

जिस प्रकार भौगोलिक प्रदेशानुसार त्योहार –उत्सव मनाए जाने की पद्धति में फेर–बदल होता रहता है, उसी प्रकार प्रत्येक भौगोलिक प्रदेशानुसार कला के प्रकार भी बदलते जाते हैं।

नीचे कुछ कला के प्रकारों और कलाकारों के चित्र दिए हैं। तुम्हारे परिसर में उनमें से कौन–से कलाप्रकार प्रस्तुत किए जाते हैं, उनपर दी गई छोटी चौखट में सही का चिह्न लगाओ।

चित्रकला – चित्रकार ☐

वादन – वादक ☐

पोवाड़ा– शाहीर ☐

भारूड़ – भारूड़कार ☐

- विविध कला के प्रकार और उससे संबंधित कलाकारों की जानकारी दें।
- परिसर के अन्य कलाकार एवं संबंधित कलाकारों के विषय में चर्चा करने के लिए कहें।

CG -4
C- 4.1,04.2
Lo- 03AE
42/60/61

इसके अतिरिक्त तुम्हारे परिसर में मिलने वाले अन्य कला के प्रकारों और उनसे संबंधित कलाकारों की सूची तैयार करो।

कला के प्रकार	कलाकार
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

स्थानीय कलाकारों से संवाद

अपने परिसर में अनेक स्थानीय कला के प्रकार मिलते हैं। जैसे नृत्य, संगीत, चित्रकला, शिल्पकला। इन कलाओं को प्रस्तुत करने वाले व्यक्ति को कलाकार कहते हैं। कलाकार अपनी कला से लोगों का मनोरंजन करते हैं और संस्कृति का जतन करते हैं। अपने परिसर के कलाकार का प्रस्तुतीकरण ध्यानपूर्वक देखो। उस कलाकार से संवाद साधने हेतु आगे दिए गए प्रश्नों का आधार लो। अपनी पसंद के अनुसार तुम और अधिक प्रश्न भी पूछ सकते हो।

१) आपकानाम क्या है?

२) आपके घर में कितने लोग रहते हैं?

३) आपने यह कला कैसे सीखी?

४) आपको यह कला तुम्हें किसने सिखाई?

५) आपको कितने वर्षो से यह कला प्रस्तुत कर रहे हो?

६) क्या आपके घर में और किसी ने भी यह कला सीखी है?

७) आपको इस कला को प्रस्तुत करने के लिए कौन-कौन-सी सामग्री लगती है?

८) यह कला प्रस्तुत करने के लिए आपको किस-किसकी सहायता लगती है?

९) कला के इस क्षेत्र में आप किसे आदर्श मानते हो?

१०) हमें यह कला सीखने का अवसर कैसे मिलेगा?

कलाकार के साथ प्रश्नावली के माध्यम से किए गए संवाद को प्रश्नोत्तर के रूप में लिखो और शिक्षक को दिखाओ।

- परिसर के कला के प्रकार और कलाकारों की सूची बनाने के लिए कहें।
- स्थानीय कलाकार के कार्यक्षेत्र में भेंट आयोजित करें अथवा कलाकार को कला प्रस्तुत करने के लिए पाठशाला में बुलाएँ। साक्षात्कार के लिए आवश्यक प्रश्न तैयार कराएँ।

CG -4
C- 4.1,4.2
Lo- 03AE
25/42/60

मेरी कृति

१) अपने परिसर में मनाए जाने वाले आपने मनपसंद त्योहार उत्सव से संबंधित चित्र चिपकाकर संक्षेप में जानकारी लिखो।

२) अपने परिसर के किसी कलाकार से संवाद स्थापित करके उनकी जानकारी एकत्रित करो और लिखो।

३) अपने परिसर के त्योहार-उत्सव तथा समारोह के समय गाए जाने वाले किन्हीं दो पारंपरिक गीतों को संकलित करके उन्हें धुन सहित प्रस्तुत करो।

४) अपने परिसर के किसी भी एक कला के प्रकार की जानकारी संकलित कर प्रकल्प प्रस्तुत करो।

५) अपने परिसर के स्थानीय नृत्य के संबंध में सचित्र जानकारी एकत्रित करके उसकी सहज-सरल हलचलों का प्रस्तुतीकरण करो।

प्रिय विद्यार्थी मित्रो और सहेलियो,

यदि तुम्हें कोई अयोग्य ढंग से स्पर्श करता है और तुम असमंजस या असहज अनुभव करते हो तो तुम कदापि चुप मत रहो । ऐसी घटना होने पर तुम्हें निम्न बातें करना आवश्यक है ।

१) स्वयं को दोष मत दो ।

२) जिन लोगों पर तुम्हें विश्वास है; उनसे घटित घटना के बारे में बताओ ।

३) तुम पॉक्सो ई–बॉक्स के माध्यम से तुम्हारे अधिकारों की रक्षा हेतु स्थापित राष्ट्रीय आयोग को भी सूचित कर सकते हो ।

जब कोई तुम्हें अनुचित/अयोग्य ढंग से छूता है/स्पर्श करता है तब तुम्हें बुरा लग सकता है । तुम परेशान और भ्रमित हो सकते हो । तुम स्वयं को असहाय महसूस कर सकते हो परंतु तुम्हें 'बुरा' लगने का कोई कारण नहीं होना चाहिए क्योंकि ऐसी घटना में तुम्हारा कोई दोष नहीं होता है ।

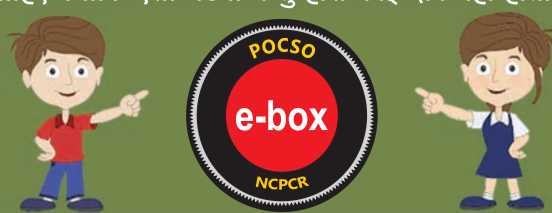

इस बटन को दबाओ ।

POCSO यह e-box ncpcr@gov.in इस वेबसाईट पर उपलब्ध है ।

यदि तुम्हारी आयु १८ वर्ष से कम है और तुम्हें किसी ने सताया है/ तंग किया है और तुम कुछ समझ नहीं पा रहे हो, चिंतित अथवा तनावग्रस्त महसूस कर रहे हो अथवा इस प्रकार की परेशानी अनुभव करने वाले किसी लड़का/लड़की को जानते हो तो तुम १०९८ (दस नौ आठ) पर संपर्क करो । ऐसा करने से तुम्हारा और तुम्हारे मित्रों/सहेलियों का जीवन बदल सकता है ।

चाइल्ड लाईन १०९८ (दस नौ आठ) : यह २४ घंटे टोल फ्री राष्ट्रीय आपातकालीन फोन सेवा है । महिला एवं बालविकास आपातकालीन मंत्रालय द्वारा पीड़ित लड़कों/लड़कियों के लिए यह उपक्रम चाइल्ड लाईन फाउंडेशन ने प्रारंभ किया है ।

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

- विद्यार्थियों को उनके आयुगुट के अनुसार अच्छा स्पर्श और बुरा स्पर्श पहचानने के लिए शारीरिक एवं भावनिक दृष्टि से मार्गदर्शन करें ।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

कलाशिक्षण इयत्ता तिसरी (हिंदी माध्यम)

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
(नि:शुल्क वितरण के लिए)

कलाशिक्षण इयत्ता तिसरी (हिंदी माध्यम)